

Postal Regn. No. C.G./RYP DN/65/2022-24
रायपुर से प्रकाशित हिंदी मासिक पत्रिका
प्रकाशन तिथि, 1 मार्च 2023

आर.एन.आई.पंजीयन क्र.
CHHHIN/2017/72506

किलोल

वर्ष 7 अंक 3, मार्च 2023



<http://www.kilol.co.in>

स्कूली शिक्षा में समर्थन हेतु समर्पित संस्था



म. नं. 580/1, गली न. 17 बी,
दुर्गा चौक, आदर्श नगर, मोवा, रायपुर
ईमेल: wings2flysociety@gmail.com

मूल्य
खुदरा 80/-
वार्षिक 720/-
आजीवन 10000/-

संपादक- डॉ. रचना अजमेरा

सह-संपादक

डॉ. एम सुधीश, डॉ. सुधीर श्रीवास्तव, प्रीति सिंह, ताराचंद जायसवाल, बलदाऊ राम साहू, नीलेश वर्मा, धारा यादव,
डॉ. शिप्रा बेग, रीता मंडल, पुर्णेश डडसेना, वाणी मसीह, राज्यश्री साहू

ई-पत्रिका, ले आउट, आवरण पृष्ठ

कुन्दन लाल साहू

अपनी बात

मार्च का महीना हम सब के लिए बहुत महत्वपूर्ण है बसन्त ऋतु के आगमन से हमारी प्रकृति में एक नवीनता आती है जिसका हम उत्सव मानते हैं अपने बड़े बुजुर्गों को रंग गुलाल लगाकर आशीर्वाद लेते हैं एवं मित्रों के साथ खूब होली खेलते हैं। बच्चों ध्यान रहे आप फूलों व प्राकृतिक रंगों से ही होली खेलें रासायनिक रंग से आपके शरीर व आँखों को नुकसान हो सकता है।

इस माह में आपकी परीक्षाएं भी शुरू हो रही होंगी। आप साल भर जो पढ़े, सीखें व समझे है उसे प्रदर्शित करने के लिए यह विशेष समय है। आप मन लगाकर तैयारी करें ,परीक्षा कक्ष में आप घबराएं नहीं धर्य के साथ प्रश्नों का उत्तर दें। अवसर बार बार नहीं मिलता उसका उपयोग करें। अच्छे अंकों से उत्तीर्ण होकर अगली कक्षा में जावें। खूब पढ़ें और खूब बढ़ें सफलता की हर बुलंदियों को प्राप्त करें हमारी शुभकामनाएं आपके साथ है।

और हाँ! किलोल को पढ़ना व अपनी रचनाएं भेजना न भूलें।

आपकी अपनी
डॉ. रचना अजमेरा

संस्थापक- डॉ. आलोक शुक्ला

मुद्रक कीरत पाल सलूजा तथा प्रकाशक श्यामा तिवारी द्वारा

- विंग्स टू फ्लाई सोसाइटी म. न. 580/1 गली न. 17बी, दुर्गा चौक, आदर्श नगर, मोवा, रायपुर, छ. ग. के पक्ष में।
सलूजा ग्राफिक्स 108-109, दुबे कॉलोनी, विधान सभा रोड़, मोवा जिला रायपुर, छत्तीसगढ़ से मुद्रित
तथा विंग्स टू फ्लाई सोसाइटी, म.न.580/1 गली. न. 17 बी, दुर्गा चौक, आदर्श नगर, मोवा, रायपुर से प्रकाशित,
संपादक डॉ. रचना अजमेरा.

अनुक्रमाणिका

नदी	8
फिर वसंत आया	11
तितली रानी	13
पंचतंत्र की कहानी	15
मोबाइल लत	18
गीत वसंती	20
अगर पेड़ होते मिठाईयों के	22
सुख दुख दोनों रहते जिसमें जीवन है वो गाँव	24
नव ज्योति	27
ऑनलाइन शॉपिंग की बढ़ती आदत	29
अधूरी कहानी पूरी करो	33
विजेता मेंढक	33
मनोज कुमार पाटनवार, बिलासपुर द्वारा पूरी की गई कहानी	34
प्रीति श्रीवास, मुंगेली द्वारा पूरी की गई कहानी	34
सतीश "बब्बा", कोबरा द्वारा पूरी की गई कहानी	35
संतोष कुमार कौशिक, मुंगेली द्वारा पूरी की गई कहानी	36
टेकराम ध्रुव 'दिनेश', बिलासपुर द्वारा पूरी की गई कहानी	37
अगले अंक के लिए अधूरी कहानी	38
राजा बॉस	38
वृक्ष, नदियां, और पर्वत	39
खुद के लिए समय निकालें	41
लड्डूओं की बारिश	44
चित्र देख कर कहानी लिखो	46
मनोज कुमार पाटनवार, बिलासपुर द्वारा भेजी गई कहानी	46
हाथी और बकरी की दोस्ती	46
संतोष कुमार कौशिक, मुंगेली द्वारा भेजी गई कहानी	47

बकरी और हाथी	47
कुं. संजना मानिकपुरी, पांचवी, शास. प्राथ. शाला बरदुली, मुंगेली द्वारा भेजी गई कहानी	49
दयालु हाथी	49
कु. मोनिका साहू, पांचवी, शास. प्राथ. शाला बरदुली, मुंगेली द्वारा भेजी गई कहानी	50
हाथी और बकरी	50
अगले अंक की कहानी हेतु चित्र	51
पर्यटन दिवस	52
सुभाष जयंती	55
तैयारी हो चुकी है	58
सफलता की राह	60
पानी बचाओ जीवन बचाओ	62
अभी कमाने की तुम्हारी उम्र नहीं	64
मेरी रसमलाई	66
सब कुछ कुर्बान कर आये	67
गणतंत्र दिवस	68
दर्द तो आखिर दर्द होता है	69
"हम बच्चों का तिरंगा"	71
गांधीजी के सिद्धांत व विचार	73
असली दुनिया में गोलू	74
यह भारत देश है मेरा	78
अंतिम साँस तक लड़ना होगा	80
आलू के अहम	81
आपदा जोखिम की जड़ें	83
विश्व में भारत	87
नव संवत - नव वर्ष	88
बच्चों को कितनी सुविधा दें	90
बाल पहेलियाँ	93
डॉक्टर चूहा	95

कुंदन बनते जायेंगे.....	97
छत्तीसगढ़िया, सबले बढ़िया	99
नदियाँ	100
ईमानदारी व्यक्तित्व जीवन का आधार	102
गौरैया.....	105
चूहा राजा.....	106
गज्जी हथिनी और मेंमें बकरी	107
निपुण भारत मिशन	109
करूंगी नखरे	110
मेरा विद्यालय	112
मेरे अकेलेपन की साथी हो	114
दोस्त की मदद	116
जैसी करनी वैसी भरनी.....	118
फिर आ गई होली.....	121
जग में ऊंचा नाम कर.....	123
मुखौटे	125
एक नया भारत बनाना है	126
गमला टूट गया	129
हाथी बना नेता.....	130
सफाई का महत्व	131
ज्ञान दीप	132
स्वच्छता अभियान	133
बाल पहेलियाँ	134
बिन्नी के गले में घंटी.....	136
मैं और मेरा भैया	139
रंग-बिरंगे गुब्बारे	141
रेल चली भई रेल चली	143
बिटिया चाहत है	145

माँ	146
पहेलियाँ	148
भारत देश महान, मेरी आन बान शान	150
पहेलियाँ	152
खिलौने वाला	154
चिड़िया	156
गिनती का गीत	157
उपकार	158
बाल पहेलियाँ	160
तोता मैना की कहानी	162
जूता	164
कितना देखें टीवी	166
काश ! मैं तुम जैसा होता	167
मेरा प्यारा देश	169
मक्के का दाना	171
हमर राजिम मेला	173
खेलो होली	177
प्यारी तितली	178
बन्दर मामा आए हैं	179
नभ को चमकाओ	180
परीक्षा कक्ष में ध्यान रखें	181
दो कुलों का मान होती है बेटियां	183
बेटियां	185
योगदान है	186
प्यारी गाय	189
रंग रंगीली आई होली	191
जुगनू	193
कद्र	196

मन	197
बच्चों में बढ़ती मोबाइल की लत: जिम्मेदार कौन	198
युवा शक्ति प्लस बुजुर्ग अनुभव	201
मनु बिटिया	204
शिक्षक	205
ठण्ड	206
बारिश	207
करम के गति बड़ न्यारी	208
स्वास्थ्य	210
ये सुबहा कितनी प्यारी है	211
पेड़	212
जीवन जीने की कला	214
भारत की शान है तिरंगा	216
कश्मीर की घाटी - पुलवामा की माटी	217
बुजुर्ग हमारी थिंक टैंक और शान है	218
आया ऋतुराज बसंत	219
उड़ी पतंग	220
रोज मैं स्कूल जाता हूँ	221
राष्ट्रीय विज्ञान दिवस	222
मेरी सायकल	224
नम्र बनकर रहो, खुशहाल पल तुम्हारा है	225
संदेशा	226
सफलता	227
मिलजुलके के रहय म ही विकास हे	229
काश! मैं भी स्कूल जा पाती	231

नदी

रचनाकार- शालिनीपंकज दुबे, बेमेतरा



मैं नदी
निरन्तर बहती हूँ.
बिना रुके, बिना थके
पल-पल मंजिल को चलती हूँ.

सूर्य का ताप
जब बढ़ जाता,
मैं झील-झरनों से निकलती
मार्ग मेरा सुगम नहीं.

चलना स्वभाव उद्गम से ही
सदानीरा बरसाती.
मैं बहती जाती हूँ,
चट्टानों से टकराती.

कहीं गहरी खाई में
मैं बल खाकर गिर जाती हूँ.
सूखा कोई क्षेत्र ना बचता,
जहाँ से मैं बहती जाती हूँ.

बहती अपने प्रवाह में
निर्झरी सरिता हूँ मैं.
कल-कल करती गाती हूँ,
जीवन गीत सुनाती हूँ.

जन्म से लेकर
समुद्र में मिलते तक,
ठहरती नहीं कहीं,
मैं चाव से बहती जाती हूँ.

मैं नदी नहीं बस
संस्कृति की पहचान भी हूँ.
पापनाशिनी, मोक्षदायिनी,
जीवन का दूजा नाम भी हूँ.

स्वार्थों में डूबा मनुज
कचरों के ढेर बिछाता है.
धर्म-कर्म के नाम पर
आँचल मैला कर जाता है.

मुझे स्वच्छ सदा रखना,
जीवन में प्राण भरूँगी.
प्रेम सदा देना मुझको,
जग का कल्याण करूँगी.

मैं नदी
निरन्तर बहती जाती हूँ.
माँ ही हूँ मैं तुम्हारी,
स्मरण कराती जाती हूँ.

फिर वसंत आया

रचनाकार- डॉ० विष्णु शास्त्री 'सरल' (उत्तराखण्ड)



मस्त चाल से छैल - छबीला
फिर वसंत आया,
झोली भर - भरकर वह खुशियाँ
हम सबको लाया.

धरती पर सूरज दादा ने
गरमी फैलाई,
भीषण ठंडक से सबने ही
राहत है पाई.

सुबह - शाम का समय आज तो
लगता सुखदाई,
मजा टहलने में आता है
साथ - साथ भाई.

कोमल कलियाँ हर्षित होकर
मुसकाती जातीं,
रंग - बिरंगी वहाँ तितलियाँ
उड़ - उड़कर आतीं.

फूल निराले प्यारे सारे
मन को भाते हैं,
भौर उनके निकट झूमते
गुनगुन गाते हैं.

खेत - खेत में पीली सरसों
मन बहलाती है,
काली कोयल मीठे स्वर में
गीत सुनाती है.

हवा सुगंधित तेज चाल से
घर - घर आती है,
नहीं समझ में आता वह भी
क्या कह जाती है.

तितली रानी

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू", राजिम



देखो तितली रानी आयी,
नील गगन में पँख फैलायी.
नीली-पीली भूरी काली,
कुछ तितली है कितनी लाली.

छोटी-छोटी आँखें होती,
इन आँखों से स्वप्न सँजोती.
सुंदर-सुंदर डाली-डाली,
और कभी लगती मतवाली.

पुष्प रसों का सेवन करती,
तनिक पेट अपना वह भरती.
मीठी-मीठी बोले बानी,
सुनो ध्यान से सभी कहानी.

स्पर्श करो तो वह डर जाती,
नाखुश होकर फिर उड़ जाती.
तितली रानी बड़ी सयानी.
दिनभर करती है मनमानी.

पंचतंत्र की कहानी

दो सिर वाला जुलाहा

बहुत समय पहले की बात है. एक गांव में मनोहर नाम का एक जुलाहा (कपड़े सिलने वाला) रहा करता था. उसकी कपड़े सिलने वाली मशीन के ज्यादातर उपकरण लकड़ी से बने हुए थे. एक दिन बहुत ज्यादा बारिश होती है, जिस कारण बारिश का पानी उसके घर में भर जाता है.



घर में बारिश का पानी भर जाने के कारण उसकी मशीन पूरी तरह से खराब हो जाती है. मशीन खराब हो जाने के कारण मनोहर बहुत परेशान हो जाता है.

वह दुखी होकर सोचने लगता है कि अगर जल्द ही उसने अपनी इस मशीन को ठीक नहीं किया, तो वह कपड़े सिलने का काम नहीं कर पाएगा और उसके परिवार को भूखा रहना पड़ेगा.

यह सोचकर मनोहर जंगल जाने का फैसला कर लेता है, ताकि वह अपनी मशीन को ठीक करने के लिए अच्छी लकड़ी काट कर ला सके. फिर मनोहर इस विचार के साथ जंगल की ओर चल देता है. मनोहर पूरा दिन चलता रहता है, लेकिन उसे अपनी मशीन के लिए अच्छी लकड़ी वाला कोई भी पेड़ नजर नहीं आता है. फिर भी मनोहर हार नहीं मानता है और अच्छे पेड़ की तलाश में आगे बढ़ता रहता है.

काफी देर चलने के बाद अचानक मनोहर की नजर एक पेड़ पर पड़ती है, जो काफी ऊंचा, मोटा और हरा-भरा था. उस पेड़ को देख मनोहर बेहद खुश होता है और कहता है, हां यह पेड़ काफी अच्छा है. इसकी लकड़ी से मैं अपनी मशीन को फिर से ठीक कर सकता हूं.

इस विचार के साथ मनोहर कुल्हाड़ी उठाकर जैसे ही पेड़ के तने पर मारने के लिए अपना हाथ ऊपर उठाता है, तभी पेड़ की डाल पर एक देवता प्रकट हो जाते हैं. देवता मनोहर से कहते हैं, “मैं इस पेड़ पर रहता हूं और आराम करता हूं. इसलिए, तुम्हारा इस पेड़ को काटना उचित नहीं होगा. वैसे भी किसी भी हरे पेड़ को काटना ठीक नहीं है.”

देवता की बात सुनकर मनोहर क्षमा मांगते हुए कहता है, “हे देव, मैं मजबूर हूं. मुझे इस पेड़ को काटना ही पड़ेगा. इस पेड़ की लकड़ी मेरी मशीन के लिए उत्तम है. बहुत ढूंढने के बाद मुझे यह पेड़ मिला है. अगर मैं इस पेड़ को नहीं काटूंगा, तो मेरी मशीन खराब रह जाएगी और मैं कपड़े सिलने का काम नहीं कर पाऊंगा. इस वजह से मैं और मेरा परिवार भूखों मर जाएगा.”

मनोहर की बात सुनकर देवता कहते हैं, “मनोहर मैं तुम्हारे जवाब से खुश हूं, तुम इस पेड़ को न काटो. इसके बदले तुम्हें जो वरदान चाहिए वो मांग सकते हो, मैं तुम्हारी इच्छा जरूर पूरी करूंगा.” देवता से वरदान की बात सुनकर मनोहर कुछ देर विचार करके कहता है, “हे देव! मैं वर के लिए अपने मित्र और पत्नी से राय लेना चाहता हूं. इसलिए, आप मुझे एक दिन का समय दीजिए.” मनोहर के आग्रह को देवता मान लेते हैं और उसे एक दिन विचार करने के लिए दे देते हैं.

एक दिन का समय लेकर मनोहर अपने घर की ओर चल देता है. रास्ते में उसे उसका मित्र नाई मिलता है. नाई से मिलकर मनोहर उसे देवता की वरदान वाली बात बताता है. उस पर नाई मनोहर को एक राज्य मांगने की सलाह देता है. नाई कहता है कि तुम देवता से वरदान में एक राज्य मांग लो. तुम उस राज्य के राजा बन जाना और मैं उस राज्य का मंत्री बन जाऊंगा. फिर हमें कोई कष्ट नहीं होगा और हम आराम से अपनी जिंदगी बिता पाएंगे.

नाई मित्र की बात पर मनोहर कहता है, “मित्र तुम बिल्कुल ठीक कह रहे हो. इस बारे में एक बार मैं अपनी पत्नी से भी पूछ लूं, फिर मैं देवता से वरदान मांग लूंगा.” पत्नी से राय मांगने की बात पर नाई कहता है, “मित्र तुम्हारी पत्नी काफी घमंडी और मूर्ख है. इसलिए, तुम्हें उससे राय नहीं लेनी चाहिए. ऐसी स्त्री केवल अपने लाभ के बारे में ही सोचती है.”

इस पर मनोहर कहता है, “मित्र फिर भी वह मेरी पत्नी है, इसलिए मैं उसकी राय एक बार जरूर लूंगा.” इतना कहते हुए मनोहर अपने घर की ओर बढ़ जाता है. घर पहुंच कर मनोहर जंगल में घटी पूरी घटना अपनी पत्नी को बताता है.

देवता से वरदान मिलने की बात सुनकर मनोहर की पत्नी कहती है, “राज्य मांग कर कोई लाभ नहीं. राजा की कई जिम्मेदारियां होती हैं. वह कभी सुख से अपना जीवन नहीं बिता पाता है. राजा राम और नल भी राज्य होते हुए जिंदगी भर दुःख में जिए. आप दो हाथ से इतने अच्छे कपड़े सिलकर ठीक-ठाक कमा लेते हैं. ऐसे में अगर आपके दो सिर और चार हाथ हो जाएं, तो

आप दोगुने कपड़े सिल पाएंगे. इससे कमाई भी दोगुनी हो जाएगी और आपका मान भी समाज में बढ़ेगा.”

पत्नी की यह बात मनोहर को समझ आ जाती है और वह देवता से वरदान मांगने जंगल की ओर चल देता है. जंगल पहुंचकर वह दोबारा देवता से मिलता है. देवता मनोहर को देखकर कहते हैं कि मनोहर मांगों क्या वर मांगना है तुम्हें.

मनोहर देवता से कहता है, “हे देव! आप मुझे दो सिर और चार हाथ दे दीजिए.” देवता मनोहर की यह बात सुनकर पूछते हैं कि तुम दो सिर और चार हाथ का क्या करोगे?

तब मनोहर बताता है कि दो सिर और चार हाथ होने पर वह दोगुना कपड़े सिल पाएगा, जिससे उसकी कमाई पहले से अधिक हो जाएगी. मनोहर की यह बात सुनकर देवता मुस्कुराते हैं और मनोहर को वरदान दे देते हैं.

देवता का वरदान पाकर मनोहर को दो सिर और चार हाथ हो जाते हैं. वरदान पाकर मनोहर बहुत खुश होता है और अपने घर की ओर चल देता है. मनोहर जैसे ही अपने गांव पहुंचता है, तो गांव में खेल रहे बच्चे उसे देखकर डर जाते हैं. वह सब उसे एक राक्षस समझते हैं.

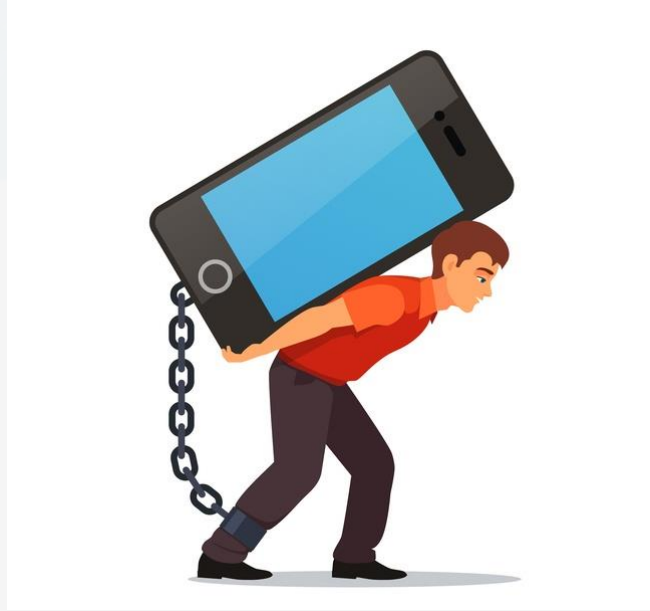
तभी कुछ गांववाले हाथों में हथियार लेकर मनोहर पर हमला कर देते हैं और मनोहर की मौत हो जाती है. जब मनोहर की मौत की खबर मनोहर की पत्नी को होती है, तो वह फौरन मनोहर को देखने वहां पहुंच जाती है.

मनोहर की लाश देख उसकी पत्नी रोने लगती है और कहती है कि यह सब मेरी गलती है. मैंने ही उनसे देवता से दो सिर और चार हाथ मांगने के लिए कहा था. अगर ऐसा न होता तो आज मनोहर को कोई राक्षस न समझता और वे जिंदा होते.

कहानी से सीख : दो सिर वाला जुलाहा कहानी से सीख मिलती है कि बिना सोचे-विचारे किया गया कोई भी काम हमेशा दुखदाई होता है.

मोबाइल लत

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र , लखनऊ



मोबाइल जी! तुम्हें देखकर, पीना - खाना भूल गया हूँ.
हरे - भरे सामने पार्क में, आना-जाना भूल गया हूँ.

बैठूँ जब लेकर किताब को, नहीं समझ में आता कुछ
बहुत दिनों से कोरी कॉपी, चित्र बनाना भूल गया हूँ.

याद नहीं हो रहे पाठ, स्मरणशक्ति कमजोर हुई
गिल्ली - डंडा, कुश्ती, हाकी, पेंच लड़ाना भूल गया हूँ.

चैटिंग और वीडियो गेम में, घंटों समय निकल जाता
टेस्ट - परीक्षा में नंबर कम, रोना - गाना भूल गया हूँ.

माँ ने डांटा, पिता ने मारा, मोबाइल लत गई नहीं
प्रातःकाल देर से जागूँ, नित्य नहाना भूल गया हूँ.

पढ़ना-लिखना भार लग रहा, रहते काम अधूरे हैं
गुरुजन की अच्छी सीखो पर, ध्यान लगाना भूल गया हूँ.

जान चुका हूँ, भटक रहा हूँ, कब से भूलभुलैया में
गहन अँधेरों में जीवन का, ठौर - ठिकाना भूल गया हूँ.

गीत वसंती

रचनाकार- कन्हैया साहू 'अमित' , भाटापारा



बाँध बोरिया बिस्तर अपना, दुबक चला जड़काला.
अब वसंत आया अलबेला, दिखता नया निराला.

बाग-बगीचे, कानन, झुरमुट, बरबस ही बौराये.
यौवन व्यापक यत्र-तत्र तब, राग वसंती गाये.
कामदेव युवराज स्वागतम्, स्वीकारो वरमाला.
अब वसंत आया अलबेला, दिखता नया निराला.

नई कोंपलें, नवल यौवना, खिलखिल खिलती कलियाँ.
भाँति-भाँति मकरंद फूल पर, झूमें भ्रमर तितलियाँ.
रस पीकर बहके फिरते हैं, जैसे मय का प्याला.
अब वसंत आया अलबेला, दिखता नया निराला.

आम्रमंजरी, अरहर, अलसी, अलि अरण्य अगुवाई.
सरसों, सेंमल, टेसू, गेहूँ, सबमें नव तरुणई.
महक-महक मद महुआ महके, मादकता मतवाला.
अब वसंत आया अलबेला, दिखता नया निराला.
बाँध बोरिया बिस्तर अपना, दुबक चला जड़काला.

रचनाकार- बद्री प्रसाद वर्मा अनजान, गोरखपुर

रचनाकार- बद्री प्रसाद वर्मा अनजान, गोरखपुर



अगर पेड़ होते मिठाईयों के
तो खूब मिठाई खाते.
तोड़ तोड़ कर पेड़ से
रसगुल्ला लाल मोहन लाते.

खुद खाता मम्मी पापा खाते
बहन भाई को खिलाते.
मिठाईयों से अपना घर
देखो खूब भर जाते.

पेड़ से हम तोड़ तोड़ कर
लड्डू पेड़ा बर्फी रस मालाई लाते.
यार दोस्तों के संग मिल
हर तरह की मिठाई खाते.

फिर हमको हलवाई की दुकान पर
जाना कभी न पड़ता.
ताजा ताजा रोज मिठाई
खा कर पेट मैं भरता.

जलेबी इमीरती और बालूशाही
लवंगलत्ता भी तोड़ कर लाता
मेहनानों को घर बुला कर
उनको नास्ता खूब कराता.

काश मिठाई के पेड़ सभी
हमको कहीं मिल जाते.
उसे मैं खेत में लगाता
साल भर मिठाई मैं तोड़ तोड़ कर खाता.

सुख दुख दोनों रहते जिसमें जीवन है वो गाँव

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी, गोंदिया



वर्ष 1971 में आई फिल्म 'कभी धूप कभी छाँव' में कवि प्रदीप का मशहूर गीत 'सुख दुख दोनों रहते जिसमें जीवन है वो गाँव, कभी धूप तो कभी छाँव, ऊपर वाला पासा फेंके नीचे चलते दाँव, कभी धूप तो कभी छाँव' यह गीत आज हर युवा को सुनना चाहिए क्योंकि युवा हमारे देश का भविष्य है और मेरा मानना है कि वर्तमान चकाचौंध के युग और पाश्चात्य संस्कृति के बढ़ते प्रभाव से वर्तमान पीढ़ी में दुख, कष्ट, से संघर्ष करने की क्षमता अपेक्षाकृत कम होती जा रही है. हर कोई चाहता है कि वह सुखों का मालिक बना रहे, दुख उसके पास फटके भी नहीं, परंतु ऐसी सोच वास्तविकता से दूर है. हालाँकि, अनेक युवा साथी सुख-दुख के चक्रव्यूह को भलीभाँति पहचानते भी हैं.

आज हर व्यक्ति को दूसरे का सुख और समृद्धि अधिक दिखती है और अपनी कम, अपनी उपलब्धि से असंतुष्ट रहने वाला व्यक्ति पराई उपलब्धि से जलता रहता है. इससे अनेक उलझनें सामने आती हैं. वह स्वयं सुखी और संपन्न होने पर भी दुखी और दरिद्र प्रतीत होता है. इसी कारण समस्याओं से भी घिरा रहता है. सुखी होने का बहुत सरल फार्मूला है-संतुष्ट होना.

जीवन में जितना कष्ट आएगा, उतना ही हममें सहनशीलता आएगी और हम धैर्यवान होते जाएंगे. धैर्य एक ऐसा गुण है, जो व्यक्ति की कार्यक्षमता में वृद्धि करता है, उसे आगे ले जाता है. उसे

संपूर्णता प्रदान करता है. बड़ा दुख उपचार कर देता है सभी छोटे-छोटे दुखों का और असंख्य छोटे-छोटे दुखों के उपचार से प्राप्त सुख असीम सुख में परिवर्तित होकर आनंद ही देता है. दुःख, कष्टों से जूझने की क्षमता का विकास कर देता है. जितना बड़ा दुख, उतना ही क्षमतावान मनुष्य. हम कष्टों और समस्याओं से पलायन कर स्वयं अपने सुखों से दूर होते जाते हैं. असीमित उपभोग द्वारा भी हम अपने दुखों को कम कर लेते हैं. शरीर को जितना अधिक आराम और सुविधाएँ देते हैं, वह उतना ही निष्क्रिय और जड़ होता जाता है. परिश्रम अथवा व्यायाम करेंगे, तो थोड़ा कष्ट जरूर होगा, पर स्वस्थ शरीर का सुख भी मिलेगा. कम खाएँगे तथा भूख लगने पर ही खाएँगे, तो भोजन के स्वाद का सुख भी मिलेगा. जो सारे दिन खाद्य-अखाद्य का उपभोग करते रहते हैं, उनके लिए भोजन में स्वाद का सुख कहाँ? इस प्रकार दुख को सहन करने से हमारी ऊर्जा जागती है. हमारी क्षमताओं का विकास होता जाता है.

जब जीवन में सुख आता है हम सुखी हो जाते हैं और जब दुख आता है तो हम दुखी हो जाते हैं. सोचना यह है कि हमारा अपना क्या योगदान रहा. जैसे वे आए हम वैसे हो गए. इसीलिए हमारे ऋषि-मुनियों ने एक नई स्थिति हमें सौंपी है- आनंद. आनंद में हमारी भूमिका आरंभ हो जाती है. दुख कभी किसी के जीवन में कम नहीं होंगे, लेकिन जो आध्यात्मिक व्यक्ति होते हैं वे समझ जाते हैं कि दुख आए तो दुखी नहीं होना है. दुख का आना और हमारा दुखी होना इसमें हम जितना भेद कर देंगे, जितनी दूरी बना देंगे, उतने ही हम आनंद के निकट चले जाएँगे. सुख आता है तो मनुष्य अहंकार में डूब जाता है, दुख आता है तो तनावग्रस्त हो जाता है. ये दोनों ही चीजें भीतर से पैदा की गई हैं.

हम सुख दुख के समान भाव को देखें तो अनन्तानीह दुःखानि सुखं तृणलवोपमम्.

नातः सुखेषु बध्नीयात् दृष्टिं दुःखानुबन्धिषु.

इस जगत में दुःख अनंत है और सुख तो तृण की तरह अल्प ! इसलिए जिस सुख के पीछे दुःख आता है वैसे सुख में इन्सान को आसक्ति नहीं रखनी चाहिए. समता (समान भाव) का बहुत ही महत्व है. इसका अर्थ होता है सुख और दुख दोनों ही अवस्थाओं में अस्थिर नहीं होना, साम्य भाव रखना. श्रमण शब्द प्राकृत भाषा में समण से बनता है, जिसका अर्थ होता है जो समता को धारण करे. समणो सम सुख दुःखो का अर्थ है कि श्रमण वही है, जो सुख और दुख में समान रहे. कष्टों में भी समता भाव धारण करने वाला एक महान उदाहरण मिलता है 23 वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ के जीवन में.

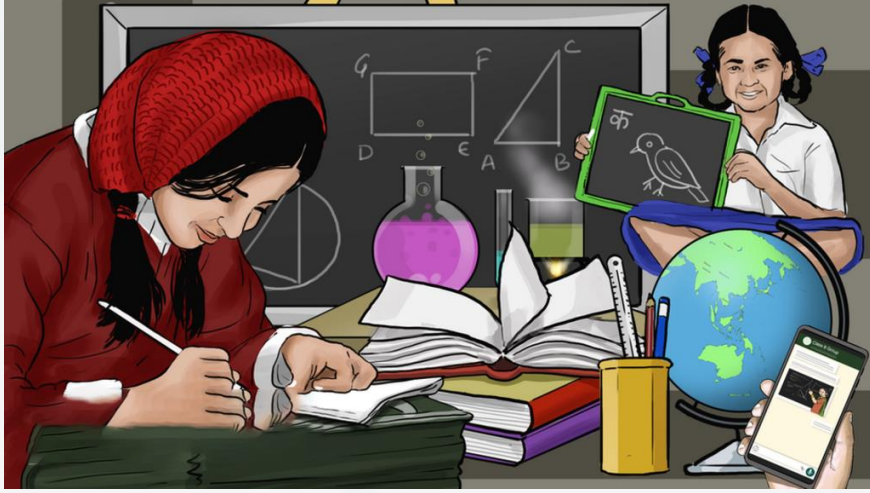
हम मन के भावों को देखें तो, किसी भाव के कारण ही अभाव का तथा अभाव विशेष के कारण ही भाव विशेष का महत्व है। मृत्यु, अंधकार, विषमता, विरह अथवा अपमान आदि के उपस्थित होने पर ही जीवन की अमरता, प्रकाश, अनुकूलता, मिलन अथवा मान-सम्मान के भाव की अनुभूति की जा सकती है। इसी प्रकार यदि दुख नहीं आएगा, तो सुख भी नहीं आएगा, क्योंकि दुख की अनुभूति के बाद ही संभव है सुख की अनुभूति। व्यक्ति सुख चाहता है, पर हर व्यक्ति सुखी नहीं रहता। कोई सुखी तो कोई दुःखी है। आखिर सुख और दुःख क्या है। शास्त्रकार कहते हैं कि जो इंद्रियों और मन के अनुकूल हो, वह सुख है और जो प्रतिकूल लगे वह दुःख है। भगवान हमारे हाथ में रोज सुबह एक सोने का सिक्का देते हैं जिसका हमें दिन भर अपने मन के मुताबिक उपयोग करना है, लेकिन इस सिक्के को कोई सुख खरीदने में उपयोग करता है, कोई दुःख खरीदने में, तो कोई लापरवाही के कारण बिना सिक्का खर्च किए लौट आता है। भगवान का यह सिक्का हमारे रोजाना के दिन हैं। कुछ लोग बाहरी चीजों में अपना सुख खोजते हैं, लेकिन इस चक्कर में वे दुःख के जाल में उलझकर रह जाते हैं।

दलाईलामा ने सुखी होने के लिए दूसरों के प्रति संवेदनशील होने की बात कही है। वह कहते हैं कि हमारी खुशी का स्रोत हमारे ही भीतर है और यह स्रोत दूसरों के प्रति संवेदना से पनपता है। दूसरे की प्रगति के प्रति जलन और ईर्ष्या मानवीय दुर्बलता है। इसी दुर्बलता ने न जाने कितनी बार मनुष्य को आपसी नफरत और द्वेष की लपटों में झोंका है, अच्छे-भले रिश्तों में इसी कारण दरारें पड़ती हैं और इसी कारण मनुष्य दुखी व अशांत हो जाता है। वस्तुतः सुख-शांति और आनंद को पाने के लिए कहीं बाहर जाने की जरूरत नहीं है। वह स्वयं के भीतर है।

साथियों प्रकृतिवादी विचारक बुद्धि को विशेष महत्व देते हैं परन्तु उनका विचार है कि बुद्धि का कार्य केवल वाह्य परिस्थितियों तथा विचारों को काबू में लाना है जो उसकी शक्ति से बाहर जन्म लेते हैं। इस प्रकार प्रकृतिवादी आत्मा-परमात्मा, स्पष्ट प्रयोजन इत्यादि की सत्ता में विश्वास नहीं करते हैं।

नव ज्योति

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र , लखनऊ



शिक्षा की नव ज्योति जगाएँ,
आओ! हम सब पढ़ें - पढ़ाएँ.

सौभाग्य खिला, जन - जन स्वतंत्र,
सुस्थापित अपना लोकतंत्र
फिर भी शिक्षा से दूरी क्यों
क्यों भूल रहे हम मूलमंत्र.

जीवन अपना सार्थक करें,
शिक्षा का अधिकार जताएँ.

बच्चे हैं, भावी कर्णधार,
पढ़ - लिखकर लाएँगे सुधार.
शिक्षा - मंदिर के खुले द्वार,
लो ज्ञान! समय कहता पुकार.

दे करके कौशल - नवाचार,
बालक -बालिका योग्य बनाएँ.

अनुदिन संघर्ष सुनिश्चित है,
विद्या - धन पूर्ण सुरक्षित है.
रखकर सुख की आधारशिला,
सम्मानित होता शिक्षित है.

नागरिक साक्षर हो जाएँ,
रोग अशिक्षा दूर भगाएँ.

शिक्षा बिन सब हैं दीन - हीन,
मन से रहते हैं पराधीन.
उन्नति के पथ दिखलाते हैं,
उद्देश्यपूर्ण अनुभव नवीन.

कोई न निरक्षर रह जाए,
साक्षरता अभियान चलाएँ,
आओ! हम सब पढ़ें - पढ़ाएँ.

ऑनलाइन शॉपिंग की बढ़ती आदत

रचनाकार- स्नेहा सिंह, नोएडा



बच्चों की ऑनलाइन शॉपिंग की आदत घर का बजट बिगाड़ देती है. अगर माँ-बाप बच्चों में छोटी उम्र से ही बचत की आदत डालें तो आगे चल कर उनका जीवन आसान बन जाएगा.

पूर्वी, तुम ने फिर से शॉपिंग की? मेरे एकाउंट से दो हजार रुपए कट गए हैं. मोना ने बेटी से पूछा. पूर्वी अभी भी फोन में शॉपिंग साइट्स सर्च कर रही थी. फोन में ही आँखे गड़ाए हुए उसने कहा, "हां माँ, कल की है, दो टीशर्ट खरीदी हैं. एक बेल्ट फ्री मिली है. और हाँ, एक जींस आज ली है. केवल 999 की."

"अरे, पर तुम्हें पूछना तो चाहिए. मुझे आज बिजली का बिल जमा करना है. अब कुछ मत खरीदना ऑनलाइन, खाते में थोड़े ही रुपए हैं. कालेज की फीस भी तो भरनी है. अभी फिल्म देखने या घूमने न जाओ तो ठीक रहेगा. जब तक कोरोना का नुकसान न पूरा हो जाए, ज्यादा पैसे मत खर्च करो. पैसा बचाना सीखो बेटा. देखो न, बिजली का बिल ही तीन हजार रुपए आया है. जिस तरह एसी चलाती हो, उस तरह कोई एसी चलाता है. इंटरनेट का भी खर्च थोड़ा कम करो. साग-सब्जी भी कितनी महँगी हो गई है. भगवान न करे ऐसे में किसी की तबीयत खराब हो गई तो अस्पताल का खर्च फाइवस्टार होटल की तरह आता है. इसीलिए तो हमारे बड़े-बुजुर्ग कहते

थे, 'जितनी चादर हो, उतना ही पैर फैलाओ.' मोना ने पूर्वी को अपनी बात समझाने की बहुत कोशिश की, पर पूर्वी की नजर तो ऑनलाइन आकर्षक शॉपिंग पर ही चिपकी थी. अब इस बात में चादर कहाँ से आ गई? लेनी है क्या? देखो, यह काँटन की चादर कितनी अच्छी है. आर्डर कर दूँ? कलर कितना सुपर है. ""

न, नहीं चाहिए. वैसे भी फोटो में बहुत अच्छी लग रही है. आने पर रंग कुछ और ही निकलता है.

तो वापस कर देंगे.

पर बिना जरूरत के कोई भी चीज खरीदने की जरूरत ही क्या है? इस तरह रोज-रोज खरीदारी करने से तो खजाना ही लुट जाएगा.

"मम्मी एक काम कीजिए. पापा से कह कर मुझे क्रेडिट कार्ड दिला दीजिए. आप को बैलेंस देखने की जरूरत ही नहीं पड़ेगी. पूर्वी अपनी बात कह रही थी कि तभी उसके पापा रजनीश आ गए. उन्होंने कहा, बोलो... बोलो, मेरी राजकुमारी को क्या चाहिए? ""

क्रेडिट कार्ड चाहिए पापा. मम्मी अपने एकाउंट से खर्च ही नहीं करने देतीं. मम्मी बहुत कंजूस है न पापा. मुझे क्रेडिट कार्ड दिला दीजिए. मैं ज्यादा शॉपिंग नहीं करूँगी. केवल कपड़ा और शूज बस?

पूर्वी को पता था कि उसकी मीठी-मीठी बातों में पापा आ ही जाएँगे. इसलिए उनके नजदीक जा कर प्यार से समझाने लगी.

पर पूर्वी मैं तुम्हें समझा रही हूँ कि बिना जरूरत के शॉपिंग नहीं करनी है.

करेगी... मेरी बेटी करेगी. मोना, एक ही तो बेटी है. इसे तो अपने शौक पूरे करने देना चाहिए न? रजनीश ने बेटी का पक्ष लेते हुए कहा.

मोना ने कहा, "अगर यह अभी से बचत करना नहीं सीखेगी तो पछताएगी. तुम ही इसे समझाओ. अलमारी भरी है. पैसा कमाने के लिए हम दोनों कितनी मेहनत करते हैं."

ठीक है. पर सब इसी के लिए तो है. बेटा, तुम्हारा क्रेडिट कार्ड कल बनवा देता हूँ.

यस्स, अब तो मजा ही मजा. मम्मी, आप तो देखती ही रह गई. अब तो मैं खूब शॉपिंग करूँगी. कहते हुए पूर्वी बाहर निकल गई.

एक महीने बाद रजनीश ने देखा कि क्रेडिट कार्ड से पूर्वी ने दस हजार की शॉपिंग की थी. मोना ने कहा, "इस तरह तो इस लड़की की शॉपिंग की लत लग जाएगी."

अब क्रेडिट कार्ड वापस लेना भी आसान नहीं था. क्रेडिट कार्ड वापस लेने पर पूर्वी को बुरा लग गया और उसने कोई गलत कदम उठा लिया तो? इकलौती बेटी को नाराज करना उचित नहीं था. इसलिए उन्होंने कोई दूसरा उपाय अपनाने के बारे में सोचा.

रजनीश और मोना ने मिल कर एक व्यवस्थित प्लान बनाया. उन्होंने पूर्वी को बुलाया. पहले तो उसके द्वारा की गई शॉपिंग को देखा. तारीफ भी की. फिर एक-दो चीज के लिए पूछा भी, "यह तो अपने पास थी न? यह टॉप महँगा नहीं लग रहा?"

पर पूर्वी इस तरह उत्साह में थी कि उसे जरा भी पछतावा नहीं हुआ. यह देख कर रजनीश ने कहा, "अगले महीने से हम तुम्हें एक ऑफर देने के बारे में सोच रहे हैं. मैं तुम्हारे खाते में पाँच हजार रुपए जमा करूँगा."

बस, पाँच हजार? पूर्वी तुरंत बोल पड़ी. इसलिए मोना ने कहा, "यहाँ ऐसे तमाम लोग हैं, जिनका इतना वेतन भी नहीं है बेटा. ऐसा मत बोलो, पाँच हजार में तो पूरे महीने का राशन आ जाता है."

रजनीश ने कहा, "अरे सुनो तो सही, मैं तुम्हें पाँच हजार दूँगा, इसमें से जितना तुम बचाओगी, उतना अगले महीने अधिक दूँगा. समझ लो कि तुम ने चार हजार खर्च किए तो अगले महीने छह हजार मिलेंगे."

और बिलकुल न खर्च करूँ तो दस हजार?

हाँ, पर हर महीने तुम्हारी खर्च की लिमिट पाँच हजार ही रहेगी. बाकी की बचत तुम्हारे खाते में जमा रहेगी. साल के अंत में उसमें से तुम्हारी पसंद की कोई चीज दिला देंगे.

मोबाइल या फिर लैपटॉप?

कोई भी चीज जो तुम्हें पसंद होगी.

ओके डन." पूर्वी को यह अच्छा लगा. अगले महीने से स्कीम चालू हो गई. पूर्वी ने दो हजार बचाए. राज ने उस महीने सात हजार रुपए दिए. पूर्वी का उत्साह बढ़ता गया. उसकी बचत करने की आदत बनती गई और खर्च अपने आप घटता गया.

आजकल ऑनलाइन शॉपिंग की आदत बड़े-बड़ों का बजट बिगाड़ देती है. अगर सभी किसी न किसी तरह बचत का विकल्प अपनाएँ तो खर्च अपने आप घट जाएगा. और अगर ऑनलाइन शॉपिंग की आदत बढ़ती ही जाए तो खुद ही कार्ड जमा करा दें तो अच्छा रहेगा. पहले माँ-बाप खुद ही अपना फालतू खर्च कम करें और बच्चों में कम उम्र से ही बचत की आदत डालें, जिससे उनकी जिंदगी आसान बन जाए.

अधूरी कहानी पूरी करो

पिछले अंक में हमने आपको यह अधूरी कहानी पूरी करने के लिये दी थी—

विजेता मेंढक



बहुत समय पहले की बात है एक सरोवर में बहुत सारे मेंढक रहते थे. सरोवर के बीच में एक बहुत पुराना धातु का खम्भा भी लगा हुआ था. जिसे उस सरोवर को बनवाने वाले राजा ने लगवाया था.

खम्भा काफी ऊँचा था और उसकी सतह भी बिल्कुल चिकनी थी. एक दिन मेंढकों के दिमाग में आया कि क्यों ना एक रेस करवाई जाए. रेस में भाग लेने वाली प्रतियोगियों को खम्भे पर चढ़ना होगा ,और जो सबसे पहले एक ऊपर पहुँच जाएगा वहीं विजेता माना जाएगा.

रेस का दिन आ पहुँचा चारों तरफ बहुत भीड़ थी. आस -पास के इलाकों से भी कई मेंढक इस रेस में हिस्सा लेने पहुँचे. माहौल में सरगर्मी थी, हर तरफ शोर ही शोर था. रेस शुरू हुई...

लेकिन खम्भे को देखकर भीड़ में एकत्र हुए किसी भी मेंढक को ये यकीन नहीं हुआ कि कोई भी मेंढक ऊपर तक पहुँच पायेगा....

इस कहानी को पूरी कर हमें जो कहानियाँ प्राप्त हुई उन्हें हम प्रदर्शित कर रहे हैं.

मनोज कुमार पाटनवार, बिलासपुर द्वारा पूरी की गई कहानी

अधिकांशतः मेंढक चिल्लाए जा रहे थे 'अरे यह नहीं हो सकता क्या बेकार की मेहनत कर रहे हो. यह असंभव है. फालतू समय बर्बाद कर रहे हो.

यह सुनकर और देखकर तो कुछ मेंढकों का तो उत्साह ही कम हो गया और उन्होंने प्रयास करना छोड़ दिया परंतु एक छोटा सा मेंढक लगातार कोशिश किए जा रहा था और अंततः वह सफलतापूर्वक खम्भे पर चढ़कर उपर जा पहुंचा.

उस छोटे से मेंढक को रेस का विजेता घोषित किया गया. उसको विजेता देखकर अन्य मेंढकों ने उसकी सफलता का कारण पूछा कि आखिर तूने कैसे असंभव को संभव कर दिखाया? तभी पीछे से एक मेंढक की आवाज़ आई, 'अरे! उससे क्या पूछते हो वो तो बहरा है.'

यह सुनकर उन सभी मेंढकों ने सोचा कि यह कैसे पता लगाएं कि यह कैसे सफल हुआ? तो उन्होंने उन्होंने एक अनुभवी मेंढक की मदद ली जो यह पता लगा सके कि आखिर यह जीत कैसे गया. किसी न किसी तरह उस अनुभवी मेंढक ने उससे पूछा, तो उस छोटे से मेंढक ने कहा कि मैं बहरा हूं, लेकिन जब आप लोग जोर-जोर उछल उछल कर चिल्ला रहे थे, तो मुझे लगा जैसे आप मुझसे कह रहे हो कि 'यह तुम कर सकते हो, शाबास, यह तुम्हारे लिए मुमकिन है. आप सभी लोगों के इसी प्रोत्साहन और सहयोग ने मुझे उपर चढ़ने के लिए प्रेरित किया और मैं सफल हो गया.

सीख :- इस कहानी से सीख यह मिलती है कि हमारी सोच, हमारा

आत्मविश्वास और जुनून ही हमें सफल बनाता है. यदि हम दूसरों की बातों में आकर प्रयास करना छोड़ देंगे तो हार ही जाएंगे. यदि वह मेंढक बहरा नहीं होता तो वह भी हार जाता क्योंकि कुछ मेंढकों ने तो दूसरे मेंढकों की बात सुनकर ही हार मान ली थी. इसलिए आज से हमें उन सभी लोगों के प्रति अंधे एवं बहरे हो जाना चाहिए, जो हमें हमारे लक्ष्य से भटकाते हैं.

प्रीति श्रीवास, मुंगेली द्वारा पूरी की गई कहानी

कुछ मेंढको ने उस खंभे पर चढ़ने का प्रयास किया परंतु वे नहीं चढ़ पाये. कुछ मेंढको ने तो अन्य मेंढको की बात सुनकर पहले ही हार मान ली और खंभे पर चढ़ने का प्रयास तक नहीं किया. एक दो मेंढको ने तो बहुत प्रयास किया, पर अंत में दूसरे मेंढको की बातों में आकर हार मान

लिया. उसी में एक छोटा सा मेंढक था, जिसने हार नहीं मानी और लगातार प्रयास करता रहा, जिसे देखकर वहाँ उपस्थित सभी मेंढक उसका हौसला बढ़ाने के लिए तालियाँ बजाने लगे और अंततः वह उस खंभे पर चढ़ गया. अन्य सभी मेंढक यह देख कर दंग रह गए कि यह कैसे खंभे पर चढ़ गया. सभी ने उससे पूछा, तो उसने बताया की आप सभी ताली बजाकर मेरा उत्साहवर्धन कर रहे थे. इसलिए मैं दूगने जोश से खंभे पर चढ़ने का प्रयास किया और चढ़ गया. आप सभी ने मेरा मनोबल बढ़ाया इसके लिए आप सभी का धन्यवाद. सभी मेंढकों ने उस छोटे मेंढक को बधाई व शुभकामनाएं दी.

कहानी से शिक्षा - हमें अपने आप पर, अपने सामर्थ्य पर अटूट विश्वास होना चाहिए व नकारात्मक बातों से हताश न होकर उससे दूर रहना चाहिए. निरंतर लक्ष्य प्राप्त करने के लिए प्रयासरत रहना चाहिए.

सतीश "बम्बा", कोबरा द्वारा पूरी की गई कहानी

छोटे - बड़े, रंग - बिरंगे मेंढक जमा हो गए थे. मेंढकों की संरचना मनुष्य शरीर से मेल खाती है ऐसा कहा गया है, शायद "एराना टेगरीन" में ज्यादा! कुछ सयाने मेंढकों में एक बूढ़ा मेंढक चारों तरफ नजर दौड़ा रहा था. उस सरोवर में कमल भी थे. कुछ कमल खिले हुए थे. और वहीं खम्बा के पास ही एक कमल का बड़ा सा पेड़ पूर्ण - रूपेण खिला हुआ था.

उस बूढ़े मेंढक ने अनुमान लगाया कि, कौन मेंढक कूदकर उसमें चढ़ सकता है और फिर खम्बा में छलांग लगा सकता है. मेंढकों में छलांग लगाने की अद्भुत क्षमता होती है. उस बूढ़े मेंढक के कई पोते थे. लेकिन उसका एक पोता दादा मेंढक को बहुत खुश रखता था.

उस बूढ़े मेंढक ने अपने आज्ञाकारी पोते को जीतवाने की सोची और उसे पास बुलाकर कहा, "लो, तुम मेरी पीठ में चढ़कर उस कमल की चोटी में छलांग लगाकर चढ़ जाओ और फिर वहाँ से छलांग लगाओ और अपने हल्के शरीर का फायदा उठाकर खम्बा की चोटी में पहुँच जाओ!"

उस मेंढक ने अपने दादा मेंढक की पीठ में चढ़कर ऐसा ही किया और उस मेंढक को रेस का विजेता मेंढक घोषित किया गया.

जब उसे पुरस्कार मिला तो वह अपने बूढ़े दादा के चरणों में सब रख दिया.

विजेता मेंढक की चारों ओर प्रशंसा हो रही थी.

संतोष कुमार कौशिक, मुंगेली द्वारा पूरी की गई कहानी

सब सोचने लगे, कोई यह रेस पूरी नहीं कर पाएगा, और ऐसा हो भी रहा था. जो भी मेंढक खम्भे पर चढ़ने का प्रयास करता, वो खम्भे के चिकने एवं काफी ऊँचा होने के कारण थोड़ा सा ऊपर जाकर नीचे गिर जाता. बार-बार कोशिश करने के बाद भी कोई ऊपर खम्भे पर नहीं पहुँच पा रहा था. अब तक काफी मेंढक हार मान गए थे और कई मेंढक गिरने के बाद भी अपनी कोशिश जारी रखे हुए थे.

रेस देखने आए और जो असफल हुई मेंढक मिलकर एक साथ जोर-जोर से चिल्लाने लगे -“यह असंभव है, कोई इतने ऊँचे खम्भे पर चढ़ा नहीं सकता.” उनकी बातों को बार-बार सुनकर चढ़ने की कोशिश करने वाले मेंढक भी हार मान बैठे. उन्होंने भी प्रयास करना छोड़ दिया और हारे हुए मेंढक के साथ चिल्लाने लगे.

चिल्लाने की आवाज को सुनकर, पास में बैठे हुए एक अंधा मेंढक को चढ़ने की इच्छा होने लगी, चलो मैं भी कितना चिकना, और बड़ा खम्भा है उसे अनुभव कर लेता हूँ. कोशिश करने में क्या हर्ज है. किसी तरह वह मेंढक खम्भे के पास पहुँचता है, उसे देखकर सभी मेंढक हँसते हुए कहते हैं-“यह देखो अब अंधे मेंढक भी रेस के विजेता बनने आए हैं.” वह मेंढक किसी की बातों में ध्यान न देते हुए दृढ़ संकल्प एवं आत्मविश्वास के साथ खम्भे में चढ़ना प्रारंभ किया. वह कई बार पहुँचते-पहुँचते गिरा, उठा पुनः प्रयास किया. उसके प्रयासों को देखकर सभी मेंढक अचंभित हो गए और सोचने लगे कि वास्तव में यह अंधे मेंढक खम्भे में चढ़ सकता है. सभी मेंढक ने एक साथ जोर-जोर से चिल्लाए-“तुम चढ़ सकते हो, थोड़ा और-थोड़ा और, तुम चढ़ सकते हो.

“सभी के प्रेरणादायक आवाजों को सुनकर अंधा मेंढक जोश और जुनून के साथ चिकने खम्भे में चढ़ने लगा. वह आखिरकार ऊपर पहुँचने में कामयाब हो गया और उसे रेस का विजेता घोषित किया गया. सभी ने उसके लिए ताली बजाकर सम्मान दिया.

बच्चों इस कहानी के माध्यम से हमने सीखा कि हमारी सकारात्मक सोच, हमारा दृढ़ संकल्प और आत्मविश्वास के साथ हम कोई कार्य करते हैं तो निश्चित ही सफलता प्राप्त होती है. निराशाजनक बातों को ध्यान में न रखते हुए सकारात्मक विचारों के साथ कार्य करना चाहिए. साथ ही हमने यह भी देखा कि मेंढक अंधा होते हुए भी सफलता प्राप्त की. इस कारण किसी के दिव्यांगता पर हमें हँसी नहीं उड़ानी चाहिए.

टेकराम ध्रुव 'दिनेश', बिलासपुर द्वारा पूरी की गई कहानी

सरोवर के बीच स्थित खंभा में चढ़ने की प्रतियोगिता जिस दिन होना था उस दिन आस-पास के सरोवरों से भी बहुत सारे मेंढक उस सरोवर में आकर एकत्र हो गये. उन ढेर सारे मेंढकों में कुछ प्रतियोगिता में शामिल होने, कुछ प्रतियोगिता को देखने और कुछ मेंढक प्रतियोगिता में शामिल अपने साथियों का उत्साहवर्धन करने के लिए एकत्र हुए .

खंभा में चढ़ने की प्रतियोगिता आरंभ हुआ, प्रतियोगिता में शामिल सारे मेंढक खंभा में चढ़ने का प्रयास करने लगे, लेकिन खंभा का सतह चिकनी होने के कारण थोड़ी-बहुत ऊंचाई पर चढ़ते ही फिसल जा रहे थे.

फिर चढ़ने की कोशिश करते लेकिन परिणाम फिर वही फिसल कर नीचे आ जाना.

इधर देखने वाले उनके साथी उनका उत्साहवर्धन करने में कमी नहीं कर रहे थे. वे चिल्ला-चिल्ला कर उन सबका उत्साह बढ़ा रहे थे. हिम्मत न हारें साथियों जोश के साथ फिर कोशिश करें, किसी ने कहा है कि तूफान से डरकर नौका पार नहीं होती, कोशिश करने वालों की हार नहीं होती. प्रयास जारी रखें सफलता जरूर मिलगी. लेकिन चढ़ते-फिसलते, चढ़ते-फिसलते वे सारे मेंढक थक गये थे, अब तो एक इंच भी चढ़ना मुश्किल हो रहा था.

तभी एक मेंढक को कुछ सूझा, उसने कहा मित्रों इस तरह अलग-अलग चढ़ते रहे तो कभी चोटी तक नहीं पहुंच पायेंगे. एक काम करते हैं, एक साथी खंभा में चढ़े, जैसे ही वो फिसले दूसरा साथी उसकी पीठ पर चढ़कर ऊपर जाकर खंभा को पकड़ ले, और ये तब तक करते रहें जब तक एक साथी खंभे की चोटी तक न पहुंच जाय.

सभी ने उस मेंढक के सुझाव को मानकर वैसा ही करने लग गए, नीचे देखने वाले चिल्लाते रह गए कि ऐसा नहीं करना है, और देखते ही देखते सारे मेंढक चोटी पर पहुंच कर खुशी में नाचने लगे. सभी ने मिलकर उस मेंढक को विजेता घोषित किया जिसकी वजह से ये संभव हो पाया. लेकिन उस मेंढक ने कहा साथियों हम सबने मिलकर ये प्रयास किया है, कोई काम ऐसा होता है जो अकेले के लिए असंभव होता है, एक दूसरे का साथ देकर हम सबने इसे संभव बना दिया, इसीलिए मैं विजेता नहीं हम सब विजेता हैं.

अगले अंक के लिए अधूरी कहानी

राजा ब्रूस



एक बार राजा ब्रूस अपने शत्रुओं से हार गया. स्वयं को बचाने के लिए उसने एक गुफा में शरण ली. वह बहुत दुखी था क्योंकि वह अपना पूरा साहस एव हिम्मत खो चुका था. एक दिन वह गुफा के अंदर लेटा हुआ था.

तभी उसने देखा एक मकड़ी जाल बनाने के लिए कडा परिश्रम कर रही है. वह जाल बनाने के लिए बार-बार दीवार पर चढ़ती, लेकिन जाल का धागा टूट जाता और वह नीचे गिर पड़ती. ऐसा कई बार हुआ.

लेकिन मकड़ी हिम्मत नहीं हार रही थी. इस प्रकार वह निरन्तर प्रयास करती रही. अंततः उसने अपना जाल पूरा कर ही लिया.

इसके आगे क्या हुआ होगा? इस कहानी को पूरा कीजिए और इस माह की पंद्रह तारीख तक हमें kilolmagazine@gmail.com पर भेज दीजिए.

चुनी गई कहानी हम किलोल के अगले अंक में प्रकाशित करेंगे.



वृक्ष, नदियां, और पर्वत

रचनाकार- शालिनीपंकज दुबे, बेमेतरा

कितना भी कोशिश करूँ
पर तेरा कर्ज उतार न पाऊँ
ऐ प्रकृति...
कण कण तेरा उपकार करें
दे सुविधा, साधन, सीख सभी
फिर भी

मैं मनुज तृण सा होकर भी
करता रहूँ तेरा प्रतिपल दोहन
चाह तेरी पूजा की करूँ
कृतज्ञ हूँ तेरे उपकार का
पर कृतघ्नता है रग रग में बसा
बस विनाश के राह चलूँ
ये तरु देखो निश्चार्थ खड़ा
दे फल, फूल, और पत्ती

प्राणदायिनी हवा
प्राथमिक उपभोक्ता है सिर्फ यही
सब निर्भर है इन पर ही
मृतप्राय हो काष्ठ बने
वैभवता की सीढ़ी यही
अमरता का पाया ऐसा वरदान
मरते हुए भी
हो जाये अंकुरित कहीं
न किसी से आस करें, न किसी से उम्मीद कभी



बढ़ती है स्वयं ही
भोजन बनाये खुद से ही
सूरज की छाँव में
ले अंगड़ाई
एक ही लक्ष्य जीवन का
प्रतिपल दूजो के काम आए
और ये नदियां
न जाने किसकी तलाश में
भटकती रहती है
अनवरत
लगातार
पर बहते हुए भी
राहगीरों की प्यास बुझा जाए
काश!!
संकल्प ले
हम भी
पर्वत से अटल हो
रक्षक बने इस प्रकृति की
ये वृक्ष, नदियां और पहाड़
इन सबसे मिलकर ही तो
बनी है हमारी प्रकृति
जो सिर्फ और सिर्फ देती है.

खुद के लिए समय निकालें

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी ,गोंदिया



वर्तमान दुनिया में हर आदमी अपने कार्यों में इस तरह व्यस्त हो गया है कि उसे अपने लिए समय निकालने का ध्यान ही नहीं रहता. अपने परिवार तक सीमित व्यक्ति भी अपने लिए समय नहीं निकाल पाता. आपाधापी की जिंदगी में वह खुद को भूल सा गया है और सिर्फ अपने परिवार बच्चों तक सीमित हो गया है. अपने अनमोल शरीर के मानसिक स्वास्थ्य, शारीरिक ऊर्जा और तनाव मुक्त जीवन के लिए खुद के साथ समय बिताना बेहद फायदेमंद है जिसे आजकल की भाषा में, मी-टाइम कहा जाता है.

व्यवहारिक व्यावसायिक जीवन में से रोज़ खुद के लिए एक-दो घंटे का समय निकालना चाहे वह व्यायाम, अपना शौक पूरा करना, संगीत या फिर किसी भी प्रकार का काम जिससे मानसिक शारीरिक संतुष्टि हो करना बेहद फायदेमंद है..

खुद के लिए समय निकालने का अर्थ है अपने अत्यधिक व्यस्त रूटीन से विश्राम के लिए या अपने लिए कुछ समय निकालना. यह महज कुछ मिनट या घंटों के लिए भी हो सकता है. मी-टाइम का मतलब उस समय का आनंद लेना है, जहाँ हम शांति से कॉफी का आनंद लेते हैं, अपने

नाखून ठीक करते हैं या जिम जाते हैं. वह समय जो व्यस्त कार्यक्रम से हम खुद को रिचार्ज करने के लिए निकालते हैं.

अगर हम खुद के लिए समय निकालते हैं तो इससे हमारे शरीर की थकान दूर होती है और हम बेहतर महसूस करते हैं. अगर हम रिलैक्स रहेंगे और मन शांत रहेगा तो हम बेहतर तरीके से काम कर पाएँगे. मन और शरीर को रिलैक्स करने के लिए हम खुद के लिए समय जरूर निकालें. बेहतर मेंटल हेल्थ, एनर्जी और स्ट्रेस फ्री होने के लिए मी-टाइम बेहद फायदेमंद है. एक शोध के मुताबिक युवा भारतीय महिलाएँ हर दिन अपने स्मार्टफोन पर करीब 145 मिनट बिताती हैं. यह वक्त उनके खुद के लिए होता है. मनोवैज्ञानिक भी मी टाइम को मानसिक स्वास्थ्य और रिश्तों के लिए लाभदायक मानते हैं. इससे न सिर्फ हम खुद को लेकर किसी उधेड़बुन से अपने आप को मुक्त रखते हैं, बल्कि यह हमारे दिमाग को तरोताजा भी करता है. मनोवैज्ञानिकों का कहना है कि इससे एकाग्रता बढ़ती है. हम अधिक तार्किक बनते हैं. घर-बाहर बेहतर तरीके से समायोजित हो पाते हैं, हम खुश रहते हैं और मन में सकारात्मक ऊर्जा का प्रवाह होता है.

अगर हम माता-पिता हैं और खुद के लिए समय निकालना चाहते हैं तो हम ये आसान तरीके अपना सकते हैं- अपनी हॉबी को समय देना शुरू करें, जैसे स्विमिंग, डांस करना आदि. आज के समय में खुद के साथ समय बिताने का सबसे अच्छा तरीका है ऑडियोबुक्स या ऑनलाइन पॉडकास्ट या रेडियो सुनना. हम डायरी लिख सकते हैं या अपने बचपन का कोई शौक फॉलो कर सकते हैं. हर दिन हम बच्चों को देते हैं तो एक दिन का ब्रेक लेकर घूमने जा सकते हैं या फिर शॉपिंग कर सकते हैं. हम किसी फिजिकल एक्टिविटी को भी समय दे सकते हैं, इंडोर वर्कआउट या जॉगिंग, रनिंग आदि एक्टिविटी अपना सकते हैं.

खुद के साथ समय बिताकर हम फ्रेश महसूस करेंगे बच्चों के लिए फायदेमंद होता है मी टाइम. अगर हम खुद को समय दे रहे हैं तो उसका फायदा हमारे बच्चों को भी मिलेगा. जिस समय हम खुद को समय देना चाहते हैं उस समय बच्चों के साथ खेलें और उनके साथ समय बिताएँ. बच्चों के साथ समय बिताकर हम बेहतर महसूस करेंगे और हमारा मूड भी फ्रेश हो जाएगा. अगर हम खुद के लिए समय निकालेंगे तो अपने मूड को बेहतर कर सकते हैं. माता-पिता बनने के बाद कई बार काम और जिम्मेदारी के दबाव में मूड खराब होता है जिससे हमारा व्यवहार आपस में और बच्चों के साथ बदल सकता है, पर हम खुद को समय देंगे तो हम अपने मूड को बेहतर कर सकते हैं.

हम व्यासायिक और व्यावहारिक जीवन के तनावों को देखें तो, डेडलाइन, टारगेट, एचीवमेंट, घर की व्यवस्था, बच्चों की परीक्षाएँ, उनका कैरियर, पेंसेंट्स की हेल्थ इत्यादि इन सबके बीच कहीं कुछ छूट तो नहीं रहा है हमारा? कभी एकांत के पलों में हम पूछे अपने दिल से कि इन पलों में क्या है, जो केवल हमारा है यानी हमारा मी टाइम. जवाब में ईमानदारी झलके इसलिए हम कुछ पलों के लिए समर्पण का चश्मा जरूर उतार लें. अपने लिए खुशी के पल जुटाने की चाह सभी की होती है, वो चाहे पुरुष हो या फिर महिला. लेकिन कई बार महिलाओं को घर परिवार, करियर की तमाम जिम्मेदारियों के चलते खुद के लिए फुर्सत नहीं मिल पाती. हो सकता है कि हम शायद इसकी अहमियत न समझते हों. पर विज्ञान भी मानता है कि अगर हम खुद के लिए वक्त नहीं निकालते हैं, तो निगेटिव सोच बढ़ती जाती है.

हम अपने व्यवसायिक जीवन से थोड़ा वक्त निकालें, कुछ ऐसा काम करने के लिए जिससे हमको सुकून मिले. हमारे भीतर एक नई ऊर्जा का संचार हो. वक्त को इस तरह बाँटिए कि हमारे हिस्से में भी थोड़ा सा समय जरूर रहे. अभी लोग अपना पूरा समय दूसरों के लिए रखते हैं. यहाँ तक कि भोजन और श्रृंगार तक हम दूसरों के लिए ही कर रहे हैं, जबकि यह नितांत निजी मामला है. कभी-कभी ऐसा भी होता है कि हमारा शौक ही व्यवसाय बन जाता है. फिर खुद को समय देना जरूरी नहीं होता, लेकिन अमूमन ऐसा ही होता है कि हमारे शौक कुछ और होते हैं और काम कुछ और. काम का दबाव दिमाग पर होता है और शौक का दबाव दिल पर. जब हम काम छोड़कर शौक पूरा करने जाएँगे तो दिमाग इजाजत नहीं देगा और अगर शौक को छोड़कर काम करेंगे तो दिल झंझोड़ता रहेगा. आज कई लोग यह भूल गए हैं कि खुद के लिए जिया कैसे जाए. हम जब परिवार में होते हैं, बच्चों के साथ होते या मित्रों के साथ, लेकिन दरअसल हम कभी खुद के साथ नहीं होते. हर काम में आर्थिक लाभ देखना ठीक नहीं है. सच पूछिए तो खुद के लिए समय निकालना स्वार्थी होने का संकेत नहीं है. खुद को खुश रखकर ही हम अपनों में खुशी बिखेर सकते हैं.

लड्डुओं की बारिश

रचनाकार- उपासना बेहार, भोपाल



उत्तराखंड के रामगढ़ गाँव में बानी रहती थी उसका घर पहाड़ की चोटी पर था. उसकी माँ स्वादिष्ट मिठाइयाँ बनाती थी. एक दिन उसकी माँ ने लड्डू बनाये और फिर उन्हें एक गोल डब्बे में अच्छी तरह से बंद करके रखा तभी लड्डूओं से भरा ये डिब्बा उनके हाथ से फिसल कर गिर गया और लुढ़कने लगा. लुढ़कते हुये वो घर के खुले दरवाजे से बाहर की ओर चला गया. माँ लड्डूओं से भरे डिब्बे के पीछे दौड़ी. डिब्बा तो तेजी से पहाड़ी से नीचे की तरफ लुढ़कने लगा. माँ चिल्लाने लगी “अरे मेरा लड्डूओं से भरा डिब्बा लुढ़का रे, कोई उसे पकड़ो रे.”

तभी बानी के पापा आये, उन्होंने भी डिब्बा लुढ़कते देखा. माँ फिर से चिल्लाने लगी “अरे मेरा लड्डूओं से भरा डिब्बा लुढ़का रे,कोई उसे पकड़ो रे.” पापा भी डिब्बे को पकड़ने के लिए भागने लगे. तभी माँ को बेटा आता दिखाई दिया, माँ जोर से बोली “ अरे लड्डूओं से भरा डिब्बा लुढ़का रे, बेटा उसे पकड़ो रे.” ढलान होने के कारण डिब्बा पहाड़ से नीचे की तरफ तेजी से लुढ़कने लगा. भाई भी डिब्बे के पीछे भागा. अब आगे डिब्बा लुढ़क रहा था उसके पीछे माँ भाग रही थी, माँ के पीछे पापा भाग रहे थे, पापा के पीछे भाई भाग रहा था. माँ चिल्लाये जा रही थी “अरे मेरा लड्डूओं से भरा डिब्बा लुढ़का रे,कोई उसे पकड़ो रे.” डिब्बा था कि रुकने का नाम नहीं ले रहा था और इतनी तेजी से लुढ़क रहा था कि सरपट भागता हुआ घोड़ा भी पीछे रह जाए.

इतने में गांव के मुखिया दिख गए, उन्हें देखते ही माँ जोर से बोली “मुखिया जी, मुखिया जी मेरा लड्डुओं से भरा डिब्बा लुढ़का रे, कोई उसे पकड़ो रे.” मुखिया ने देखा बड़ा सा डिब्बा लुढ़क रहा है. डिब्बा के अंदर के स्वादिष्ट लड्डुओं की कल्पना करके ही उनके मुँह में पानी आ गया और वो भी डिब्बा को रोकने के लिए दौड़ पड़े. अब आगे आगे डिब्बा उसके पीछे माँ, माँ के पीछे पापा, पापा के पीछे भाई, भाई के पीछे मुखिया जी भाग रहे थे.

माँ ने देखा सामने से बानी आ रही है. माँ ने उसे जोर से आवाज लगाई “बानी लड्डुओं से भरा डिब्बा लुढ़का रे, तू उसे पकड़ रे.” बानी ने देखा डिब्बा तेजी से उसकी तरफ लुढ़कता हुआ आ रहा है, वो डिब्बे को पकड़ने के लिए रोड़ के बीच में खड़ी हो गयी. तभी रास्ते में एक बड़ा पत्थर आ गया. तेजी से लुढ़कता हुआ डिब्बा जोर से उस पत्थर से टकराया और ऊपर की तरफ उछला. हवा में डिब्बा खुल गया. सारे लड्डू नीचे की ओर गिरने लगे. पहाड़ी के नीचे की तरफ कुछ लोग खड़े थे कि अचानक उनके ऊपर लड्डुओं की बारिश होने लगी. लोगों ने झटपट सारे लड्डुओं को कैच किया, वे सभी अचंभित हो गए कि आखिर ये लड्डुओं की बारिश कैसे हो रही है तभी उन्होंने देखा कि कई सारे लोग दौड़ते हुये उन्ही की तरफ आ रहे हैं. माँ ने देखा सभी के हाथों में लड्डू है. माँ ने सभी को लड्डुओं की बारिश का कारण बताया फिर सभी ने मिल कर कैच किये हुये लड्डू मजे से खाए.

चित्र देख कर कहानी लिखो

पिछले अंक में हमने आपको यह चित्र देख कर कहानी लिखने दी थी—



हमें जो कहानियाँ प्राप्त हुई हम नीचे प्रदर्शित कर रहे हैं

मनोज कुमार पाटनवार, बिलासपुर द्वारा भेजी गई कहानी

हाथी और बकरी की दोस्ती

एक जंगल में एक हाथी और एक बकरी रहते थे. दोनों बहुत पक्के दोस्त थे. दोनों साथ में मिलकर हर दिन खाने की तलाश करते और साथ में ही खाते थे. एक दिन दोनों खाने की तलाश में अपने जंगल से बहुत दूर निकल गए. वहां उन्हें एक तालाब दिखाई दिया. उसी तालाब के किनारे एक बेर का पेड़ था.

बेर का पेड़ देखकर हाथी और बकरी बहुत खुश हुए. वह दोनों बेर के पेड़ के पास गए, फिर हाथी ने अपनी सूंड से बेर के पेड़ को ज़ोर से हिलाया और ज़मीन पर ढेर सारे पके हुए बेर गिरने लगे. बकरी जल्दी-जल्दी गिरे हुए बेरों को इकट्ठा करने लगी.

संयोगवश उसी बेर के पेड़ पर एक चिड़िया का घोंसला भी था, जिसमें चिड़िया का एक बच्चा सो रहा था और चिड़िया दाने की खोज में कहीं गई हुई थी. बेर का पेड़ जोर से हिलाने के कारण चिड़िया का बच्चा घोंसले से बाहर तालाब में गिर पड़ा और डूबने लगा.

चिड़िया के बच्चे को डूबता हुआ देखकर, उसे बचाने के लिए बकरी तालाब में कूद गई, लेकिन बकरी को तैरना नहीं आता था. इस वजह से वह भी तालाब में डूबने लगी.

बकरी को डूबता हुआ देखकर हाथी भी तालाब में कूद गया और उसने चिड़िया के बच्चे और बकरी, दोनों को डूबने से बचा लिया.

इतने में चिड़िया भी वहां पर आ गई थी और वह अपने बच्चे को सही-सलामत देखकर बहुत खुश हुई. उसने हाथी और बकरी को इसी तालाब और बेर के पेड़ के पास रहने के लिए कहा. तब से हाथी और बकरी भी चिड़िया के साथ उस बेर के पेड़ के नीचे रहने लगे.

कुछ ही दिनों में चिड़िया का बच्चा बड़ा हो गया. चिड़िया अपने बच्चे के साथ जंगल में घूम कर आती थी और हाथी और बकरी को जंगल में किस पेड़ पर फल लगे हैं, इसकी जानकारी देती थी. इस तरह हाथी, बकरी, और चिड़िया मजे में रहते और खाते-पीते थे.

कहानी से सीख:

हमें किसी का बुरा नहीं करना चाहिए. अगर हमारी गलती से किसी को परेशानी होती है, तो उस गलती को सुधारना चाहिए और मन-मुटाव दूर करते हुए एक-दूसरे की मदद करनी चाहिए.

संतोष कुमार कौशिक, मुंगेली द्वारा भेजी गई कहानी

बकरी और हाथी

एक जंगल में एक हाथी और एक बकरी रहते थे. दोनों बहुत पक्के दोस्त थे. दोनों साथ में मिलकर हर दिन खाने की तलाश करते और साथ में ही खाते थे.

एक दिन दोनों खाने की तलाश में अपने जंगल से बहुत दूर निकल गए. वहाँ उन्हें एक तालाब दिखाई दिया. उसी तालाब के किनारे एक अमरूद का पेड़ था. उस पेड़ देखकर हाथी और बकरी बहुत खुश हुए. वे दोनों अमरूद के पेड़ के पास गए, फिर हाथी ने अपनी सूँड़ से अमरूद के पेड़

को ज़ोर से हिलाया और ज़मीन पर ढेर सारे अमरूद गिरे. बकरी जल्दी-जल्दी गिरे हुए अमरूदों को इकट्ठा करने लगी.

संयोगवश उसी अमरूद के पेड़ पर एक तोते का घोंसला था, हाथी द्वारा अमरूद के पेड़ को हिलाने के कारण वह घोंसला पूरी तरह नष्ट हो गया.

कुछ देर पश्चात वह तोता अमरूद के पेड़ के पास पहुँचकर अपने घोंसले को बिखरे हुए देखकर बहुत दुःख हुआ और हाथी से कहने लगा-"हाथी भाई! मैंने आपका क्या बिगाड़ा है जो मेरे घोंसले को नष्ट कर दिए."

तभी हाथी ने कहा-"मिट्टू भाई, मैंने जानबूझकर आपके घोंसलें को नष्ट नहीं किया है.यह सब अनजान में हुआ है.मुझे क्षमा करना,हम लोग पुनः आपके घोंसले बनाने में सहयोग करेंगे.

हाथी के विनम्रता पूर्वक बातों को सुनकर तोता उसे क्षमा कर देते हैं. हाथी और बकरी मिलकर उसके घर बनाने में सहयोग करते हैं. अब तीनों एक अच्छे से दोस्त बन जाते हैं.तोता जंगल का सैर करता है और हाथी एवं बकरी को जंगल में किस पेड़ पर फल लगे हैं,इसकी जानकारी देता है.इस तरह हाथी,बकरी और तोते मजे से खाते-पीते रहते थे.

कुछ दिन पश्चात इन तीनों की दोस्ती में ग्रहण लग गई.एक शिकारी आया और उन्होंने तीनों को अपना शिकार बनाना चाहा. तीनों ने अपनी जान बचाकर अलग-अलग दिशा में पहाड़ की ओर भागे. शिकारी से तो बच गए लेकिन तीनों दोस्त एक दूसरे से बिछड़ गए. खाने-पीने का तो ठिकाना ही नहीं रहा. अकेलापन होने के कारण सभी दुःखी थे.

सभी एक दूसरे को ढूँढने लगे. संयोगवश हाथी और बकरी पहाड़ के अलग-अलग शिखर में पहुँच गए, जो पास होते हुए भी एक दूसरे से मिल नहीं सकते. दोनों एक-दूसरे के पास आना तो चाहते थे परंतु दोनों पहाड़ के बीच बहुत अधिक गहरा खाई होने के कारण मिल नहीं सकते और ना ही वापस जा सकते थे.इधर तोते भी उन दोनों का तलाश करते हुए उन्हीं पहाड़ के पास पहुँच गए, जहाँ हाथी और बकरी थे.

तोते को देखकर हाथी और बकरी अपनी-अपनी समस्या बताते हुए कहा-तोता भाई हम लोग पास होते हुए भी अलग-अलग है. हमें कोई उपाय नहीं सूझ रहा है,जिससे कि हम साथ-साथ हो जाए. तभी तोते ने सोचकर कहा-हाथी भाई, आप अपना सूँड़, बकरी तक ले जाइए और बकरी को कहा- आप सावधानी पूर्वक हाथी के सूँड़ के सहारे से हाथी के पास आए. तोते की बातों को

दोनों समझकर, जैसे तोते ने कहा है वैसा ही किया और तीनों एक ही पहाड़ में साथ-साथ हो गए.. हाथी, बकरी और तोता पुनः एक साथ मिलकर खुशी से अपना जीवन यापन किए.

बच्चों इस कहानी से हमने सीखा कि किसी का बुरा नहीं करना चाहिए. अगर अनजान में हमसे गलती होती है या हमारी गलती से किसी को परेशानी होती है तो उससे क्षमा माँग कर उस गलती को सुधारना चाहिए और मनमुटाव दूर करते हुए एक दूसरे की मदद करना चाहिए. साथ ही इस कहानी में हमने देखा कि हाथी और बकरी से छोटे होते हुए भी तोते जो है, अपने युक्ति के द्वारा उनके समस्या का निदान किया गया. इसका मतलब है कि कभी-कभी हमसे छोटे व्यक्ति भी सही सलाह दे तो उसे मान लेना चाहिए.

कुं. संजना मानिकपुरी, पांचवी, शास. प्राथ. शाला बरदुली, मुंगेली द्वारा भेजी गई कहानी

दयालु हाथी

रीना और बीना नाम की दो बकरियां थी. दोनों में गहरी दोस्ती थी. दोनों एक साथ खेलती और एक साथ ही जंगल चरने जाती थी. एक दिन रीना और बीना बकरी खेलते - खेलते जंगल में बहुत अंदर चले गए. तब रीना ने बीना बकरी से कहा - हम अपने घर से बहुत दूर आ गए हैं, हमें वापस चलना चाहिए. बीना बकरी को खेलने में मजा आ रहा था, तो उसने रीना बकरी से कह दिया तुम जाओ मुझे और खेलना है | रीना बकरी को घर का रास्ता पता था, उसने बीना बकरी से कहा तुम्हें घर का रास्ता याद है, अकेली घर आ जाओगी. बीना बकरी ने गुस्से से कहा तुम चली क्यों नहीं जाती है, मैं आ जाऊंगी. बीना बकरी ने ऐसा कहने पर रीना बकरी गुस्सा होकर घर वापस आ गई. बीना बकरी जंगल में अकेली खेलती हुई, शेर के गुफे तक पहुंच गई. शेर ने बीना बकरी को देखा और खाने के लिए दौड़ाया, बीना बकरी डर के मारे इधर - उधर भागने लगी और भागते - भागते एक पहाड़ी की चोटी पर पहुंच गई. शेर भी पीछे - पीछे पहुंच गया. बीना बकरी डर कर उस पहाड़ी के बगल की पहाड़ी पर छलांग लगाकर कूद गई और छिप गई. शेर को जब बीना बकरी दिखाई नहीं दिया, तो वह वापस लौट गया. अब बीना बकरी बाहर आकर मदद के लिए आवाज लगाने लगी - मेरी मदद करो कोई. तभी एक दयालु हाथी ने उसकी आवाज सुनी और उसने पहाड़ी की चोटी पर जाकर बीना बकरी को अपनी सूड़ से रास्ता बनाकर चोटी पार कराई. बीना बकरी ने हाथी को धन्यवाद दिया. हाथी ने पूछा तुम यहां कैसे पहुंची, तुम्हारा घर कहा है. तब बीना बकरी ने सारी बात हाथी को बता दी और कहा कि वह पास के

गांव में रहती है, पर उसे रास्ता पता नहीं है. वह रास्ता भटक गई है. तब हाथी ने बीना बकरी को उसके गांव तक पहुंचा दिया और वह अपने हाथी को एक बार फिर धन्यवाद कह घर चली गई.

कहानी से शिक्षा - हमें सोच - विचार कर निर्णय लेना चाहिए. जिसे जरूरत हो उसकी मदद अवश्य करना चाहिए.

कु. मोनिका साहू, पांचवी, शास. प्राथ. शाला बरदुली, मुंगेली द्वारा भेजी गई कहानी

हाथी और बकरी

एक समय की बात है. हाथी और बकरी दो दोस्त थे. दोनों में बड़ी गहरी दोस्ती थी. एक दिन हाथी और बकरी दोनों भोजन की तलाश में जंगल गए थे. तभी बकरी चारा चरते - चरते एक पहाड़ी की चोटी पर पहुंच गई. उसी समय अचानक पहाड़ी की बीच की चट्टान टूट कर गिर गई और पहाड़ी के बीच में खाई बन गया. बकरी ने हाथी को मदद के लिए आवाज लगाई. हाथी वहां पर पहुंच कर देखा तो बकरी दूसरी ओर थी और बचाओ - बचाओ चिल्ला कर रो रही थी. तब हाथी ने बकरी से कहा - तुम डरो नहीं मैं कुछ करता हूं. फिर हाथी ने थोड़ा सोचा फिर बकरी से कहा- तुम थोड़ा पीछे चली जाओ मैं अपनी सूड़ को तुम्हारी तरफ करता हू. तुम इस पर छलांग लगाकर कूद जाना. बकरी ने वैसा ही किया और वह वापस हाथी के पास पहुंच गई. दोनों घर वापस आ गए.

कहानी से शिक्षा - हमें कोई भी काम करते समय सतर्क रहना चाहिए और सावधानी रखनी चाहिए.

अगले अंक की कहानी हेतु चित्र



अब आप दिए गये चित्र को देखकर कल्पना कीजिए और कहानी लिख कर हमें यूनिकोड फॉण्ट में टंकित कर ई मेल **kilolmagazine@gmail.com** पर अगले माह की 15 तारीख तक भेज दें. आपके द्वारा भेजी गयी कहानियों को हम किलोल के अगले अंक में प्रकाशित करेंगे

पर्यटन दिवस

रचनाकार- पंकी सिंघल, शालीमार बाग



जुड़ती संस्कृतियां फिर आपस में विचारों का होता खूब प्रसार

रोजगार के अवसर पैदा कर पर्यटन बढ़ाता जब कारोबार

किसी भी देश की आर्थिक स्थिति में पर्यटन विभाग की महत्वपूर्ण भूमिका होती है. न केवल विदेशी पर्यटक अपितु घरेलू पर्यटक भी देश के सकल घरेलू उत्पाद को ऊँचा उठाने में मददगार साबित होते हैं, रोजगार की संभावनाएँ भी पर्यटन के माध्यम से बढ़ती हैं जिससे बेरोजगारी की समस्या पर काबू पाया जा सकता है. होटल, ट्रेकिंग, पर्वतारोहण और यात्रा व्यवसायों इत्यादि जैसी पर्यटक गतिविधियों के माध्यम से लोगों को रोजगार मिलता है. विश्व भर के अनेक देशों से प्रतिवर्ष बड़ी तादाद में पर्यटक भारत भ्रमण करने हेतु आते हैं. यहाँ प्रत्येक वर्ष पर्यटकों की संख्या में भारी बढ़ोतरी देखी जा रही है जो देश के आर्थिक विकास के लिए शुभ संकेत है.

पर्यटन के माध्यम से न केवल आर्थिक विकास अपितु सामाजिक एवं साँस्कृतिक विकास की संभावनाएँ भी बढ़ती हैं. एक देश की संस्कृति से दूसरे देश की संस्कृति के परिचय का सबसे सशक्त माध्यम पर्यटन ही है. पर्यटन के माध्यम से लोगों के बीच आचार-विचार, संस्कृतियों एवं भावनाओं का विनिमय संभव होता है जिसकी वजह से राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय संबंधों में भी मजबूती आती है और वसुधैव कुटुंबकम की भावना को भी बल मिलता है.

पर्यटन लोगों के लिए आजीविका के असंख्य अवसर तो प्रदान करता ही है, साथ ही अलग-अलग संस्कृतियों, रीति-रिवाजों, मान्यताओं, विश्वासों और प्राकृतिक सौंदर्य को नज़दीक से देखने

के मौके भी देता है. दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि पर्यटन विश्व को एक सूत्र में बाँधने का कार्य करता है क्योंकि जिस खूबसूरती के साथ पर्यटन विभिन्न देशों के लोगों के मध्य नजदीकियाँ बढ़ाता है और उनमें परस्पर प्रेम एवम सौहार्द्र की भावना का विकास करता है वह किसी और माध्यम से संभव नहीं है.

गौरतलब है कि पिछले 2 वर्षों में कोरोना महामारी के चलते वैश्विक पर्यटन को गहरा आघात पहुँचा है, पर्यटकों की संख्या में भारी गिरावट देखी गई, जिसके चलते पर्यटन से जुड़े लोगों को रोजगार से हाथ धोने पड़े और बेरोजगारी अपनी चरम सीमा पर पहुँच गई. महामारी के कारण ही विभिन्न देशों के बीच साँस्कृतिक आदान-प्रदान में भी कमी आई और आपसी समझ का स्तर भी घटा. इन सब के फल शुरू भारतीय अर्थव्यवस्था को गहरा झटका लगा और कई देशों में तो, या यूँ कहें कि विश्वव्यापी मंदी का मंजर भी सामने आया.

इस सब के बावजूद कुछ ऐसे स्थल हैं जहाँ अभी भी पर्यटन की भरपूर संभावनाएँ देखने को मिलती हैं. उन्हीं में से एक है - 572 द्वीपों से मिलकर बना अंडमान निकोबार द्वीप समूह. अंडमान और निकोबार द्वीप समूह के मौसम का लुत्फ उठाने का सबसे बेहतरीन समय दिसंबर माना जाता है पर्यटन के लिहाज से दिसंबर जनवरी का माह यहाँ घूमने और सैर सपाटे के लिए उपयुक्त समझा जाता है. इन दिनों विश्व भर से लाखों की संख्या में पर्यटक यहाँ घूमने आते हैं और यहाँ की सुहानी और मनमोहक वादियों में तनाव से मुक्ति पाते हैं. दुनिया की भीड़ भाड़, उपापोह, जद्दोजहद और संघर्षपूर्ण जिंदगी से दूर प्रकृति की गोद में बसा अंडमान और निकोबार द्वीप समूह पर्यटन को बढ़ावा देने में सक्षम समझा जाता है क्योंकि भारी मात्रा में पर्यटक यहाँ आते हैं और ठहरते भी हैं जिससे यहाँ के लोगों को व्यवसाय, फोटोग्राफी, रोजगार, होटल आदि गतिविधियों को बढ़ावा देने में सहायता भी मिलती है. समुद्री जीवों और उनके जीवन के संबंध में रुचि रखने वाले लोगों के लिए यहाँ से बेहतर दूसरा कोई स्थान हो ही नहीं सकता. यह स्थान अपने बेहद खूबसूरत द्वीपों की वजह से विश्व भर में प्रसिद्ध है. अंडमान और निकोबार द्वीप समूह के मुख्य पर्यटक स्थलों में हैवलॉक द्वीप, बैरन द्वीप, राधानगर बीच, भरतपुर बीच, विजयनगर बीच, लालाजी बे बीच, बारातंग द्वीप, चिड़िया टापू, पोर्ट ब्लेयर तथा सेल्यूलर जेल अत्यधिक प्रसिद्ध हैं.

आपकी जानकारी के लिए बता दें कि अंडमान और निकोबार द्वीप समूह को मिनी भारत के नाम से भी जाना जाता है क्योंकि भारत के अनेक राज्यों के लोग यहाँ रहते हैं. इसी वजह से यह स्थान भारत की मिली-जुली संस्कृति, रीति रिवाज रहन-सहन और खान-पान के लिए भी जाना जाता है. क्योंकि यहाँ भारत के अनेक राज्यों के लोग रहते हैं, इसी वजह से यहाँ भारत के अनेक राज्यों

के त्यौहार भी बड़े ही धूमधाम से मनाए जाते हैं . क्रिसमस और नए वर्ष का जश्न तो यहाँ देखते ही बनता है विश्व भर से लोग यहाँ आते ही क्रिसमस और नए वर्ष के शुभ अवसर पर हैं ताकि वे यहाँ होने वाले खूबसूरत नजारों के साक्षी बन सकें. अपने जीवन के सुखद और बेहतरीन पल बिताने के लिए प्रतिवर्ष असंख्य लोग यहाँ आते हैं और अपने भीतर असीम ऊर्जा एकत्रित कर लौट जाते हैं. यह स्थान प्रकृति का वरदान भी समझा जाता है.

यहाँ कई आकर्षक समुद्र तट हैं, जिनमें कई समुद्र तटीय गतिविधियाँ, जैसे पैरासेलिंग, केले की नाव की सवारी, साथ ही साथ पानी के नीचे और पानी की गतिविधियों जैसे स्कूबा डाइविंग आदि शामिल हैं. निःसंदेह अंडमान और निकोबार द्वीप समूह विश्व भर से पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करता है जिससे पर्यटन को बढ़ावा मिलता है. एक लुभावनी एवं रोचक जगह होने के साथ-साथ यह आज पर्यटकों के लिए विशेष आकर्षण का केंद्र बन चुका है.

सुभाष जयंती

रचनाकार- पिकी सिंघल, दिल्ली



आया दिवस अवतरण का उनके
छाया चहुँ ओर उल्लास
अपने रक्त से लिख दिया जिसने
हिंद का एक नया इतिहास

उड़ीसा के कटक में खिला था
सन सत्तानवे में फूल पलाश
आज़ाद हिंद की गठित कर सेना
जिसने जीता सबका विश्वास

परतंत्र भारत में बनकर उभरे
आज़ादी की नई इक आस

भारतीय इतिहास के अमर हस्ताक्षर
योद्धा थे वीर सुभाष

चौबीस वर्ष की अल्पायु में ही
आई एन सी का किया विन्यास
न करो गलत न सहो गलत कह की
राष्ट्र को समर्पित अपनी हर सांस

युवाओं को प्रेरित करते थे
देशभक्ति की अजब थी उनको प्यास
लहू का कण कण राष्ट्र को दे डाला
शेष रहा न कोई उनका काश

देश प्रेम की खातिर छोड़ा सब
थे सिविल परीक्षा में भी वो पास
हिंदवासियों के प्रति सदा ही
रखते थे वो दिल में मिठास

नारा उनका जय हिन्द का कभी
दुश्मन को न आया रास
खातिर स्वदेश के जेल गए पर
स्वतंत्रता की छोड़ी न कभी भी आस

दृढ़प्रतिज्ञा और जोश के जिसके
कायल थे सभी आस पास
किया तन मन धन सब न्यौछावर देश पर
मुर्दों में भी फूँकी श्वास

तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूंगा
गूंजे ध्वनि ये अवनि आकाश
अंदर तक भेदता था सुभाष को
परतंत्र हिंदवासियों का त्रास

सोच स्वतंत्र हिंद की तस्वीर उनके
था मन में भरा हुलास
फिर बांध कफ़न सिर पर किया
ब्रिटिश सरकार का देश निकास

पराक्रम दिवस समर्पित उनको
तारीख 23 जनवरी है बिंदास
आदर्शों पर चलकर सुभाष के आओ
मनाएं दिवस यह खास

तैयारी हो चुकी है

रचनाकार- अशोक कुमार यादव, मुंगेली



आरंभ कर बार-बार अभ्यास,
लड़ाई का आगाज हो चुकी है.
ज्ञान महायुद्ध में जीतने के लिए,
परीक्षा की तैयारी हो चुकी है ?

जीवन कुरुक्षेत्र में उतर अकेला,
कृष्ण सदृश स्वयं को उपदेश दो.
भ्रम और पराजय कौरव दलों की,
धनुर्धारी अर्जुन बन वध कर दो.

अंतरात्मा की शक्ति को पहचान तू,
ज्ञानमणी को मस्तक में कर धारण.
उमड़-घुमड़ रहे हैं संशय के बादल,
प्रचंड सूर्योदय कर करो अवदारण.

तुम्हारी सोच पर निर्भर है कामयाबी,
जीत की माला जप जीत-जीत सोचो.
तूलिका कुदाल से धीरे प्रहार करके,
यदि प्यासा हो तो स्वयं कुआं खोदो.

तेरी मंजिल महबूबा तुझे पुकार रही है,
तिमिर के स्वप्न छोड़ नींद से अब जाग.
नयी उम्मीद और नया उत्साह के साथ,
नित कर्म कर लक्ष्य की ओर अब भाग.

सफलता की राह

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी , गोंदिया

वर्तमान समय में हर व्यक्ति की यह चाहत है कि वह एक सफल शख्सियत बने. उसके पास नाम, पैसा, शोहरत हो जिसके लिए वह राजनीतिक, सरकारी, निजी या विदेश में अपना भविष्य बनाने के लिए प्रयासरत है. परंतु यह बात रेखांकित करने योग्य है कि हमें जीवन में सफल होने के लिए धैर्य, दृढ़ता, अनुशासन जैसे मानवीय गुणों रूपी भट्टी से तप कर निकलने की ज़रूरत है. जीवन में रचनात्मक और सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने और संकीर्ण विचारधारा से ऊपर उठकर उन मानवीय गुणों को अपनाने की ज़रूरत है जिसके बल पर हम वास्तविक सफल शख्सियत बन पाएँगे.



सहिष्णुता और असहिष्णुता की जानकारी इसलिए ज़रूरी है, क्योंकि अभी भी ऐसे युवाओं की संख्या अधिक है जिन्होंने इन शब्दों को सुना तो है पर इसका अर्थ गहराई से नहीं जानते.

सहिष्णुता भावनात्मक शक्ति है. भाव इन्द्रियों और मन से परे होता है. मन भाव से संचालित होता है और इन्द्रियाँ भी भाव से संचालित होती है. भाव सबसे ऊपर है. जो व्यक्ति सहिष्णुता का विकास करना चाहे उसे अपने शारीरिक स्वास्थ्य पर भी ध्यान देना ज़रूरी है. जब सहन करने की शक्ति कम लगे तो सोचना चाहिए कि कहीं मेरे शरीर के अवयवों में कोई विकृति तो नहीं हुई है, कोई दोष तो नहीं आया है ?

सहनशीलता एक सांस्कृतिक गुण है ना कि प्राकृतिक गुण और इसी लिए मनुष्य ही सहनशीलता के लिए सबसे उपयुक्त है और इसी कारण आज से चार हजार वर्ष पूर्व जब मनुष्य ने एक व्यवस्थित जीवन जीना शुरू किया तो ऐसा लगा मानो मनुष्य ने सहिष्णुता को स्वीकार कर लिया है पर समय के साथ संस्कृति के भी प्रभाव की न्यूनता मानव के जीवन में दिखाई देने लगी और जिस मनुष्य ने विवाह, परिवार का निर्माण किया वही एक सीमा के बाद असहिष्णुता के प्राकृतिक गुण को प्रदर्शित करने लगा.

अगर हम दृढ़ता, अनुशासन और धैर्य की बात करें तो मेरा मानना है कि युवाओं से लेकर बुजुर्गों तक सभी इसका अर्थ जानते होंगे. यह तीनों ऐसे मानवीय गुण हैं जिनका कहीं ना कहीं हर व्यक्ति को पालन करना ही होता है, जो नहीं करते उनके जीवन में कष्टों का आना शुरू हो जाता है, यानी हम कह सकते हैं कि यह तीनों गुण दुखों, कष्टों को रोक कर रखते हैं और इनके सहारे जीवन में सफलता का रास्ता तय किया जा सकता है.

हम विपत्तियों में धैर्य नहीं खोएँगे, संकल्पों को दृढ़ता से नहीं पूर्ण करेंगे और इन दोनों कार्यों को अनुशासन में रहकर करेंगे तो सफलता हमारे कदम चूमेगी.

अगर हमारे बड़े बुजुर्गों की कहावत पर हम चले तो यह जीवन बहुत खूबसूरत, उपयोगी और सफल लगने लगेगा.

माननीय पूर्व उपराष्ट्रपति ने एक कार्यक्रम में छात्रों के साथ बातचीत में युवाओं से अपने चुने हुए क्षेत्रों में सफल शिखर बनने के लिए सहिष्णुता, धैर्य, अनुशासन, कड़ी मेहनत, अध्ययन और सहानुभूति के गुणों को अपनाने का अनुरोध किया है. उन्होंने इसका उल्लेख किया कि अगर कोई असहिष्णु है तो वह नेता नहीं बन सकता. उन्होंने कहा कि एक नेता को लोगों के जनादेश को लेकर सहिष्णु होना चाहिए. उन्होंने आगे कहा कि एक नेता में योग्यता, क्षमता, अच्छा आचरण और चरित्र होना चाहिए. उन्होंने इस बातचीत में छात्रों को जीवन के बारे में रचनात्मक और सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने की सलाह दी. उन्होंने आगे कहा, आपको जाति, धर्म और क्षेत्र जैसे संकीर्ण विचारों से ऊपर उठना चाहिए और कभी भी अन्य धर्मों का अनादर नहीं करना चाहिए.

अतः उपरोक्त पूरे विवरण का विश्लेषण करने पर हम पाएँगे कि जीवन में सफल शिखर बनने के लिए धैर्य, दृढ़ता, सहिष्णुता, अनुशासन के गुणों को अपनाने की ज़रूरत है. जीवन में रचनात्मक और सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने संकीर्ण विचारधारा से ऊपर उठकर मानवीय गुणों को अपनाने की ज़रूरत है.

पानी बचाओ जीवन बचाओ

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी महाराष्ट्र



पानी के स्रोतों की सुरक्षा स्वच्छता अपनाने,
के लिए जी जान से ध्यान लगाना है,
पानी बचाओ जीवन बचाओ,
यह फॉर्मूला मूल मंत्र के रूप में अपनाना है।

पानी बचाने की ज़वाबदेही निभाना है,
हर मानव को जल संरक्षण संचयन अपनाकर,
पानी बचाकर जनजागृति लाना है,
अगली पीढ़ियों के प्रति ज़वाबदारी निभाना है।

बिना पानी ज़िन्दगी का दर्द क्या होता है,
पानी अपव्यय वालों तक पहुंचाना है,
पानी का उपयोग अब हमें,
प्रसाद की तरह करना है।

पानी बचाने की ज़वाबदेही निभाना है,
पानी का मूल्य हर मानव को समझाना है,
पानी को अहम दुर्लभ मानकर,
अपव्यय करने से बचाना है.

अभी कमाने की तुम्हारी उम्र नहीं

रचनाकार- चेतना प्रकाश 'चितेरी' ,उत्तर प्रदेश



पढ़ - लिख कर नाम कमाओ.

बेटा.

अभी कमाने की तुम्हारी उम्र नहीं,

महाराणा प्रताप के शौर्य की कहानियाँ सुन लो.

बच्चा.

अभी कमाने की तुम्हारी उम्र नहीं,

गुरु के वचनों को ध्यान से सुन कर कंठस्थ कर लो.

बचवा.

फिर न विद्यार्थी जीवन आएगा,

क्रोध , मद , लोभ त्यागो .

बेटा.

अभी कमाने की तुम्हारी उम्र नहीं,

सदाचारी बनो. विवेकशील बनो.
बाबू.
पढ़ो, खूब पढ़ो. देश की तरक्की करो. बेटा.
एक माँ की बस इतनी - सी चाह है,
सपनों को साकार करो.
लल्ला.
अभी कमाने की तुम्हारी उम्र नहीं.

मेरी रसमलाई

रचनाकार- कन्हैया साहू 'अमित', भाटापारा

देख रसमलाई मन ललचाये,
चाहे कोई कितना समझाये.

रंग-रूप आँखों को अति भाता,
जी करता है, दिनभर मैं खाता.

दिखती सौम्य, शांत, अतिशय सुंदर,
पौष्टिकता का यह भरा समुंदर.

महक दुग्ध का मन को हरषाये,
देह सुदृढ़कर मन सबल बनाये.

प्रोटीन, फैट, कैलोरी वाली,
रहे क्षीरसागर में इठलाती.

मम्मी डाँटे, पापा भी टोकेँ,
मुझे रसमलाई खाने से रोकेँ.



सब कुछ कुर्बान कर आये

रचनाकार- सोमेश देवांगन, कबीरधाम



मेरे भाई कलाई के राखी की,
लाज काहे तुम रख नहीं पाये.
भाभी को देकर सिंदूर दान,
दान सिंदूर का कर तुम आये.
पापा के बहते आँसू पत्थर हो,
हृदय को तो वो छय कर जाये.
माँ तो फिर बस माँ होती भाई,
कोख सुनी कर क्यूँ चले आये.
मुनिया के गुड़िया की चूनरी,
लेकर तुम क्यूँ चले नहीं आये.
राजू रोते रोते बस यही कहता,
पापा अभी तक घर नहीं आये.
कैसे कह दूँ भईया मैं सब को,
भाई सबकुछ कुर्बान कर आये.

गणतंत्र दिवस

रचनाकार- अशोक कुमार यादव , मुंगेली



आओ साथी मिलकर सभी गणतंत्र दिवस मनाएंगे,
स्वतंत्रता, समता, एकता और अखंडता को अपनाएंगे.
नया सूर्योदय, नया प्रभात, उमंग और उत्साह होगा,
देश प्रेम की भावना लिये जन-जन में उल्लास होगा.
हर हाथों में तिरंगा झंडा लहराता प्रभात फेरी निकलेगी,
भारत माता की जयगान मुख से वंदे मातरम निकलेगी.
शांति, साहस, सत्य और पवित्रता के ध्वजा फहराएंगे,
आओ साथी मिलकर सभी गणतंत्र दिवस मनाएंगे.
वीर जवानों और अधिनायकों के कुर्बानी को याद करो,
भारत के संविधान निर्माता बाबा साहब को याद करो.
व्यक्ति बने समाजवादी मन में हो बंधुत्व की भावना,
न्याय, अवसर और अधिकार मिले यही है कामना.
बच्चे, जवान और वृद्ध मिलकर राष्ट्रगान गर्व से गाएंगे,
आओ साथी मिलकर सभी गणतंत्र दिवस मनाएंगे.

दर्द तो आखिर दर्द होता है

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु", शिवारीनारायण



दर्द तो आखिर दर्द होता है
दर्द बांटना भी एक दवा होती है,
किसी के बहते आंसु को पोंछना
खुदा की दुवा से कम नहीं होती है.

दुनिया मे दर्द बहुतों को है
और इसे देने वाले भी कम नहीं है,
अब ये जीना सीख लिए हैं
पर दर्द देने वालो को चैन नहीं है.

बेसहारों का अपना कोई नहीं है
बेबसी किसी को दिखती नहीं है
बेबसी का मजाक उड़ाया जाता है
पर किसी की आवाज उठती नहीं है.

अभाव, गरीबी भी कम नहीं है
दो जून की रोटी मयस्सर नहीं है
यहां सम्पन्नों की कमी नहीं है
पर उनको कोई खबर नहीं है.

दर्द का कारण बनने से अच्छा है
हम दर्द मिटाने वाले बन जाएं,
उनको भी कुछ खुशियाँ मिले
हम खुशी बांटने वाले बन जाएं.

"हम बच्चों का तिरंगा"

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू" , राजिम



मातृभूमि की आन तिरंगा,
हम सब का अभिमान तिरंगा.

देखो अंबर पर लहराते,
जन गण मन सब मिलकर गाते.

नन्हें -नन्हें बच्चे सारे,
हम भारत के चाँद सितारे.

हम ही सब को बतलायेंगे,
आज तिरंगा फहरायेंगे.

भोर काल की प्रभात फेरी,
तनिक नहीं करते हैं देरी.

कदम मिलाकर बढ़ते आगे,
देखो अब हम बच्चे जागे.

सुंदर- सुंदर गीत कहानी,
खुश होकर है हमें सुनानी.

बूंदी लड्डू और मिठाई,
बाँट-बाँट कर खाते भाई.

गांधीजी के सिद्धांत व विचार

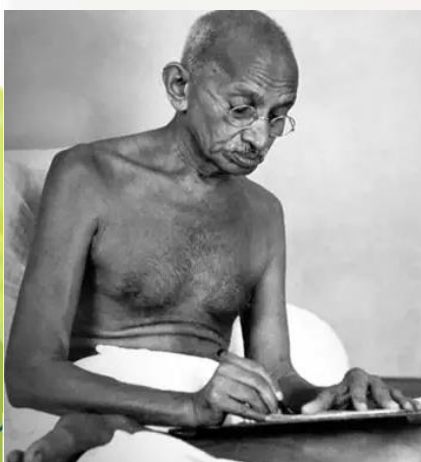
रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी , महाराष्ट्र

सत्य अहिंसा शांति धर्मनिरपेक्षता
धार्मिक बहुलवाद और अधिकारों के लिए
लड़ना सत्याग्रह का सहारा
गांधीजी के सिद्धांत थे

राजनीतिक नैतिकतावादी उपनिवेशवाद विरोधी
दूरदर्शी नेतृत्व अहिंसात्मक दृष्टिकोण
बाधाओं के खिलाफ एकजुटता
गांधीजी के विचार थे.

गांधी जी का सम्मान नोबेल शांति पुरस्कार
के लिए पांच बार नामांकन किया गया
ग्रेट ब्रिटेन ने मृत्यु के 21 साल बाद उनका सम्मान
डाक टिकट जारी किया जिनके खिलाफ लड़ाई किए थे.

दो अक्टूबर महात्मा गांधी के विश्वासों आदर्शों
शिक्षाओं अहिंसात्मक दृष्टिकोण को
उत्सव के रूप में याद कर उनका पालन
करने का दिन है जो उनके स्वपन थे.





असली दुनिया में गोलू

रचनाकार- शिखर चंद जैन , कोलकाता



10 वर्षीय गोलू की तबीयत अक्सर खराब रहती थी.आए दिन कभी वो आंखों के सामने जाले और जलन की शिकायत करता,कभी पूरी रात नींद नहीं आती, कभी कलाई और अंगूठे में दर्द रहता, कभी कमर दर्द और पीठ दर्द से परेशान रहता. इतना ही नहीं महीने भर से उसे पेट दर्द और गैस की समस्या भी होने लगी थी.

उसके मम्मी पापा अक्सर उसकी यह दशा देखकर दुखी रहते थे.हालांकि कभी-कभी मम्मी मजाक में कह देती थी कि "यह हमारे घर का बुजुर्ग बच्चा है. इसे अभी से बुढ़ापे वाली सारी बीमारियों ने जकड़ लिया है".

उसे अलग-अलग डॉक्टरों के पास ले जाते तो वे अपने अपने हिसाब से दवाएं दे देते थे.गोलू दवाएं खाता तब तक सही रहता लेकिन थोड़े ही दिन बाद फिर कोई परेशानी आ जाती.

गोलू की तबीयत के बारे में पता चला तो दादा-दादी से रहा न गया. वे गांव से तुरंत आ गए. उन्होंने देखा गोलू मोबाइल में मुंह घुसाए हुए ही उनके पास आया, चरण स्पर्श किया और बिस्तर पर जाकर फिर से मोबाइल में डूब गया.

दादा दादी को बड़ी हैरानी भी हुई और बुरा भी लगा.

दादाजी फुसफुसाकर दादी से बोले, "देखा! पहले हम आते थे तो यही गोलू गले से लिपट जाता था और खूब बातें करता था."

दादी ने हामी में सिर हिलाया.लेकिन कुछ कहा नहीं.

खाने का टाइम हुआ तो दादा दादी ने गोलू को आवाज लगाई,"गोलू बेटा आ जाओ खाना खाते हैं."

गोलू ने अपने मोबाइल पर कुछ देखते हुए,जोर-जोर से हंसते हुए, कभी धत तेरे की, कभी ओहो कहता हुआ गपागप खाना खा लिया और फिर बिस्तर पर जा बैठा.

दादी ने गोलू की मम्मी से कहा,"बहू, यह गोलू सारे दिन मोबाइल में करता क्या रहता है ?ना खाना ठीक से खाता है ना किसी से बात ठीक से करता है?"

मम्मी ने कहा, "अम्मा गोलू और इस मोबाइल का 24 घंटे का साथ है.रात को साथ में ही मोबाइल लेकर सोता है, पढ़ाई लिखाई भी इसी से करता है, खेलता भी इसी से है."

दादाजी बोले," बस यही तो है इसकी बीमारी की जड़.पेट दर्द, कमर दर्द, आंख दर्द,अंगूठे और कलाई में दर्द, अनिद्रा सब बीमारियों की जड़ मोबाइल का दुरुपयोग ही है. इसीलिए इसका वजन भी बढ़ गया है."

दादी बोली,"पहले तो यह बाहर बहुत खेलता था.तुम कुछ कहती नहीं हो ?"

बहुत कहते हैं अम्मा. मगर इसे अब ना क्रिकेट अच्छा लगता है न फुटबॉल या बैडमिंटन. क्या करें कुछ समझ में नहीं आता? मम्मी ने मानो हार ही मान ली थी.

दादाजी बोले," बहू, इसे इस आभासी यानी वर्चुअल दुनिया से असली दुनिया में वापस लाना होगा."

अगली सुबह दादाजी बाजार से चरखी,मांझा और पतंगे ले आए.दादी मम्मी और दादा जी शाम को छत पर चढ़कर पतंगे उड़ाने लगे.

गोलू भी उनके साथ साथ छत पर गया तो शाम की ठंडी ठंडी हवा उसे बहुत अच्छी लगी. वह भी पतंग उड़ाने में मशगुल हो गया.

दादाजी ने पतंग उड़ाते हुए कहा, "बहु शाम को खाना छत पर ही ले आना.गोलू को आज मैं कुछ विशेष तारों और चांद के बारे में बताऊंगा. रात को मम्मी पापा,दादा दादी और गोलू ने छत पर ही भोजन किया.

गोलू बोला, "दादा जी ये तो ऐसे लग रहा है मानो हम किसी रेस्तरां में कैंडल लाइट डिनर ले रहे हों.मैं तो कभी छत पर आता ही नहीं."

दादा जी ने गोलू को तारों से जुड़ी कई दिलचस्प बातें बताई. धीरे-धीरे उसे नींद आने लगी तो वह नीचे आकर सो गया.

इस बीच एक अच्छी बात हुई कि गोलू को मोबाइल की याद नहीं आई.

अगले ही दिन रविवार था.सुबह 5 बजे ही दादाजी ने गोलू को जगा दिया.बोले, "गोलू बेटा, चल तुझे पास के बगीचे में एक से बढ़कर एक पक्षी दिखाऊंगा. यहां कई बार तो बाहर से भी पक्षी आते हैं. तुम चाहो तो उनकी तस्वीरें लेकर उनके बारे में लिख भी सकते हो."

गोलू को दादा जी का प्रस्ताव पसंद आ गया.

इसी तरह दादा जी गोलू को कभी गौशाला ले जाते,कभी चिड़ियाघर,कभी पार्क चले जाते तो कभी पिकनिक पर.

धीरे-धीरे गोलू को बाहर की दुनिया भा गई.उसे यह दुनिया उसे मोबाइल से कहीं ज्यादा सरस रंगीन और दिलचस्प लगने लगी.

बाहर घूमने के कारण कॉलोनी के कुछ बच्चे उसे दोस्त भी बन गए और शारीरिक रूप से सक्रिय रहने के कारण उसका वजन भी कम हो गया.

दादी और दादाजी को आए 25 दिन हो चुके थे. गोलू की स्कूल की छुट्टियां भी खत्म होने को चली थीं. उनके जाने का प्रोग्राम तय हो गया.

दादा-दादी जाते हुए बोले," बेटा हम तुम्हें बहुत मिस करेंगे.साथ ही यहां की बहुत सारी चीजें भी.लेकिन तुम रोज कहीं ना कहीं बाहर जरूर जाना और हमें तस्वीरें भेजना."

गोलू बोला, " हां दादा जी बिल्कुल. अब तो मैं बाहरी यानी असली दुनिया की खास बातों के वीडियो भी

यूट्यूब पर डालने लगा हूं. मैं और मेरे दोस्तों ने तय किया है कि हम कभी बर्डवाचिंग, कभी पिकनिक, कभी स्टारगेजिंग, कभी पतंगबाजी जरूर करेंगे. हफ्ते में एक बार गौशाला जाकर गायों को घास और गुड़ भी खिलाएंगे. बाहर की दुनिया में इतना कुछ है यह मुझे आपने ही दिखाया और सिखाया है..... और दादा जी, आपने एक बात महसूस की? आजकल मैं बीमार भी नहीं पड़ता हूं. डॉक्टर मेरा इलाज नहीं कर पा रहे थे लेकिन आपने कर दिया."

दादा-दादी एक दूसरे को देख कर मुस्कुराने लगे.

यह भारत देश है मेरा

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी , महाराष्ट्र



भारत ने 26 जनवरी 2023 को कर्तव्य पथ पर गणतंत्र दिवस की परेड में दुनिया को अपना दम और आत्मनिर्भर भारत की गाथा 23 झांकियों के माध्यम से प्रदर्शित कर इतिहास रचा, जिसे सारी दुनिया ने हैरत भरी नज़रों से देखा कि इतनी तेजी से भारत विकास के झंडे गाड़ रहा है. दुनिया के तमाम विकासशील देशों को इससे प्रेरणा लेनी चाहिए. जिसमें जज्बा जांबाज़ी हो उसे सफलता जरूर मिलती है, जिसका प्रत्यक्ष उदाहरण आज का भारत है. 74 वें गणतंत्र दिवस की परेड में इस बार मुख्य अतिथि मिस्र के राष्ट्रपति अब्देल फतह अल सिसी रहे और परेड में भी वहाँ की सैनिक टुकड़ी शामिल हुई. सबसे खूबसूरत रहा स्वदेशी हथियारों का डिस्प्ले, लाइट कंबैट टेलीकॉस्टर डेयरडेविल्स की टीम को महिला अफसर ने लीड किया. विशेषता यह थी कि कोरोना से पहले करीब सवा लाख लोग परेड में शामिल होते थे परंतु अभी करीब पैतालीस हजार लोग शामिल हुए क्योंकि कोरोना अभी पूरी तरह गया नहीं है इस बार दर्शकों के बैठने की व्यवस्था अलग से की गयी थी.

26 जनवरी 2023 को पहली बार गणतंत्र दिवस की परेड कर्तव्य पथ पर दुनिया ने देखी, हिंदुस्तान की विराट ताकत. स्वदेशी सैन्य साधनों का शानदार प्रदर्शन का इतिहास रचा गया.

कर्तव्य पथ पर इस बार देश ने इतिहास बनते देखा, देश में पहली बार आदिवासी महिला राष्ट्रपति ने परेड की सलामी ली. उन्होंने राष्ट्रीय ध्वज फहराया और उसके बाद 21 तोपों की सलामी के

साथ राष्ट्रगान हुआ. राष्ट्रपति ने कर्तव्य पथ से राष्ट्र का नेतृत्व किया. मिस्र के राष्ट्रपति अब्देल फतह अल-सीसी मुख्य अतिथि थे. इससे पहले पीएम ने वॉर मेमोरियल पहुँचकर शहीदों को श्रद्धांजलि दी. इस दौरान उनके साथ रक्षा मंत्री, सीडीएस, तीनों सेनाओं के सेना प्रमुख मौजूद रहे. इसके बाद पीएम कर्तव्य पथ पहुँचे, यहाँ उन्होंने राष्ट्रपति का स्वागत किया. इस मौके पर परेड में भारत का स्वदेशी सैन्य पराक्रम और नारी शक्ति की ताकत नजर आई. आकाश मिसाइल, अर्जुन टैंक जैसे घातक हथियारों ने सेना के शौर्य को दिखाया, आसमान में प्रचंड और राफेल समेत 50 विमानों की उड़ान ने सीमाओं से परे भारतीय वायु सेना की शक्ति प्रदर्शित की. ये दृश्य हर भारतीय का सीना गर्व से चौड़ा करने वाला रहा. 90 मिनट की परेड में 23 झाँकियाँ भी दिखीं. इनमें राज्यों की और मंत्रालयों विभागों की झाँकियाँ शामिल रहीं. जहाँ यूपी की झाँकी में अयोध्या की झलक दिखी, तो वहीं गृह मंत्रालय द्वारा नशा मुक्त भारत की झाँकी और केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बल की झाँकी में 'नारी शक्ति' को दर्शाया गया. आखिर में भारतीय सेनाओं के 50 विमानों ने फ्लाई पास्ट किया.

संस्कृति मंत्रालय का सांस्कृतिक कार्यक्रम वंदे भारतम कार्यक्रम नई दिल्ली में कर्तव्य पथ पर राष्ट्रीय गणतंत्र दिवस समारोह में प्रमुख आकर्षणों में से एक रहा. राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिता से चुने गए 479 कलाकारों ने 'नारी शक्ति' विषय पर पूरे देश के सामने प्रदर्शन किया. भव्य परेड के दौरान, कलाकारों ने अपने जीवंत और ऊर्जावान प्रदर्शन के माध्यम से दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया और एक भारत, श्रेष्ठ भारत की सच्ची भावना में भारत की विविध सांस्कृतिक एवं कलात्मक विरासत को प्रदर्शित किया. गणतंत्र दिवस समारोह में कर्तव्य पथ पर संस्कृति मंत्रालय की 'शक्ति रूपेण संस्थिता' शीर्षक वाली रंगीन झाँकी भी दिखाई गई. झाँकी देवी के 'शक्ति' रूप पर आधारित है. इस झाँकी के माध्यम से कई लोकनृत्यों को एक मंच पर उतारा गया.

अंतिम साँस तक लड़ना होगा

रचनाकार- प्रीतम कुमार साहू, धमतरी



जीवन पथ पर लड़ना होगा
कदम मिलाकर चलना होगा.

राहे अपनी खुद गढ़ना होगा
लक्ष्य मार्ग पर बढ़ना होगा.

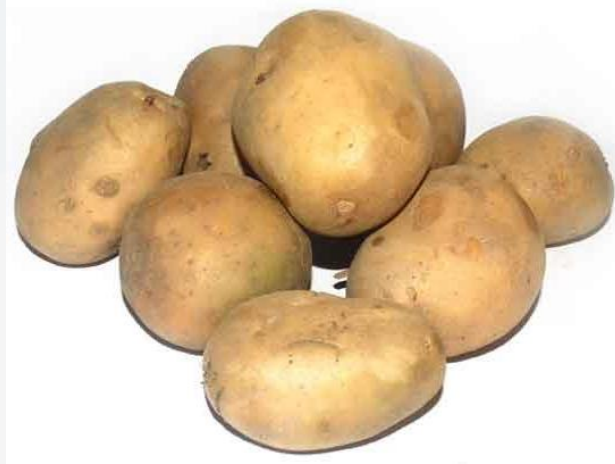
रगों में साहस भरना होगा
कर्म से किस्मत लिखना होगा.

मुश्किलों से खुद लड़ना होगा
लड़ते लड़ते बढ़ना होगा.

सफलता नहीं मिलती जब तक
अंतिम साँस तक लड़ना होगा.

आलू के अहम

रचनाकार-प्रिया देवांगन "प्रियू", गरियाबंद

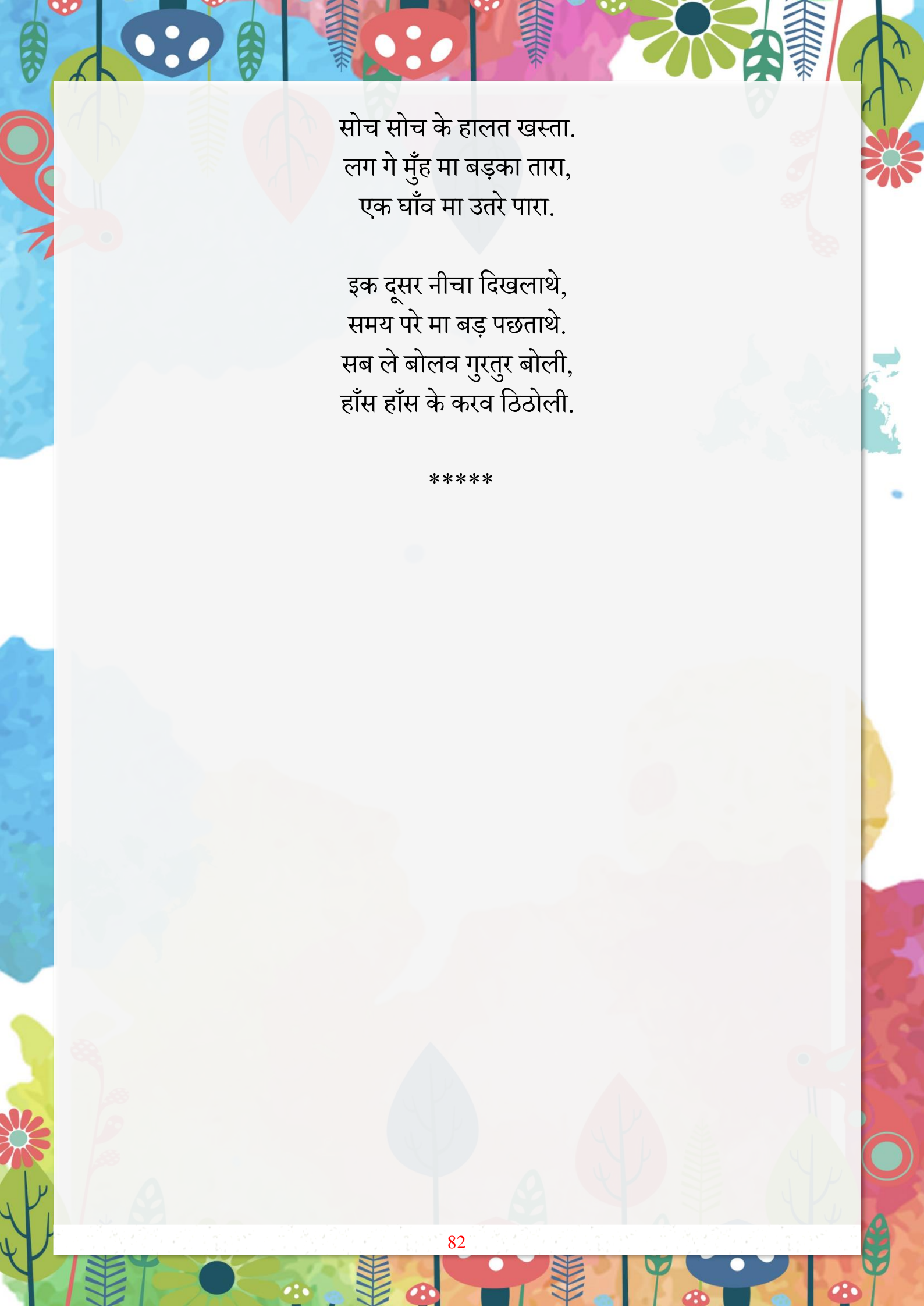


सज सम्हर के आवय आलू,
ओहर राहय अड़बड़ चालू.
सबो साग मा ठाठ जमावै,
अपन बात मा अकड़ दिखावै.

सुबक सुबक रोवय तरकारी,
होगे आलू सब बर भारी.
पटे नहीं भाजी सँग तारी.
लौकी देवय बिककट गारी.

आलू बोले मँय हँव राजा,
सुन कद्दू के बजथे बाजा.
लोगन मन मोला बड़ भाथे,
चाट चाट के लइका खाथे.

हुरहा होगे निच्चट सस्ता,



सोच सोच के हालत खस्ता.
लग गे मुँह मा बड़का तारा,
एक घाँव मा उतरे पारा.

इक दूसर नीचा दिखलाथे,
समय परे मा बड़ पछताथे.
सब ले बोलव गुरतुर बोली,
हाँस हाँस के करव ठिठोली.

आपदा जोखिम की जड़ें

रचनाकार-प्रियंका सौरभ, हिसार



प्राकृतिक आपदाएँ एक प्रमुख कारण हैं जो किसी राष्ट्र के जीवन और संपत्ति पर बोझ का कारण बनते हैं। इसलिए आपदा के प्रभाव, उसके शमन और आपदा के प्रभावों को कम करने के लिए आवश्यक अन्य गतिविधियों के अध्ययन पर तत्काल ध्यान देना अनिवार्य है। आपदाएँ मानव निर्मित और प्राकृतिक, दोनों हो सकती हैं। मानव निर्मित आपदाओं में दंगे, युद्ध, परमाणु खतरे, खतरनाक अपशिष्ट आदि शामिल हैं। प्राकृतिक आपदाएँ बाढ़, भूकंप, सुनामी, भूस्खलन, बादल फटने जैसे जलवायु कारकों और रोग, महामारी जैसे जैविक कारकों के कारण हो सकती हैं। कुछ आपदाएँ सीधे प्रभावित करती हैं। और उनका तत्काल प्रभाव पड़ता है और अन्य का दीर्घकालिक प्रभाव पड़ता है। किसी भी प्रकार की आपदा से हमेशा मानव जीवन और राज्य संपत्ति का भारी नुकसान होता है। जबकि कई आपदाओं में संपत्ति के विनाश को टालना संभव नहीं है लेकिन किसी भी आपदा से मानव जीवन को बचाया जा सकता है।

आपदा घटनाओं की एक श्रृंखला है जो बड़े पैमाने पर जीवन, आजीविका और संपत्ति का विनाश करती है। जब आपदाएँ अपरिहार्य हो जाती हैं, तो उनके जोखिम को कम करने की तैयारी के बारे में सोचना अनिवार्य हो जाता है। जैसा कि आम कहावत है, "रोकथाम इलाज से बेहतर है", यह न केवल जरूरी है बल्कि लचीलापन बनाने के लिए लाभदायक भी है, क्योंकि यह कम विनाश

लाता है और यह आपदा के बाद राहत और पुनर्वास की तुलना में सस्ता है। आपदाएँ मानव जाति के लिए एक विचार नहीं है। उन्होंने बाढ़, भूकंप, सुनामी, चक्रवात, कुछ नामों के लिए हर संभव रूप में अपनी नींव स्थापित की है। चाहे वह चीनी बाढ़ हो या फ्लोरिडा के चक्रवात, आपदा के निशान सीमाओं के पार हैं।

इस संदर्भ में, मानव जाति के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि वह प्रतिक्रिया से रोकथाम की ओर परिवर्तन करे। पहले, तकनीकी बाधाओं के कारण तैयारी स्थानीय समुदायों के पारंपरिक ज्ञान तक सीमित थी जिसे अब वर्तमान पीढ़ी के नवाचार और अनुसंधान के साथ ठीक से एकीकृत करने की आवश्यकता है। आपदा तैयारी के इस तंत्र को विश्व स्तर पर लिया गया है और आपदा जोखिम न्यूनीकरण के लिए संयुक्त राष्ट्र कार्यालय जैसे संस्थान चर्चाओं और विचार-विमर्श के मंच हैं जहाँ राष्ट्रों को नागरिक समाज संगठन और स्थानीय समुदाय के सहयोग से आपदाओं के प्रभाव को कम करने के लिए तंत्र तैयार करने की आवश्यकता है।

व्यापक आम सहमति के माध्यम से, विभिन्न राष्ट्रों की सरकारों को इन चार कार्यक्षेत्रों के माध्यम से तैयारियों के विचार को आगे बढ़ाने की आवश्यकता है: पहले ट्रांसपोंडर के लिए चल रहा प्रशिक्षण, विनाश योजनाओं में सामुदायिक भागीदारी, बेहतर जोखिम मूल्यांकन, सरकार के प्रतिक्रिया समय को कम करना। सूची संपूर्ण नहीं है और विभिन्न राष्ट्रों की पारिस्थितिकी के अनुसार इसका विस्तार किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, इंडोनेशिया में उष्णकटिबंधीय चक्रवातों के प्रति उच्च भेद्यता है। तैयारियों के स्तर के अनुसार जो पहले से मौजूद है, देश को अन्य कार्यक्षेत्रों में विस्तार करने की आवश्यकता है।

इसकी पुष्टि इस तथ्य से की जा सकती है कि फिलीपींस और भारत जैसे देशों ने चक्रवातों से निपटने के लिए एक बेहतर तंत्र स्थापित किया है, जो इन क्षेत्रों में लगातार घटनाएँ होती रहती हैं। टाइफून हागुपिट जो फिलीपींस से टकराया था, मौसम का सबसे मजबूत था, लेकिन बेहतर तैयारी के उपायों के साथ मृत्यु दर में भारी कमी आई है। लगभग, 2,27,000 लोगों को तुरंत आपातकालीन आश्रयों में पहुँचाया गया। मानव संसाधन जो हर अर्थव्यवस्था के लिए सर्वोपरि है, उसपर पहले ध्यान देने की जरूरत है। पहले उत्तरदाताओं को निवारक उपाय करने, निकासी मार्गों की योजना बनाने, पहुँच में प्रशिक्षित करने की आवश्यकता है आपातकालीन आश्रयों और आपातकालीन योजनाओं के लिए उनमें से कुछ हैं।

यहाँ सरकार की भूमिका सर्वोत्कृष्ट हो जाती है। जोखिम मूल्यांकन से लेकर तैयारियों तक, पूरी प्रक्रिया को सावधानीपूर्वक नियोजित करने की आवश्यकता है। यहाँ, स्थानीय समुदाय के ज्ञान

और नागरिक समाज संगठन की भागीदारी का पूरा लाभ उठाया जा सकता है. सर्वोत्तम प्रथाओं को विश्व स्तर पर साझा करने की आवश्यकता है और दृष्टिकोण समन्वयात्मक होना चाहिए. ह्योगो फ्रेमवर्क के लिए संयुक्त राष्ट्र महासभा संकल्प द्वारा पारित कार्रवाई, लचीलापन बनाने के लिए एक एकीकृत योजना प्रदान करती है. एचएफए कार्रवाई के लिए पाँच प्राथमिकताओं की रूपरेखा तैयार करता है, और आपदा लचीलापन प्राप्त करने के लिए मार्गदर्शक सिद्धांत और व्यावहारिक साधन प्रदान करता है. इसे कई सरकारों और अंतरराष्ट्रीय एजेंसियों ने स्वीकार किया है.

विकासशील अर्थव्यवस्था जैसे भारत में तेजी से शहरीकरण हो रहा है और विकास जोरों पर है, आपदाओं की संवेदनशीलता कई गुना बढ़ जाती है. इसके शीर्ष पर, भारत की एक बहुत लंबी तटरेखा है, लगभग 7,500 किमी जो हर समय चक्रवातों के प्रति संवेदनशील रहती है. उत्तराखंड बाढ़, जम्मू-कश्मीर बाढ़, पूर्वी तट पर फैलिन और हुदहुद चक्रवात कुछ हैं, हाल के दिनों में देश ने आपदाएं देखी हैं. उड़ीसा चक्रवात और दुनिया भर में विभिन्न अन्य आपदाओं में भारी तबाही से संकेत लेते हुए, सरकार ने काफी हद तक संस्थागत तंत्र को मजबूत किया है. सरकार ने 2005 में आपदा प्रबंधन अधिनियम बनाया जो विभिन्न स्तरों पर आपदा प्रबंधन प्राधिकरण, राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण, राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण, जिला आपदा प्रबंधन प्राधिकरण और राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण की स्थापना करता है.

इसके बाद, राष्ट्रीय चक्रवात जोखिम न्यूनीकरण परियोजना को बहु-खतरा जोखिम प्रबंधन में चक्रवात पूर्वानुमान, ट्रैकिंग और चेतावनी प्रणाली और क्षमता निर्माण के उन्नयन के उद्देश्य से अनुमोदित किया गया था. इसमें कोई संदेह नहीं है, उद्देश्य पूरा हो गया है, क्योंकि राज्य तंत्र लगभग दस लाख लोगों को आपातकालीन आश्रयों में सुरक्षित निकालने में सफल रहा है, जिससे साइक्लोन फीलिन के मद्देनजर मृत्यु दर 50 से कम हो गई है. यह सब, राष्ट्रीय चक्रवात जोखिम न्यूनीकरण परियोजना के तहत संयुक्त प्रयास और समुदाय की भागीदारी के माध्यम से आपदा न्यूनीकरण और पुनर्प्राप्ति के लिए वैश्विक सुविधा के माध्यम से संभव हुआ.

वैश्विक स्तर पर, भारत सरकार - यूएनडीपी आपदा जोखिम न्यूनीकरण कार्यक्रम के तहत ज्ञान, अनुभव और संसाधनों को साझा करता रहा है. इसी तरह, जोखिम में कमी और प्रबंधन में बेहतर तैयारी के लिए समग्र रणनीति विकसित करने के लिए अन्य साझेदारी पर काम किया जा रहा है. हालांकि, यह उद्धृत किया जा सकता है कि, देश ने चक्रवातों के प्रबंधन में अच्छा प्रदर्शन किया है, नुकसान को काफी हद तक कम किया है, इसने अन्य आपदाओं, मुख्य रूप से बाढ़ से

निपटने में अच्छा प्रदर्शन नहीं किया है. बाढ़ बहुत बार-बार आती है और उचित योजना की कमी बहुत विनाशकारी मोड़ ले सकती है. उत्तराखंड और जम्मू-कश्मीर की बाढ़ में यह पहले ही देखा जा चुका है, जहां राज्य तंत्र मौजूद था आपदा की भविष्यवाणी करने में असहाय और यह केवल एनडीआरएफ और सेना थी जो आपदा के बाद पीड़ितों को राहत पहुंचाती थी.

अनियंत्रित शहरीकरण, भूकंपीय क्षेत्रों में निर्माण, तेजी से कटाव की गतिविधि ने इस क्षेत्र में गंभीर बाढ़ ला दी है. सरकार को इस प्रक्रिया को समाप्त करने के लिए कार्यप्रणाली विकसित करने की आवश्यकता है. नदियों को आपस में जोड़ने जैसी पहलों का स्वागत किया जाता है और इन्हें पूरी गति से आगे बढ़ाने की जरूरत है. ड्रेनेज सिस्टम को उचित और शहरी आवास योजनाओं के अनुरूप होना चाहिए. तैयारियों के संदर्भ में, मौसम पूर्वानुमान को मजबूत और टिकाऊ बनाए जाने की जरूरत है, विकास की पहल को प्रोत्साहित और प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है. आपदाओं की अनिश्चितता और तत्परता को ध्यान में रखते हुए, लचीलेपन को मजबूत करने के लिए तंत्र बनाने की तत्काल आवश्यकता है. बेशक सरकार इस दिशा में काम कर रही है लेकिन सामुदायिक भागीदारी की भी आवश्यकता है.

अंत में, यह विचार करने की आवश्यकता है कि आपदा न केवल वर्षों पहले घटी घटनाओं का परिणाम है बल्कि यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें बड़े आयाम शामिल हैं और यह जलवायु परिवर्तन का आयाम है. वैश्विक स्तर पर, ग्लोबल वार्मिंग को कम करने के लिए क्योटो प्रोटोकॉल, ग्रीन क्लाइमेट फंड, यूएनएफसीसीसी जैसी कई पहलों की गई हैं, लेकिन आम सहमति की कमी के कारण इस संबंध में बहुत कम काम किया गया है. आपदा जोखिम और प्रबंधन की तैयारी देखी जा सकती है, आपदा की भविष्यवाणी के बाद एक तत्काल ऑपरेशन के रूप में लेकिन यह भी समझने की जरूरत है कि हम इसकी जड़ें कहीं और अंकुरित कर रहे होंगे.

विश्व में भारत

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी , महाराष्ट्र



विश्व में भारत आर्थिक विकास का इंजन है,
जहां पारदर्शिता कारोबारी सुगमता का मेल है,
यहां वस्तुओं और सेवाओं की गुणवत्ता को,
प्राथमिकता देना अर्थव्यवस्था का खेल है.

दूरदर्शी कल्याणकारी नीतियों का मेल है,
जनसांख्यिकीय तंत्र को ताकत बनाना खेल है,
कड़ियों को सामंजस्य से जोड़ना मेल है,
सुगमता सामंजस्यता लाना यहां खेल है.

अर्थव्यवस्था को ताकतवर बनाकर,
दुनिया का विश्वास हासिल करना मेल है,
विकसित देश भारत के साथ व्यापारिक समझौते,
के लिए उत्सुक हैं जो मेहनत का खेल है.

नव संवत - नव वर्ष

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र , लखनऊ



नव संवत - नव वर्ष मनाएँ.
भारतीयता - धर्म निभाएँ.

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा दिव्य तिथि
करें प्रकृति की हम उपासना,
रचनात्मक अनुष्ठान शक्ति से
बाँटें मंगलमयी कामना,

नव उमंग से, नव तरंग से
नया हर्ष - उल्लास जगाएँ.

विक्रम संवत का पावन दिन
सृष्टि - सृजन का चिर अभिनंदन,
वासंती मौसम में खिलता
प्रकृति - देवि का मोहक नंदन,

ईस्वी सत्र बहुत पुरानी
निज गौरव - गाथा दोहराएँ.

तकनीकी, विज्ञान सँजोती
नवाचार के सुंदर सपने,
उद्यम और कला - कौशल से
लक्ष्य प्राप्त कर लेंगे अपने,

देश बने सिरमौर विश्व का
निज संस्कृति का मान बढ़ाएँ.

चिह्न दासता के छोड़ें अब
अंधे बन अनुकरण करें क्यों,
पाश्चात्य सम्मोहन में फँस
जीवन के अनुबंध भरें क्यों,

हिन्दु कालगणना वैज्ञानिक
जन - जन को महत्व समझाएँ.
नव संवत, नव वर्ष मनाएँ.

बच्चों को कितनी सुविधा दें

रचनाकार- स्नेहा सिंह, उ.प्र.



सुबह-सुबह स्कूल जाने के समय ही ऋषि और रिया में झगड़ा शुरू हो जाता. रीमा एक ओर किचन संभालती, दूसरी ओर राज और बच्चों को नाश्ता कराती. तीसरी ओर मशीन में कपड़े डालती, बर्तन सिंक में डाल कर अपना लंच पैक करती और भागते हुए अपनी नौकरी पर जाती. इसमें बच्चों का यह झगड़ा. राज कभी बच्चों के झगड़े में पड़ता ही नहीं था. रीमा कभी इस बारे में राज से कुछ कहती तो उसके पास एक ही जवाब होता था, "मुझे गुस्सा आ जाता है. मार देता हूँ तो कहती हो कि बच्चों पर हाथ नहीं उठाना चाहिए."

उस दिन भी सुबह से ही ऋषि रिया को परेशान कर रहा था. 'रिया मेरा स्कूल बैग ले आओ. रिया तुम ने मेरा लंच बाक्स क्यों नहीं रखा? रिया तुम ने अपनी वाटर बोतल भर ली, मेरी क्यों नहीं भरी?"

रिया चिढ़ जाती और मम्मी से शिकायत करती, "मम्मी, भइया को रोको न, मुझे क्यों परेशान करता है?"

बेटा तुम अपनी बोतल भरती हो तो उसी के साथ भाई की बोतल भी भर दिया करो. इस तरह झगड़ा मत किया करो. रीमा के यह कहने पर रिया तुरंत कहती, "यही बात तुम भाई से भी तो कह सकती हो. वह बड़ा है, बैग भरने में उसे मेरी मदद करनी चाहिए. उसे मेरी वाटर बोतल भर कर देनी चाहिए. हमेशा तुम मुझे ही शांत रहने और काम करने को कहती हो. भाई को तो कुछ

नहीं कहती हो. कुछ दिन पहले कामवाली नहीं आई थी तो मैंने घर में झाड़ू लगाई थी. भाई बैठा टीवी देख रहा था. घर के काम की छोड़ो, वह अपना खुद का भी काम नहीं करता. अब मैं उसका एक भी काम नहीं करने वाली."

राज ने उसे समझाते हुए कहा, "भाई का थोड़ा काम करने में इतना गुस्सा नहीं किया जाता. तुम दोनों को मिलजुल कर रहना चाहिए."

पापा, यही बात आप को भाई को भी समझानी चाहिए. इसे केवल छोटी बहन पर हुकुम चलाना आता है.

यह इतना गुस्सा क्यों कर रही है रीमा? थोड़ा सा काम करने में इतनी किचकिच? यह सब कौन सिखाता है इसे?

पापा कोई नहीं सिखाता. मैं अपनी सभी फ्रेंड्स के घरों में देखती हूँ, सभी लड़कियों को ही काम करने की सलाह देते हैं. जबकि लड़को को भी बराबर काम करना चाहिए. और प्लीज, आप भी थोड़ी मम्मी की मदद किया कीजिए. बेचारी पूरा दिन काम करती रहती हैं. इतना कह कर रिया घर से तेजी से निकल गई. पर घर का वातावरण तनावपूर्ण हो गया. राज को लगा कि रीमा यह सब सिखाती है. रीमा को लगा कि रिया की बात सच है. ऋषि भी कुछ बोले बगैर चला गया.

वैसे तो यह पूरी बात टीनएज में प्रवेश कर चुके सभी बच्चों की है. एक खास उम्र के बाद बच्चों में सोचने और अपनी मर्जी के अनुसार व्यवहार करने की लालसा तीव्र होती है. सही-गलत के निर्णय करने की समझ भी आ जाती है. ऐसी स्थिति में बच्चे थोड़ा आक्रामक हो जाते हैं. वे जिद करने लगते हैं. अपनी बात को सामने रखते हैं. पर उनकी जिद या बात बिना किसी लाॅजिक की नहीं होती. वे अपने आसपास जो देखते हैं, उसे समझते और सीखते हैं और कोई बात गलत होती है तो उसका विरोध भी करते हैं. उस समय दबाव डालने या अपनी बात जबरदस्ती मनवाने की कोशिश पर बच्चे अधिक आक्रामक हो जाते हैं. वैसे उनकी ज्यादातर बातें सच ही होती हैं और उनकी बातों के पीछे एक निश्चित वजह भी होती है.

जैसे कि रिया की बात सच थी. घर के हर आदमी को हर काम करना चाहिए. लड़का होने से किसी को काम सौंप देने या काम न करने की छूट नहीं मिल जाती. आज के जमाने में किचन का काम हो या घर का कोई अन्य काम, लड़कों को भी सीखना पड़ता है. बच्चे जब तक पढ़ते हैं, माँ-बाप उनके सारे काम कर देते हैं. उसमें लड़का हुआ तो उसे तो जैसे सारे कामों से मुक्ति मिल जाती है. मम्मी काम करते हुए थक जाती हैं, तब भी लड़के मदद के लिए नहीं आते. घर में एक

आदमी काम कर रहा हो और बाकी सब बैठे हों या आराम कर रहे हों तो बड़ा अजीब लगता है. बच्चे घर में पापा या दादा को काम करते देखें तो यह आदर्श परिस्थिति है और ऐसे घरों में लड़के अपने आप काम करने लगते हैं. परंतु जिन घरों में पुरुष यानी पापा या दादा महिलाओं की काम में मदद नहीं करते, उस घर के लड़के उन्हीं का अनुसरण करते हैं और मम्मी के साथ काम करवाने की भावना उनमें विकसित नहीं होती.

बच्चों को सुख-सुविधा देनी अच्छी बात है, पर इतनी अधिक भी नहीं देनी चाहिए कि वे आलसी हो जाएँ अथवा 'यह काम तो मम्मी का है, मेरा नहीं' यह बात उनके मन में बैठ जाए. यह परिस्थिति अनुचित है. बचपन से ही बच्चे को अपने काम करने आने चाहिए और किसी को अकेले काम करता देख कर मदद करने की आदत होनी चाहिए. ऐसा होने पर बच्चों का उचित विकास होगा और समाज का संतुलन भी नहीं बिगड़ेगा.

बाल पहेलियाँ

रचनाकार- कमलेंद्र कुमार श्रीवास्तव , उत्तर प्रदेश



1. मेरे अण्डे नीले नीले,
मधुर है मेरी तान.
सर्वभक्षी पक्षी हूँ मैं,
अंग्रेजी हिंदी एक समान.
2. काया मेरी काली काली,
कर्कश मेरे बोल.
झट बताओ मेरे बच्चों,
अपने मुंह को खोल.

3. चिड़िया हूँ मैं एक अनूठी,
पत्तो में छिप जाती.
हूँ ईरान का राष्ट्रीय पक्षी,
बोलो क्या कहलाती?

4. पक्षी हूँ मैं एक अनोखा,
मैं तो उड़ न पाऊं.
बड़ा तेज मैं धावक हूँ,
बोलो क्या कहलाऊं ?

5. काया मेरी काली काली,
मीठे मीठे बोल.
सोच बताओ निज बुद्धि का,
जल्दी ताला खोल.

उत्तर 1- मैना, 2- कौआ, 3- बुल बुल, 4- शतुरमुर्ग, 5-कोयल

डॉक्टर चूहा

रचनाकार- पेन्टर मदन , म०प्र०



डॉक्टर साब देखो जल्दी
जी मेरा अकुलाता
टर्-टर् कर मेंढक बोला
रोग समझ न आता.

भूखा हूँ मैं कई दिनों से
डर लगता है जल से
अकड़-अकड़ कर रह जाता हूँ
ऐसा होता कल से.

शीत लहर से गात हमारा
थर-थर-थर थर्राता
टर्-टर् कर मेंढक बोला
रोग समझ न आता.

चीं-चीं-चीं-चीं चूहा बोला
बात समझ में आई
पहनों मौजे कर दस्ताने
सोना ओढ़ रजाई

बाँधो मफलर स्वेटर पहनो
जाड़ा बहुत सताता
टर्-टर् कर मेंढक बोला
रोग समझ न आता.

कुंदन बनते जायेंगे

रचनाकार- हर्षलता मिश्रा (हर्षा) , रायपुर



संघर्षों की ताप झेल हम
कुंदन बनते जायेंगे.

भले समझ लो माटी हमको
हम चंदन बनते जायेंगे.

क्षणिक कष्ट आभास नहीं,
हम वंदन करते जायेंगे.

विश्लेषण कर त्रुटियों का
हम, मर्दन करते जायेंगे.

अधर हमारे चमक उठेंगे
विपदाओं का खंडन करते जायेंगे.

मेहनत का हम लिए सहारा
अभिनंदन करते जायेंगे.

पावन करके धरा भारती
जग नंदन बनते जायेंगे.

संघर्षों की ताप झेल हम
कुंदन बनते जायेंगे.

छत्तीसगढ़िया, सबले बढ़िया

रचनाकार- शांति लाल कश्यप , कोरबा



हमन छत्तीसगढ़िया, सबले बढ़िया.
हावन छत्तीसगढ़िया, सबले बढ़िया.
खाथन हमन बोरे बासी, सुनले दीदी भईया.
हमन छत्तीसगढ़िया, सबले बढ़िया.
हावन छत्तीसगढ़िया, सबले बढ़िया.

बड़े बिहनिया सुत उठ के, करे ल जाथन खेती.
गैती रापा कुदारी नांगर, तुतारी खेती के सेती.
मेहनत के बुता ले भईया, होथे सब झन सुखिया.
हमन छत्तीसगढ़िया सबले बढ़िया.

ठेठरी खुरमी रोटी बनाथन, मुठिया सोहारी चीला.
करमा गौरा हरेली कजरी, तीजा तिहार हे पोला.
लाडू मुरा खाथन भईया, दे के धान एक भुथिया.
हमन छत्तीसगढ़िया सबले बढ़िया.

छेरछेरा छेरछेरा, कोठी के धान हेरहेरा.
सबो लईका मन झोला धर के, आथे बिहान के बेरा.
डोकरा बबा दे थे भईया, सबला धान एक मुठिया.
हमन छत्तीसगढ़िया सबले बढ़िया.

नदियाँ

रचनाकार- चेतन सिंह , बलौदाबाजार-भाटापारा



कल - कल, कल - कल करती नदियाँ.
हर - क्षण, हर - पल बहती नदियाँ.

जीवों की प्यास बुझाती है.
खेतों को सींचती जाती है.
पथिकों को राह दिखाए,
धरा की तपन मिटाती है.
हर पल यह बढ़ती जाती,
स्थिर न कभी रहती नदियाँ.
कल - कल, कल - कल करती नदियाँ.
हर - क्षण, हर - पल बहती नदियाँ.

राह हो चाहे कांटों भरे.
चट्टान हो चाहे राह में खड़े.
इनसे न यह घबराती है,
अड़चन हो चाहे जितने बड़े.
थमती है न इनसे डरकर,
हर दर्द को सहती नदियाँ.
कल - कल, कल - कल करती नदियाँ.
हर - क्षण, हर - पल बहती नदियाँ.

तुम्हें अगर मंजिल है पाना.
हर - दम तुम बढ़ते जाना.
तुम्हारी राह न कोई रोक पाएंगे,
औरों को भी तुम राह दिखाना.
न घबराना मुश्किलों में कभी,
सबसे यही कहती नदियाँ.
कल - कल, कल - कल करती नदियाँ.
हर - क्षण, हर - पल बहती नदियाँ.

ईमानदारी व्यक्तित्व जीवन का आधार

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी , महाराष्ट्र



सृष्टि में मानव को बौद्धिक क्षमता के रूप में ऐसा अनमोल उपहार मिला है जिससे अन्य 84 लाख योनियों के प्राणी वंचित हैं.

मानव जन्म के बाद अपने परिवार मोहल्ले समाज के माहौल में अपना बचपन बिताता है तब उसे बड़े बुजुर्ग ईश्वर का रूप मानते हैं. सर्वविदित है कि बच्चे झूठ, फरेब, बेईमानी इत्यादि अवगुणों से दूर अपना बचपन व्यतीत करते हैं. पर जब वे बचपन से निकलते हैं तब उन्हें आकर्षित करने वाली अनेक चीजों में से एक धन है. यहीं से प्रकृति द्वारा दी गई अनमोल बौद्धिक क्षमता पर भ्रष्टाचार और लालच की नकारात्मक सोच हमला करती है. जिसने ईमानदारी और आत्म सम्मान के अस्त्र से इन अवगुणों को काट दिया उसका संपूर्ण जीवन सफल हो जाता है और जो इन अवगुणों के घेरे में आ गया वह परिवार सहित दुखों का भागीदार बन जाता है जिसका मूल कारण गलत स्रोतों से कमाया गया धन है.

गलत स्रोतों से कमाए गए धन के बारे में एक श्लोक है.

अन्यायोपार्जितं वित्तं दस वर्षाणि तिष्ठति.
प्राप्ते चैकादशे वर्षे समूलं तद् विनश्यति..

आचार्य चाणक्य इस श्लोक में कहते हैं कि गलत तरीकों से कमाया गया धन 10 साल तक ही रहता है, इसके बाद 11वें वर्ष से ही ऐसा धन धीरे-धीरे नष्ट होने लगता है, इसलिए व्यक्ति को कभी भी अनैतिक तरीके से धन नहीं कमाना चाहिए क्योंकि उसे बुरे कर्मों का फल भी झेलना होगा. कुछ समय बाद ऐसा धन नष्ट हो जाता है, फिर चाहे वजह कोई दुर्घटना, बीमारी, नुकसान या अन्य कारण हो. बेहतर होगा कि ईमानदारी से पैसा कमाएँ और उसका एक हिस्सा दान में दें, इससे आपके घर में हमेशा खुशहाली रहेगी और आप दिन-दूनी रात-चौगुनी तरक्की करेंगे.

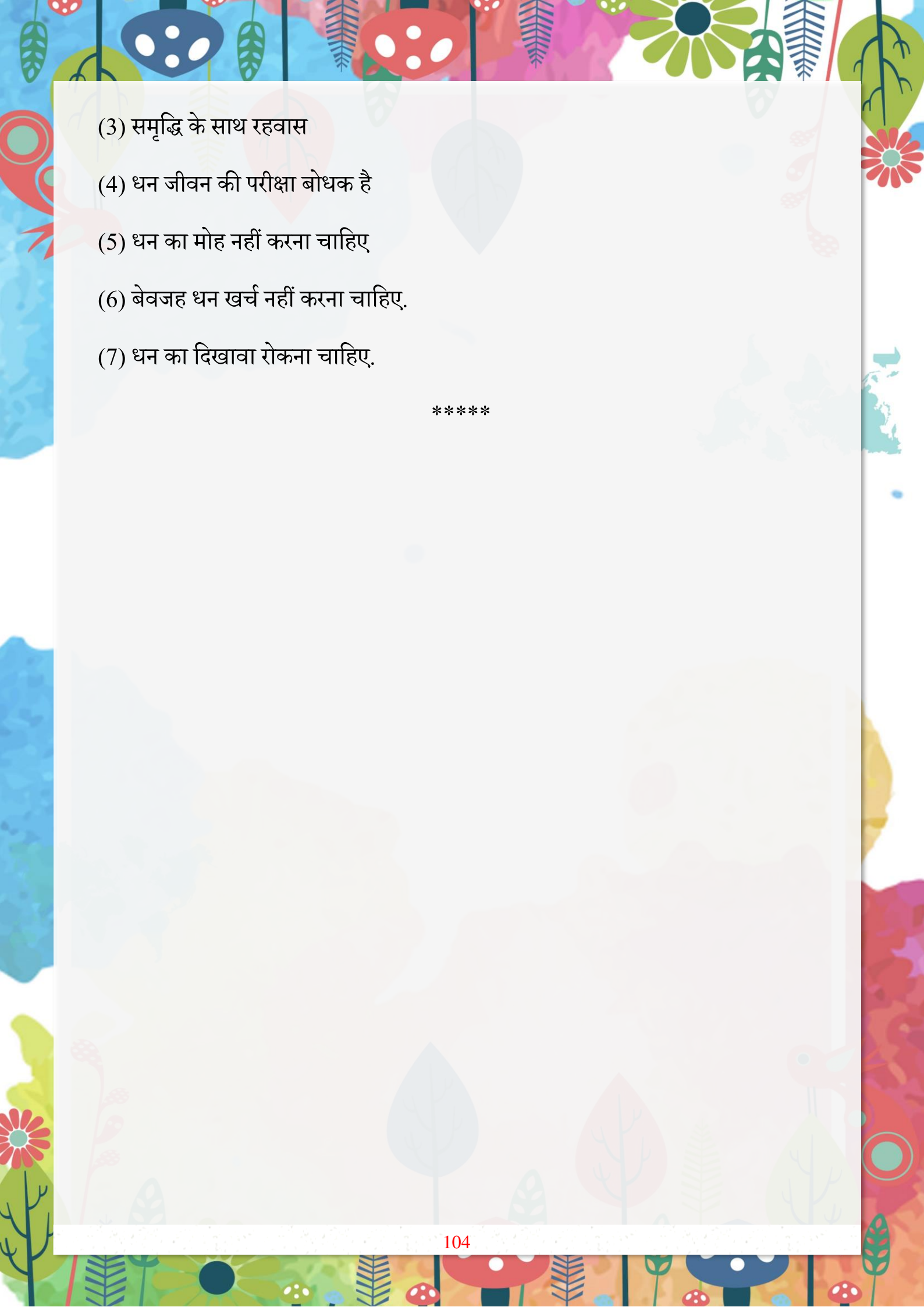
चाणक्य नीति के अनुसार पापकर्म द्वारा या किसी को कष्ट और क्लेश पहुँचाकर कमाया पैसा अभिशापित होकर मनुष्य का नाश कर देता है. इस धन के प्रभाव से सज्जन पुरुष भी पाप की ओर बढ़ने लगते हैं. इसलिए ऐसे पैसाओं से बचना चाहिए, वरना जल्दी ही कुल सहित उस इंसान का नाश हो जाता है. आचार्य चाणक्य बताते हैं कि ऐसा धन दस साल से ज्यादा नहीं टिक पाता. उसके बाद बीमारी या नुकसान होकर ऐसा पैसा चला जाता है.

हम भ्रष्टाचार जैसे गलत स्रोतों से कमाए गए धन के अनेक दुखद नकारात्मक परिणामों के बारे में पढ़ते सुनते रहते हैं. जो भ्रष्टाचार करता है वह जीवन में कभी सुखी नहीं रहता उसके परिवार में संकटों का पहाड़ किसी न किसी रूप में गिरता ही रहता है और सबसे बड़ी बात, कि लक्ष्मी चंचल होती है, यदि गलत तरीकों से धन कमाया गया तो लक्ष्मी नाराज होकर चली जाती है, अनैतिक तरीकों से चोरी, धोखे, अन्याय, जुआ आदि के जरिए कमाया गया धन हमेशा साथ नहीं रहता है.

धन कमाने से कहीं ज्यादा मुश्किल काम होता है धन को बचाकर रखना. कुछ लोग कम पैसे कमाने के बाद भी अपने लिए अच्छा खासा धन जोड़कर रख लेते हैं वहीं कुछ लोग बहुत पैसा कमाने के बाद भी ऐसा नहीं कर पाते. आचार्य चाणक्य ने अपनी नीतियों में धन से जुड़ी कई बातें बताई हैं. जिन्हें अपनाकर हम अपने धन को नष्ट होने से बचा सकते हैं. इन नीतियों से धन को इस्तेमाल करने का सही तरीका जाना जा सकता है. साथ ही इस बात की भी जानकारी मिल जाती है कि हम कैसे पैसों की बचत कर सकते हैं.

चाणक्य नीति के अनुसार कुछ महत्वपूर्ण सूत्र इस प्रकार हैं

- (1) धन की बचत करना
- (2) धन का सकारात्मक सम्मान

- 
- A decorative border with various colorful floral and leaf patterns surrounds the central text area. The patterns include stylized flowers, leaves, and abstract shapes in shades of blue, green, red, and yellow.
- (3) समृद्धि के साथ रहवास
 - (4) धन जीवन की परीक्षा बोधक है
 - (5) धन का मोह नहीं करना चाहिए
 - (6) बेवजह धन खर्च नहीं करना चाहिए.
 - (7) धन का दिखावा रोकना चाहिए.

गौरैया

रचनाकार- चेतन सिंह , बलौदाबाजार-भाटापारा

मुंडेर पर आती नहीं..... गौरैया आजकल.
छत पर बिखरे दाने खाती नहीं गौरैया आजकल.

घर - आंगन में पहले फुदकती-चहकती रहती थी,
पास में कहीं अब मंडराती नहीं गौरैया आजकल.

चूं - चूं की आवाज उसकी बड़ी मोहक लगती थी,
लोगों को अब क्यों सुहाती नहीं गौरैया आजकल.

संग - संग हम बचपन में खेला करते थे,
मन को अब बहलाती नहीं गौरैया आजकल.

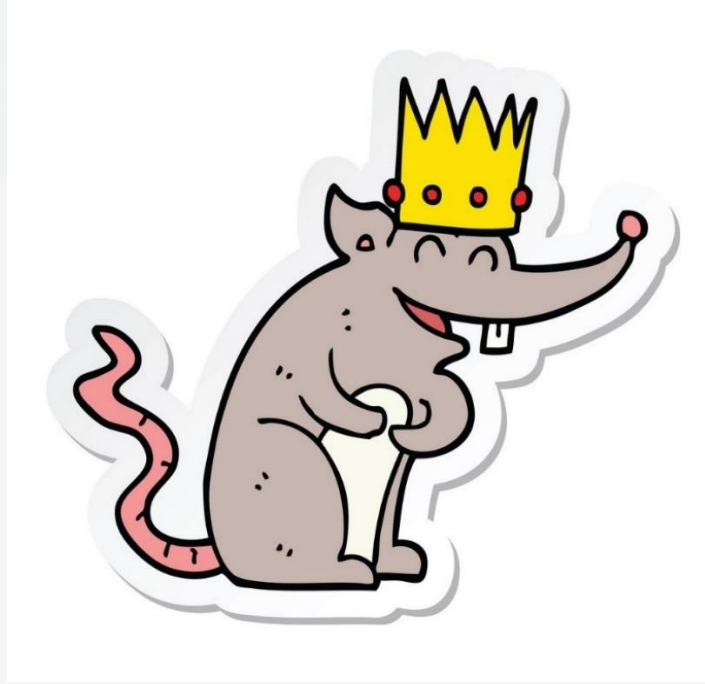
घर के किसी कोने में घर अपना बना लेती थी,
एक तिनका भी अब लाती नहीं गौरैया आजकल.

इंसानों का निवाला न बन जाए इस भय से,
गांव - शहर तक आती नहीं गौरैया आजकल.



चूहा राजा

रचनाकार- कुमुद कुमार , उ प्र



चूहा राजा, लेकर छाता
मस्ती में वह गाना गाता

बारिश के सँग आंधी आयी
छाते सँग चूहा उड़ गया भाई

पैराशूट बन गया छाता
हमें बचाओ भाग्य विधाता.

हवा की गति हो गई मन्द
गिरा धरती पर चूहा धम.

गज्जी हथिनी और मेंमें बकरी

रचनाकार- रजनी शर्मा , रायपुर



आज मेंमें बकरी अपने बच्चों के लिए पत्तियां ढूंढ रही थी. हल्की सी गर्मी बढ़ गई थी. पीठ भी जल रहा थी. बदन तप रहा था. पर करें तो क्या करें? बच्चों के लिए भोजन तो चाहिए ही ना! जंगल के भीतर बारिश बंद होने के कारण झाड़ियां कम ही दिख रही थीं. बाकी पेड़ों पर ऊंची ऊंची शाखाओं पर पत्तियां लगी थी. वह करेंभी तो क्या करे? सुरक्षित जगह जहां बच्चों को ला सकें यह ढूंढना भी तो जरूरी था ना ! उधर गज्जी हथिनी भी अपने बच्चे के लिए हरे पत्तों की तलाश में जुटी हुई थी.

इधर देखा उधर देखा! कोई सुरक्षित जगह मिले तभी तो ना बात बने. तभी तो वह अपने हाथियों के दल को चिंघाड़ लगा -लगा कर बुला सकती है.

धूप चढ़ आई थी. सही जगह की तलाश में दोनों ही बढ़ते गए. अपनी राह में बकरी अपनी राह गज्जी हथिनी. उन्हें पता ही नहीं चला. जब उन्होंने सामने नजर घुमाई तो उनके होश उड़ गए ! वे तो अगल-बगल चट्टान के ऊपरी छोर में अनायास ही आ पहुंचे थे. नीचे खाई.... भूख के मारे बुरा हाल. दोनों ने एक दूसरे की हालत देखी. मेमे बकरी ने पूछा. तुमने कोई हरियाली वाली जगह देखी क्या ? गज्जी हथिनी ने कहा हां. वहां थोड़ी दूर पर एक जगह है. जहां छोटी-छोटी झाड़ियां हैं. मेंमें बकरी ने कहा मुझे भी एक जगह का पता चला है जहां तुम्हारे दल के लिए बहुत सी हरी पत्तियों वाली नरम नरम शाखाएं हैं, घनी छांव है , पत्तेदार जंगल है. पर अब क्या होगा? कैसे होगा?

बेचारी मेंमें बकरी रोने लगी. दोनों चट्टानों के बीच खाई कैसे पार करें? जरा सी चूक हुई और जान गई.

गज्जी हथिनी का भी यही हाल था. दोनों ने सोच विचार किया. गज्जी हथिनी ने कहा तुम मेरे सूंड को जोर से अपने पैरों के नीचे दबोच लेना. जब मैं लंबी करूं लपक कर पकड़ लेना. मेंमें बकरी और गज्जी हथिनी ने ईश्वर को याद किया. और जैसे ही उसने सूंड लंबी की मेंमें बकरी ने सूंड को पकड़ा, चिपक गई. धड़ से गज्जी हथिनी ने अपनी सूंड खींची और अपने पीठ की ओर उछाल दिया. मेंमें बकरी गज्जी हथिनी के पीठ पर बैठ चुकी थी.

गज्जी हथिनी धीरे-धीरे पीछे सरकने लगी. वापसी में रास्ता दिखा

मेंमें बकरी खुशी से उछल पड़ी! यही वह जगह है जहां तुम्हारे बच्चे, दिलों को भोजन मिलेगा.

गज्जी हथिनी ने भी बकरी को वापसी पर वह झाड़ियों वाली जगह दिखा दी. दोनों ने ईश्वर को धन्यवाद दिया.

समस्याएं कितनी भी विकराल हों, उनका समाधान अवश्य रहता है

बस जरा सी साहस धीरज व सहयोग की भावना हो तो दुर्गम चट्टानों को भी पार किया जा सकता है.

निपुण भारत मिशन

रचनाकार- शांति लाल कश्यप ,कोरबा



आये हे, आये हे निपुण भारत मिशन.

शिक्षा नीति लाये हे,

मूलभूत साक्षरता और संख्या ज्ञान, भईया और संख्या ज्ञान.
पाहीं सब लईका जी हो जाहीं सब सुजान, निपुण भारत मिशन.
शिक्षा नीति लाये हे, निपुण भारत मिशन.

खेलकूद गतिविधि संग पढ़ावव पाठ, भईया संग पढ़ावव पाठ.
डिकोडिंग कहानी कविता सुरुआत, निपुण भारत मिशन.
शिक्षा नीति लाये हे, निपुण भारत मिशन.

आये हे, आये हे निपुण भारत मिशन.
शिक्षा नीति लाये हे, निपुण भारत मिशन.

करूँगी नखरे

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र , लखनऊ



मैं बच्ची हूँ, करूँगी नखरे.

चीखूँगी, चिल्लाऊँगी
लेट फर्श पर जाऊँगी
गुस्से से मुँह मेरा लाल
मैं अपने नोचूँगी बाल

जिद अपनी मनवा ही लूँगी
मेरी आदत क्यों अखरे.

'दूध पियो' माँ कहती है
बकझक करती रहती है
मुझको बिल्कुल भूख नहीं
देर से दीदी गई कहीं

बाहर कोई न ले जाता है
फिर छुटकी ही क्यों सुधरे.

माँ न खिलौने देती है
गोदी मुझे न लेती है
मैं देखूँगी तितली - फूल
जाकर बाग उड़ाऊँ धूल

मन करता है दौड़ूँ - भागूँ
चिड़ियों - सी बोली निखरे.

प्रतिदिन विद्यालय जाती
देर शाम वापस आती
समय नहीं बाहर खेलूँ
होमवर्क का दुख झेलूँ

बनी हुई सिरदर्द पढ़ाई
सपने मेरे हैं अधकचरे.
मैं बच्ची हूँ, करूँगी नखरे.

मेरा विद्यालय

रचनाकार- गरिमा बरेठ ,बिलासपुर



यह मेरा विद्यालय है,
शिक्षा का उत्तम आलय है.
नया-नया स्कूल खुला है,
चलो पढ़ाई करने को.
छोड़ो झगड़ा वक्त पड़ा है,
बहुत लड़ाई करने को.
क,ख,ग, से क्ष,त्र,ज्ञ तक?
जल्दी-जल्दी पढ़ना है.
ए-बी-सी-डी पढ़ कर हमको,
सबसे आगे बढ़ना है.
मैडम हमको पाठ पढ़ाती,
नई-नई बातें सिखाती.
स्कूल ने मेरा ज्ञान बढ़ाकर,
मेरा जीवन दिया संवार.
पढ़ते यहां हम सब बच्चे,
नियम रीति के हम सब सच्चे.

गणित यहां समझाई जाती है,
इंग्लिश यहां सिखाई जाती है.
कला यहां सिखाई जाती,
हिंदी यहां पढ़ाई जाती है.
शिक्षक सभी यहां गुड़ी विद्वान,
देते विद्या का नित दान.
भाई-चारे की शिक्षा देते,
देशभक्ति का पाठ पढ़ाते.
यहां अनुभवी है सब शिक्षक,
मानवता के जो है संरक्षक .
खेलकूद में सबसे अच्छे,
हमारे विद्यालय के बच्चे.
हमारी प्राचार्य सबसे अच्छी,
कर्तव्य पालन में सीधी सच्ची.
वे करती सब की देखभाल,
उन्हें अनुशासन का है ख्याल.
यह शिक्षा का उत्तम आलय है,
यह हमारा विद्यालय है.

मेरे अकेलेपन की साथी हो

रचनाकार- ईशा सेन 'आस्मां', कक्षा 11 वीं, शास.उच्चतर माध्य. विद्यालय करेली
बड़ी



तुम मेरे साथ हंसती हो,
तुम मेरे साथ रोती हो,
और मुझसे ही नज़रें मिलाती हो,
सिर्फ तुम ही मेरे अकेलेपन की साथी हो,

तुम पर ही गुस्सा करती हूँ,
तुम पर ही प्यार जताती हूँ,
खुद से बातें करने के बहाने मैं तुम्हें सारी बातें बताती हूँ,
मैं सिर्फ तुम्हें ही अपने अकेलेपन की साथी बताती हूँ,

तुम मुझे सब से लड़ना सिखाती हो,
तुम मुझे मेरे डर को दूर भगाना सिखाती हो,
तुम मेरे साथ मेरी जुड़वा भी बन जाती हो,
सिर्फ तुम ही मेरे अकेलेपन की साथी हो,

तुम मुझे और खुद को गुरु बनाती हो,
तुम मुझे और खुद को शिष्य बनाती हो,
तुम मुझे अच्छाई की पाठ पढ़ाती हो,
सिर्फ तुम ही मेरे अकेलेपन की साथी हो,

तुम मुझे प्रोत्साहन दिलाती हो, तुम मुझे मेरी खुबसूरती दिखाती हो,
तुम ही मुझे मेरी काबिलियत बताती हो,
सब के लिए, तुम आईना हो सकती हो,
लेकिन मेरे लिए सिर्फ तुम ही मेरे अकेलेपन की साथी हो.

दोस्त की मदद

रचनाकार- संतोष कुमार कौशिक, मुंगेली



शहर के कुछ ही दूर में एक बहुत बड़ा जंगल था. वहाँ अनेक प्रकार के जीव जंतु रहते थे. जहाँ भालू, खरगोश, लोमड़ी एवं चूहा सभी जानवरों से अलग रहते थे. चारों में एक दूसरे के प्रति अटूट प्रेम था. वे सब जहाँ भी जाते, चारों एक साथ रहते और मौज मस्ती करते थे. चारों दोस्त में से चूहा नटखट एवं चंचल प्रवृत्ति का था.

उस जंगल में हर वर्ष की तरह, इस वर्ष भी मानव जाति ने नए वर्ष में पिकनिक मनाने आए हुए लोगों को सभी ने देखा. उनके द्वारा खेल खेलना, पेड़ से कूदना, झूला झूलना, पेड़ पर चढ़ना, तालाब में तैरना, रखे हुए खाद्य सामग्री को एक साथ बैठकर मौज-मस्ती करते हुए खाना आदि गतिविधियों को देखकर चारों साथी खुश थे. उसे देखकर उन लोगों को भी इच्छा हुई कि हम लोग भी इन्हीं लोगों की तरह कल पास के दूसरे जंगल में जाकर पिकनिक मनाएंगे.

अगले दिन प्रातः सभी ने अपनी सुविधा अनुसार खाने-पीने की चीजें, खेलने की सामग्री एवं अन्य जरूरी वस्तुएं की व्यवस्था कर पास के जंगल में चले गए. चूकि चूहा बहुत ही नटखट एवं शैतान था. इस कारण भालू, खरगोश और लोमड़ी ने चूहा को समझाया कि नए स्थान पर जा रहे हैं. वहाँ इस जंगल की भांति ज्यादा शैतानी नहीं करना है. उन्होंने हाँ कहते हुए खेलना-कूदना प्रारंभ कर दिया. सभी साथी ने भी अपने-अपने इच्छा अनुसार खेल खेलते हुए मौज मस्ती किया और पिकनिक का आनंद उठाया.

कुछ क्षण पश्चात देखा कि चूहा गायब है.सभी ने चारों ओर उसे ढूँढने की कोशिश किया पर वह कहीं नजर नहीं आया. अचानक सभी ने पेड़ के ऊपर को देखा -ये क्या? पास में ही एक छोटा सा तालाब था जिसके किनारे पेड़ पर चढ़कर चूहा उस तालाब में छलांग लगा दिया. सभी ने दौड़ते हुए तालाब के पास गया. वहाँ देखा कि चूहा पानी में जाते ही डर गया, उसे तैरना नहीं आता था.उन्होंने बचाओ-बचाओ की आवाज लगाया.तालाब छोटा था लेकिन बहुत ही गहरा होने के कारण किसी का हिम्मत नहीं हुआ कि उसे निकाल सके.तभी लोमड़ी ने अपने दोस्त चूहा की मदद करने के लिए उपाय सोचा.उसकी चलाकी काम आई.पास में ही एक छड़ी था उसे तालाब में फेंककर,चूहा को पकड़ने कहा और धीरे-धीरे उस छड़ी को लोमड़ी और खरगोश ने खींचा. चूहा बाहर आकर वह जोर-जोर से रोते हुए कहने लगा.अगर आप लोग मुझे नहीं निकालते तो मेरी मृत्यु निश्चित था. मैंने सोचा कि मानव जाति के लोग पिकनिक मनाने आते हैं.उनके बच्चे भी ऐसे ही पेड़ पर चढ़कर छलांग लगाते हैं.यही सोच कर मैं भी उसका नकल किया. आप सब मुझे क्षमा कर दो.आप लोगों के मना करने के बाद भी मैंने शैतानी किया.

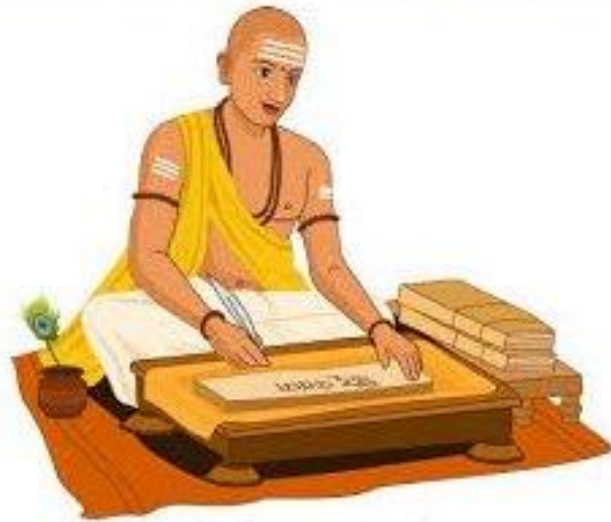
तभी उसके साथी भालू ने कहा-"चूहा भाई,हमें दूसरे की नकल सोच समझकर करनी चाहिए.अच्छी चीजों की नकल करें.जहाँ हमारे जान को खतरा है,वहाँ किसी की नकल नहीं करनी चाहिए.कहीं भी अनजाने जगह पर जा रहे हैं तो जगह के बारे में अच्छी तरह से जानकारी प्राप्त कर लेनी चाहिए.ताकि कोई दुर्घटना की स्थिति ना रहे.चारों साथी भगवान की शुक्रिया करते हुए,लाए हुए फल को एक साथ बैठकर खाते हैं.तत्पश्चात वह अपने जंगल में चले जाते हैं.

बच्चों इस कहानी से हमने समझा कि चूहा की तरह ज्यादा शैतानी नहीं करना चाहिए और ना ही दूसरों का नकल करना चाहिए.समाचार के माध्यम से आप सब लोगों को जानकारी प्राप्त होता होगा कि पिकनिक मनाने गए बच्चे बांध या तालाब में डूब गया और उसकी मृत्यु हो गई.ऐसा इस कारण होता है कि हमें तैरना आता नहीं और ना ही उस जगह के बारे में पूरी जानकारी होती है.जिसके कारण इस प्रकार की दुर्घटना आए दिन होती रहती है. हम कहीं भी पिकनिक में जाते हैं तो हमें अपने पालक या शिक्षक के निर्देशन में ही कार्य करना चाहिए. साथ ही इस कहानी से हमें जानकारी प्राप्त होती है कि लोमड़ी और खरगोश की तरह विपत्ति आने पर अपने दोस्त की मदद करनी चाहिए.

जैसी करनी वैसी भरनी

रचनाकार- संतोष कुमार कौशिक, मुंगेली

जैसी करनी वैसी भरनी



एक बार की बात है. किसी जंगल में एक हाथी रहता था. उसे अपने शरीर और अपनी ताकत का बहुत घमंड था. उसे रास्ते में जो भी जानवर मिलता, वो उसे परेशान करता और डरा कर भगा देता.

एक दिन वह कहीं जा रहा था. रास्ते में उसने एक पेड़ पर एक तोते को बैठा देखा और उससे अपने सामने झुकने के लिए बोला.

तोते ने झुकने से मना कर दिया, तो गुस्से में आकर हाथी ने वो पेड़ ही उखाड़ दिया, जिस पर तोता बैठा था. तोता उड़ गया और हाथी उसे देख कर हंसने लगा.

फिर एक दिन हाथी नदी के किनारे पानी पीने के लिए गया. वहीं पर चींटियों का छोटा-सा घर था. एक चींटी बड़ी मेहनत से अपने लिए खाना इकट्ठा कर रही थी. यह देख हाथी ने पूछा कि तुम क्या कर रही हो, तो चींटी ने कहा कि बरसात का मौसम आने से पहले अपने लिए भोजन जमा कर रहीं हूं, ताकि बारिश का मौसम बिना किसी परेशानी से निकल जाए. यह सुन कर हाथी के मन में शरारत सूझी और उसने अपनी सूंड में पानी भर कर चींटी के ऊपर डाल दिया.

पानी से चींटी का भोजन खराब हो गया और वो पूरी भीग गई.

चींटी ठंड से कांपने लगी. उसके घर को अपने पैरों से मसलते हुए हाथी आगे निकल गया.उसके इस हाल को देखकर पेड़ पर बैठे हुए तोते उसके पास आकर कहा-" चींटी बहन,यह हाथी को अपनी ताकत का बहुत घमंड है.जंगल में रहने वाले सभी जानवर को परेशान करता है.हम सबको मिलकर इसको सबक सिखाने का तरकीब निकालना चाहिए." तब चींटी ने कहा-" तुम ठीक कहते हो तोता भाई, मेरे पास इसको सबक सिखाने के लिए एक तरीका है.पास में ही एक कुआं है.इसे टहनियों एवं पत्तों से ढंक देते हैं. हाथी रोज इसी रास्ते से नदी में पानी पीने आता है.वह मेरा घर समझकर तोड़ने की कोशिश करेगा और वह कुआं में निश्चित ही गिर जाएगा. हम अपने इस कार्य में सफल हो जाएंगे."

योजना अनुसार तोते अपनी चोंच से टहनियों एवं पत्तों से कुएं को ढकता है और चींटियाँ कुएं के चारों ओर मिट्टी इकट्ठा कर अपना घर जैसा स्वरूप देता है.

अगले दिन रोज की तरह हाथी नदी में पानी पीने के लिए आता है.रास्ते में बने हुए कुएं पर बने हुए चींटी के घर को देखकर गुस्सा से हाथी चींटी को कहता है- चींटी!तुमने अच्छा नहीं किया मेरे आने-जाने के रास्ते पर घर बनाकर मुझसे दुश्मनी किया है.मैं तुम्हारे घर को अभी अपने पैरों से कुचल देता हूँ.जैसे ही घर को पैरों से दबाता है वैसे ही हाथी धड़ाम से कुआं में गिर जाता है.हाथी को क्रोध के आवेश में आकर उसे यह भी पता नहीं रहता कि उस रास्ते में वहाँ पर कुआं था.जैसे ही हाथी कुआं में गिरता है तब उसे होस आता है कि यहां कुआं था.वह अपने मन ही मन सोचता है-मुझे अपने शरीर और अपनी ताकत का बहुत घमंड था.जिसकी वजह से मुझे अपने कर्म का फल भोगना पड़ा. हाथी समझ जाता है कि यह कार्य चींटी और तोते ने मुझे सबक सिखाने के लिए किया है. उन्होंने अपने किए कार्य पर शर्मिंदा होते हैं.चींटी और तोते से क्षमा मांगता है और निकालने के लिए उससे प्रार्थना करता है.तोते और चींटी को उन पर दया आ जाती है.कुआं के पास बैठकर तोता आने जाने वाले राहगीरों को देखकर जोर-जोर से आवाज करता है.उसकी आवाज को सुनकर राहगीर वहाँ पहुँच जाते हैं. राहगीर कुएं में गिरे हुए हाथी को देखकर उसे बाहर निकालते हैं.

हाथी अपने किए पर शर्मिंदा होते हैं और जंगल में रहने वाले सभी जानवर से क्षमा मांगते हैं.उसको सभी लोग क्षमा कर देते हैं. अब जंगल में रहने वाले सभी जानवर एक परिवार की तरह खुशी-खुशी से जीवन व्यतीत करते हैं.

बच्चों हमने इस कहानी के माध्यम से समझा कि हाथी की तरह किसी को भी कमजोर या छोटा नहीं समझना चाहिए और चींटी और तोते की तरह मिलकर कार्य करने से बड़ा से बड़ा कार्य भी पूरा हो जाता है.यदि किसी से जाने अनजाने में गलती हो जाती है तो उसे एक बार सुधरने का अवसर जरूर देना चाहिए.

फिर आ गई होली

रचनाकार- बद्री प्रसाद वर्मा अनजान



यीशु और ओम आज बहुत खुश थे. उनके पापा ने कह दिया कि इस साल हम सब जी भर के होली मनाएंगे. यीशु और ओम के लिए बाजार से बंदूक वाली पिचकारी और रंग अवीर गुलाल सब खरीद कर देंगे. कोरोना के कारण दो साल से होली नहीं मना पाए थे.

पापा की बात सुनकर यीशु और ओम बहुत खुश हुए. तभी यीशु बोल पड़ा इस साल हम अपने मोहल्ले के सभी दोस्तों के साथ मिल कर खूब एक दूसरे को रंग लगाएंगे.

मैं तो होली पर अपने मित्रों के गालों पर रंग पोत कर सबको बंदर बनाऊंगा. ओम बोल पड़ा.

होली मनाने की तैयारी में यीशु और ओम जुट गए.

ओम ने कागज की टोपी बनाने लगा तो यीशु जोकर वाला कागज का चेहरा बनाने लगा. घर में एक सप्ताह से होली मनाने की तैयारी शुरू हो गई. होली के एक दिन पहले यीशु के मम्मी पापा यीशु और ओम को साथ ले कर बाजार सामान खरीदने के लिए चल दिए.

बाजार में चारो तरफ खूब चहल पहल मची हुई थी. हर तरफ होली के सामान बिक रहे थे.

यीशु के पापा यीशु और ओम को साथ ले कर एक पिचकारी की दूकान पर जा पहुंचे और यीशु और ओम से बोले तुमको जो भी पिचकारी और रंग पसंद हो उसे निकाल लो.

दुकान पर बहुत तरह के पिचकारी बिक रहा था. कोई बंदूक वाला पिचकारी ले रहा तो कोई खिलौना वाला पिचकारी ले रहा था तो कोई बंदर शेर जोकर वाली पिचकारी खरीद रहा था.

काफी देर के बाद यीशु बोला मैं तो सिलेन्डर वाली पिचकारी लूंगा. तभी ओम बोल पड़ा मैं तो बंदूक वाला पिचकारी लुंगा.

पापा दोनों को उनकी पसंद की पिचकारी रंग अबीर गुलाल दिला कर आगे किराने की दुकान की ओर चल पड़े.

वहां खाने की सभी सामान ले कर वापस घर आ गए.

अगले दिन होली पर यीशु और ओम अपना अपना पिचकारी और रंग ले कर मोहल्ले के सभी दोस्तों के साथ होली खेलने लगे.

यीशु ने बहुत सारे बच्चों को खूब रंग लगाया और अवीर गुलाल भी लगाया तो ओम ने भी अपने दोस्तों पर अपनी बंदूक से खूब रंग डाल कर लाल हरा नीला कर दिया. सभी बच्चे सुबह से शाम चार बजे तक होली का रंग खेलते रहे.

तभी ओम और यीशु के पापा ने आ कर कहा चलो अब होली खेलना बंद करो नहा धो कर तैयार हो जाओ हमें मंदिर भी चलना है.

यीशु और ओम अपने पापा के साथ घर आ कर सीधे नहान घर में घुस कर नहाने लगे.

शाम को यीशु और ओम अपने मम्मी पापा के साथ मंदिर जाने को तैयार हो गए.

रात को ओम और यीशु ने अपने मम्मी पापा के साथ बैठ कर घर में बना गुझिया मालपुआ और खीड़पुड़ी, पनीर और मिठाई खाने में जुट गए.

इस साल सबने जी भर के होली मनाई. और एक दूसरे को जी भर के रंग लगाए. सभी ने होली की जी भर की बधाई भी अपने दोस्तों को फोन पर दी.

जग में ऊंचा नाम कर

रचनाकार- चेतन सिंह, बलौदाबाजार



सुबह हो गई, अब न और, आराम कर.
उठ, बिस्तर छोड़, बड़ों को प्रणाम कर.
दांत साफ कर, मुंह धो और कर स्नान,
नित्य कर्म अपना, शीघ्र तू, तमाम कर.

राजू चल, मोहन चल, माला चल.
नाश्ता कर, बैग पकड़, शाला चल.
प्रार्थना कर, कक्षा जा, पुस्तक पढ़,
पाठ में, मन लगा, मत हो विकल.
बजी घंटी, हुई छुट्टी, अब घर जा,
खेल कर आ, गृह कार्य पूरा, शाम कर.

टी.वी. - मोबाइल से, ध्यान हटा.
मां संग, घर काम में, हाथ बंटा.
सहपरिवार, बैठ कर, खाना - खा,
हुई रात, स्वयं अपना बिस्तर लगा.

माता - पिता, ईश्वर की, कर स्तुति,
निंदिया रानी, बुला रही, अब विश्राम कर.

पसीना बहा, परिश्रम कर, काम कर.
पर हित, निः स्वार्थ, निष्काम कर.
अपनी शक्ति, अपने हुनर को पहचान,
जग में ऊंचा, मातृभूमि का, नाम कर.
कवि बन, लेखक बन, वैज्ञानिक बन,
सैनिक बन, सीमा पर, तिरंगे को सलाम कर.

मुखौटे

रचनाकार- मानसी निषाद, सातवीं, स्वामी आत्मानंद शेख गणकार अंग्रेजी माध्यम
तारबाहर



चेहरे मुखौटे हैं, मुखौटे ही तो चेहरे हैं
अंदर का राम जला दिया,
कैसे उल्टे पड़े दशहरे है.
अपनी ही आवाज सुन ना पाये,
हम पूर्ण रूप से बहरे हैं.
मन की नदी उफान पा ना सकी,
हम दिखते कितने गहरे हैं.
ये मुखौटे कोई उतार ना दे,
लगा दिया लाखों पहे है.
चेहरे मुखौटे हैं, मुखौटे ही चेहरे हैं

एक नया भारत बनाना है

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी, महाराष्ट्र



इंसानियत को जाहिर कर
स्वार्थ को मिटाना है
बस यह बातें दिल में धर
एक नया भारत बनाना है

सरकार कानून सब साथ देंगे
बस हमें कदम बढ़ाना है
हम जनता सबके मालिक हैं
यह करके दिखाना है

एकता अखंडता भाईचारा दिखाना है
यह जरूर होगा पर
इसकी पहली सीढ़ी

अपराध को हृदय से निकालना है

कलयुग से अब सतयुग हो
ऐसी चाहना है
हम सब एक हो ऐसा ठाने
तो ऐसा युग जरूर आना है-3

पूरी तरह अपराध मुक्त भारत बने
ऐसी चाहना है
भारत फिर सोने की चिड़िया हो
ऐसी भावना है

सबसे पहले खुद को
इस सोच में ढालना है
फिर दूसरों को प्रेरित कर
जिम्मेदारी उठाना है

ठान ले अगर मन में
फिर सब कुछ वैसा ही होना है
हर नागरिक को परिवार समझ
दुख दर्द में हाथ बांटना है

इस सोच में सफल हों
यह जवाबदारी उठाना है
मन में संकल्प कर
इस दिशा में कदम बढ़ाना है

पूरी तरह अपराध मुक्त भारत बने
ऐसी चाह जगाना है
भारत फिर सोने की चिड़िया हो
ऐसी भावना लाना है.

गमला टूट गया

रचनाकार- कुमुद कुमार, बिजनौर



मेज पर रखा था एक सुंदर गमला
उठाकर ले गयी उसे नन्ही कमला

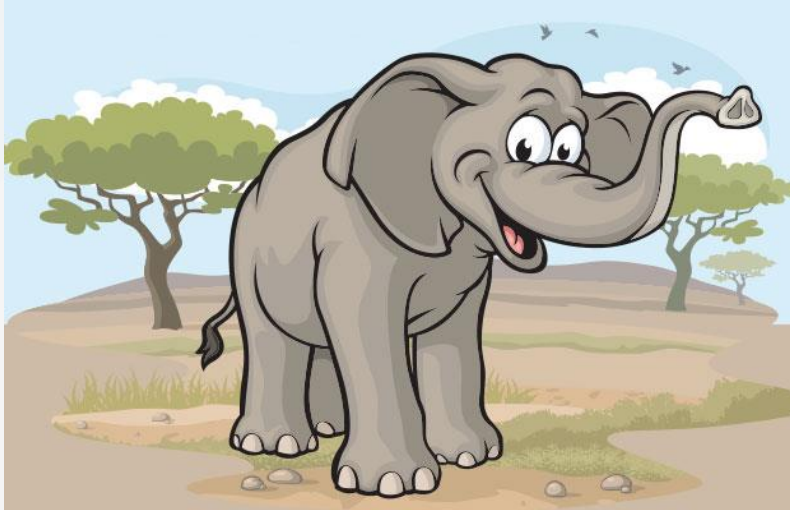
सब पूछ रहे कहाँ गया सुंदर गमला
लेकिन कुछ भी नहीं बता रही कमला

नजर पड़ी किसी की देखा टूटा गमला
खेल खेल में तोड़ दिया था उसने गमला

कैसे बताती उसको भी प्यारा था गमला
टूट गया तो टूट गया, क्या करे अब कमला

हाथी बना नेता

रचनाकार- कुमुद कुमार, बिजनौर



हाथी का मन डोल गया
नेता बनना उसे सूझ गया

भाषण देने में वह पारंगत हो गया
भीड़ जुटाने में भी कामयाब हो गया

एक एक दिन में करता कई सभाएं
खुश होता, तन कर चलता, सूंड़ उठाएं

एक दिन भाषण देते समय मंच गया टूट
हाथी तो लुढ़क गया, भीड़ रही मजे लूट

सफाई का महत्व

रचनाकार- सुधारानी शर्मा, मुंगेली



शैकी 8 साल का एक शरारती नटखट बच्चा था स्वभाव से थोड़ा लापरवाह था. साफ-सफाई पर ज्यादा ध्यान नहीं देता था कपड़े, बस्ते, कॉपी, पेन, बॉटल टिफिन कुछ भी साफ-सुथरा नहीं रखता था

शैकी रात को सोया हुआ था अचानक उसके सारे सामान उसको छोड़कर तेजी से भागने लगे.

हमशैकी के साथ नहीं रह सकते, वह साफ-सफाई नहीं करता है बस्ते से निकलकर कॉपी, पेन, पुस्तक सभी भागने लगे.

शैकी उनको जाते देख घबरा गया और जोर-जोर से चिल्लाकर उनको रोकने लगा, सब सामान भाग ही रहे थे. वह उन्हें मना कर रहा था

अचानक शैकी जोर से चिल्लाते हुए उठ बैठा, मत जाओ, उसने देखा वह बिस्तर पर है, सपना देख रहा था, उसने जल्दी से अपना बस्ता देखा, वह टेबल पर ही रखा था बस्ता बंद था. उसने मन ही मन वादा किया कि वह अपनी सभी चीजों पर ध्यान देगा ,और उन्हें साफ-सुथरा रखेगा खुद भी अच्छा बच्चा बनकर दिखलायेगा.

ज्ञान दीप

रचनाकार- संगीता पाठक, धमतरी



ईश्वर रचित शरीर भी एक मंदिर है.
हृदय के भीतर आराध्य विराजित है.

भावों की सुगंध से मन को महकाइये.
अपने मन की बात उन्हें भी सुनाइये.

श्रद्धा की बाती में प्रेम का घृत डालिये.
ज्ञानदीप से मन अपना आलोकित कीजिये.

फिर हर उलझन का तुम्हें समाधान मिलेगा.
सभी कार्यों में ईश का आशीर्वाद मिलेगा.

स्वच्छता अभियान

रचनाकार- सीखा मसीह, सातवीं, स्वामी आत्मानंद शेख गप्फार अंग्रेजी माध्यम
तारबाहर



इस समय दुनिया में कई तरह के वायरस फैल रहे हैं. जिनसे हजारों लाखों लोगों की मृत्यु हो रही है.

इसमें हमारी भी लापरवाही है अगर हम गंदगी फैलाना बंद करें तो हमारे देश के लोगों की जिंदगी बच सकती है.

हमें सभीको यह सीख देनी चाहिए कि वह गंदगी कम फैलाए और खुद भी सफाई की आदत डालनी चाहिए.

हमें गीला कचरा और सूखा कचरा अलग-अलग फेंकना चाहिए.

अगर हम गीला कचरा और सूखा कचरा एक साथ फेंके तो हमारे देश में प्रदूषण होगा.

अगर हमारा छत्तीसगढ़ गंदगी फैलाना बंद कर दे तो हमसे हमारे देश के दूसरे राज्यों के लोग भी गंदगी फैलाना कम कर देंगे.

बाल पहेलियाँ

रचनाकार- टीकेश्वर सिन्हा 'गब्दीवाला', बालोद



1. तुम में से कोई,
जरा यह बताए
हमारी पृथ्वी की,
घूमती हुई दिशाएँ ?

2. चार पैरों वाले मवेशी,
न बकरी है, न गाय.
जिसके आगे बीन बजाय,
चुप खड़ी रहे पधुराय.

3. एक महल में है,
एक प्रमुख द्वार.
जहाँ बैठी इक महारानी,
और बत्तीस पहेरेदार.

4. एक शब्द अंग्रेजी का,
दस लेटर्स होते जिसमें.
पाँच वावेल्ल्स हैं ही,
पाँच कांसोनेट्स भी होते जिसमें?

उत्तर :- (1)पश्चिम-पूर्व (2) भैंस (3)मुँह, जीभ व दाँत (4) Precaution (सावधानी)

बिन्नी के गले में घंटी

रचनाकार- टीकेश्वर सिन्हा 'गब्दीवाला', बालोद



बिन्नी बिल्ली ने न केवल राउत मुहल्ला; बल्कि पूरे कनेरी गाँव के नाक में दम कर दिया था. सभी के घरों में मौका मिलते ही दबे पाँव जाती थी; और जो भी खाने की चीज मिलती, उसी का हो जाता. पूरी तरह चट कर जाती थी, साथ ही घर भर पूरे बर्तन बिखरा देती. थोड़ी-सी आहट मिलते ही, चालाक बिन्नी चम्पत हो जाती. यह उसका रोज का काम था. मुहल्ले भर रोज बिन्नी की हरकतों की चर्चा होती ही रहती थी.

बिन्नी बड़ी झगड़ालू भी थी. उसका अपने बिरादरी वालों से भी कभी नहीं बना. उसे अपनी ताकत पर भी बड़ा घमंड था. बात-बात पर सबको आँखें दिखाती थी. यदि कोई दूसरी बिल्ली किसी के घर की बनी खाने की कोई चीज खा देती, तो बिन्नी उसका बारह बजा देती. इसीलिए उसे कोई फूटी आँख नहीं भाते थे.

एक दिन राउत मुहल्ले के लोगों ने बिन्नी से छुटकारा पाने की योजना बनाई. कुछ लोग एक जगह इकट्ठे हुए. सबकी ओर से बात चली. तभी मनु ने अपने पड़ोसी बिट्टू से कहा- 'कल तुम मेरे घर आना. एक कमरे में जाल बिछा कर रखूँगा. दरवाजे बंद कर देंगे. तुम खिड़की के बाहर एक नेट पकड़ कर रहना.' अपने घर के दरवाजे पर खड़ी रूपाली बोली- 'मैं क्या बताऊँ भारती बहन ! कल मैं खीर बनायी थी. उससे बचाने के लिए फ्रीज में रख दी थी. उसे पता चल ही गया. मेरे

दोनों बच्चे स्कूल चले गये; और मैं और उनके पापा बाजार. हम लोगों के आते तक फ्रीज के दरवाजे को खरोच डाली थी.' रूपाली के शांत होते ही सृष्टि बोली- 'मैं तो इतनी परेशान हूँ उससे कि क्या बताऊँ. आज सुबह चूहे को मारकर बिस्तर के ऊपर छोड़ दी थी. बदबू से कमरा भर गया था.' पास बैठा शुभम कहने लगा कि पिछले बुधवार को रोटी को चूहे मारने की दवाई लगा कर एक जगह रख दी, तो सूँघ कर वह चलती बनी.' शुभम की बातें सुन सबको हँसी आ गयी. फिर सभी एक-एक करके बिन्नी बिल्ली की हरकतों का जिक्र करने लगे.

बिन्नी बिल्ली चूहों के लिए भी बड़ी आफत थी. वह इतनी फुर्तीली थी कि चूहे देखते ही बिजली की तरह टूट पड़ती थी. उसकी निर्दयता तब हद से बाहर हो जाती, जब जितने भी चूहे उसके हाथ लगते, सबका काम तमाम कर देती थी. उसकी निर्ममता को बेचारी एक सफेद चुहिया चिल्ली सबके पास रो-रोकर बताती थी; आखिर उसके बच्चे एक नहीं; तीन बार बिन्नी के भेंट चढ़ चुके थे.

एक दिन की बात है. दिनेश दोपहर को खाना खाने के लिए स्कूल से घर आया. खाने के बाद ड्राइंगरूम में गया. आलमारी से पुस्तक निकालते समय उसे कराहने की आवाज सुनायी दी. देखा, तो बिन्नी का सर एक गुलदस्ते में फँस गया था. वह खूब हड़बड़ा रही थी. फिर दिनेश ने अपने पड़ोसी काका शिखर को बुलाया. देखते ही देखते चार-पाँच लोग इकट्ठे हो गये. बिन्नी पकड़ ली गयी. अब जैसे-तैसे करके उसके सर को गुलदस्ते(फ्लावर पॉट) से बाहर निकाला गया. बिन्नी एकदम घबरायी हुई थी. उसके बारे में कई तरह की बातें होने लगी. अंत में सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया कि बिन्नी के गले में घंटी बाँध कर छोड़ दी जाय. यही उसकी सजा होगी.

गले में घंटी बँधी बिन्नी बिल्ली का अब जीना दुभर हो गया. न तो उसे किसी के घर खाने-पीने को मिलता, और न ही वह चूहे वगैरह पकड़ पाती. कई दिनों तक भूखा रहना पड़ता था उसे. बिन्नी के गले की घंटी की आवाज सुनते ही सब सतर्क हो जाते थे. चूहे तो अपने बिलों से बिन्नी को देख ताना मारा करते थे- 'अब आया ऊँट पहाड़ के नीचे. आतंक का अंत होता ही है.' बिल्लियाँ भी कहाँ चूकने वाली थीं- 'दूसरों की जिंदगी इसके लिए बड़ी सस्ती थी. अब बात समझ आयी इसे, किसी के दुःख को दुःख न समझना. भुगतने दो; जैसी करनी, वैसी भरनी.'

दो-तीन महीने में बिन्नी की हालत खराब हो गयी. वह हमेशा डरी-सहमी सी रहती थी. ठीक से खाने-पीने को तो मिल ही नहीं रहा था; साथ ही उसे अब मुफ्त में मार पड़ जाती थी. धीरे-धीरे उसका शरीर जवाब देने लगा. हिलती डुलती हुई चलती थी. ठीक से उसकी आवाज नहीं निकलती थी. आँखें तक धँसने लगी थी. उसकी हालत दयनीय हो गयी. कुछ लोगों की नजर

उस पर पड़ी. उसकी हालत पर दया आ गयी. सबने विचार-विमर्श किया. लगा कि अब तो इस बिल्ली पर कुछ ज्यादाती हो रही है. इसको तो अब सबक मिल ही गया. मर-वर जाएगी तो हम सब पर बिल्ली की हत्या का पाप लगेगा. इसलिए इसके गले की घंटी निकाल दी जाय.

दूसरे दिन मनु के पापा, यश के चाचा, बिट्टू के भैया ने मिलकर बिन्नी को पकड़ा; और उसके गले की घंटी निकाल दी. गले से घंटी निकलते ही बिन्नी ने राहत की साँस ली. बिट्टू ने उसके लिए अपने घर से दूध लाया. शिखा ने उसे रोटी खिलायी. फिर उस दिन से सभी उसे खाने के लिए कुछ न कुछ देने लगे. महीने भर में बिन्नी भली-चंगी हो गयी. पहले जैसे हृष्ट-पुष्ट दिखने लगी. अब तो उसका स्वभाव बदल चुका था. वह सीधी-सादी बिल्ली बन चुकी थी. फिर उसने कभी कोई हरकत नहीं की. सभी उसे प्यार करने लगे थे. उसे एक नया नाम 'किट्टी' मिल चुका था. खेलते हुए बच्चों के पास आकर बैठ जाती थी प्यारी किट्टी. पर हाँ, अब भी जैसे ही उसके कानों पर घंटी की आवाज पड़ती, वह दुम दबाकर भाग जाती. बच्चे हँसते हुए चिल्लाते थे- 'देखो....भागी रे किट्टी.. भागी रे....'

मैं और मेरा भैया

रचनाकार- नलिन खोईवाल, इंदौर



मैं बहना वो छोटा भैया
लगता है वह सबसे प्यारा
चहल-पहल है घर की रौनक
हम सबका है वह राजदुलारा.

हम बच्चे हैं कितने न्यारे
फूलों सी अपनी मुस्कान
हमसे लगे हैं खूबसूरत
ये जमीं, नभ और ये जहान.

सच की राह पर हम चलेंगे
और करेंगे पूरे सब स्वप्न
मंज़िल नहीं अब हमसे दूर
हाथ बढ़ाकर छू लेंगे गगन.

देश हैं बच्चों का और हम
एक बनेंगे नेक बनेंगे
निर्भयता से आगे बढ़कर
लक्ष्य से ना पीछे हटेंगे.

रंग-बिरंगे गुब्बारे

रचनाकार- नलिन खोईवाल, इंदौर



गुब्बारे प्यारे मनभावन,
इनसे सजते घर या आँगन.

सतरंगे, श्यामल और लाल,
खेलें सब ही बाल गोपाल.

छोटा जीवन ये हैं पाते,
रहते जब तक खूब लुभाते.

कड़वे घूँट स्वयं पीते हैं,
सबकी खुशियों में जीते हैं.

अगर गैस भर इन्हें फुलाते,
छूटें तो ये नभ को जाते.

ज्यादा हवा न सह पाते हैं,
फट्ट - फट्ट ये फट जाते हैं.

प्राण निछावर कर जाते हैं,
लेकिन खुशियाँ भर जाते हैं.

रेल चली भई रेल चली

रचनाकार- नलिन खोईवाल, इंदौर



छुक-छुक-छुक करती है रेल चली
धक्कम-धक्का, रेलमपेल चली.

हम बच्चे परवत से अटल खड़े
हौसलों से हम आगे ही बढ़े.

जंगल-जंगल हम धूम मचाएँ
खेले-कूदे नाचे और गाए.

झर-झर-झर-झर है झरना बहता
कल-कल करता संगीत सुनाता.

पर्यावरण ही हमारा जीवन
रहता निरोगी हमारा तन-मन.

पढ़ेंगे-लिखेंगे बनेंगे नवाब
हम देंगे हर सवाल का जवाब.

यह कहती मेरी दादी-नानी
हरीतिमा से निखरे जिंदगानी.

साथ-साथ खूब धमाल करेंगे
हल्ला-गुल्ला हम कमाल करेंगे.

बिटिया चाहत है

रचनाकार- नलिन खोईवाल, इंदौर

बिटिया चाहत है,
बिटिया राहत है.
फुरसत में लिखी ,
एक इबारत है.

उन पर शोषण से,
ये दिल आहत है.
कमतर समझे जो,
उन पर लानत है.
उनकी बरकत से,
घर में दावत है.

हिम्मत रख कर चल,
बद की सामत है.
जुल्म नलिन करना,
जग की आदत है.



माँ

रचनाकार- नलिन खोईवाल, इंदौर



कब न किससे मलाल करती माँ,
हर घड़ी बस कमाल करती माँ.

कोख में बेटियों को क्यों मारा,
अब यही सब सवाल करती माँ.

हम तो कितने है दीन दुनिया में,
प्यार से पर निहाल करती माँ.

अपने सुख-दुख सभी भुलाकर के,
घर में सब का खयाल करती माँ.

ये तमस डर के भाग जाएगा,
खोल आँखें उजाल करती माँ.

तल्लियाँ दूर सब हो जाती है,
स्नेह से बोल-चाल करती माँ.

जब बड़े मनमुटाव रिश्तो में,
गर्म जल-सी उबाल करती माँ.

घर में तकरार जिस तरह की हो,
पल में उसका निकाल करती माँ.

घर को चमकाए या मुझे डांटे,
जो करें बेमिसाल करती माँ.

जब ठिठुरते हुए मुझे देखें,
झीन आंचल विशाल करती माँ.

जिन पलों से नलिन रहा वंचित,
उन पलों को बहाल करती माँ.

पहेलियाँ

रचनाकार- युक्ति साहू, सातवीं, स्वामी आत्मानंद शेख गप्फार अंग्रेजी माध्यम
तारबाहर



1. तीन हाथ है मेरे पास,
फुल जैसा मैं दिखता
हवा देना मेरा काम,
नाम बताओ मेरा?
2. डिब्बे जैसा मेरा आकार,
पर हूँ नहीं मैं डिब्बा
फल सब्जी रखते हैं मुझ पर
ताजा मैं इन्हें रखता?

3. चौबीस घंटे घुसे रहते मुझमें,
सबके पास मैं रहता
मेरे बिना कोई कुछ न कर सके,
सारा काम मैं ही करता?

4. मनोरंजन का हूँ मैं साधन,
डब्बा जैसा दिखता
लगा रहता हूँ दिवाल पर,
सब रहते मुझपर निर्भर?

5. गर्मी में मैं आता काम,
शीतल रखना मेरा काम
आसपास को शीतल रखके,
आग सी गर्मी से बचाता?

उत्तर: 1. पंखा, 2. फ्रिज, 3. मोबाइल, 4. टी.वी, 5. ए.सी

भारत देश महान, मेरी आन बान शान

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी, महाराष्ट्र



भारत देश महान, मेरी आन बान शान
धर्मनिरपेक्षता है ,भारत की पहचान
हर धर्म, त्योहार, संस्कृति का भारत में सम्मान
अनेकता में एकता है भारत विश्व में बलवान

भारत देश है बुद्धिजीवियों की खान
कोरोना वैक्सीन बना कर विश्व को दी नई पहचान
कोरोनावारियर्स बनकर उभरे भारत की शान
अब फिर बनेगा भारत, सोने की खान

आत्मनिर्भर भारत बनेगा, हर क्षेत्र की जान
हर नागरिक को डालना होगा, इस सोच में जान
सोच में ही छुपा है, कुछ कर गुजरने का ज्ञान
भारत देश महान, मेरी आन बान शान-3

पहेलियाँ

रचनाकार- टीकेश्वर सिन्हा 'गब्दीवाला', बालोद



1. बसंत ऋतु में आता,
लेकर फूलों की बहार.
रंग-गुलाल से सजकर,
फागुन माह का त्यौहार.
2. एक चिड़िया बोतलनुमा,
वह पीती रंगीन पानी.
होती तुम सबके हाथों में,
क्या है बताओ बिटिया रानी.

3. बैठ गयी वह आग में,
प्रह्लाद को गोद में लेकर.
बचना तो चाहती थी वह,
पर हुई भस्म जलकर.

4. चौक-चौराहे पर बजता,
एक तालवाद्य मशहूर.
फाग गीतों के संग जिसकी,
आवाज जाती दूर-दूर.

5. एक-दूसरे के चेहरे पर,
लोग जिसे लगाते हैं.
बधाई देते एक-दूसरे को,
सप्रेम गले लगाते हैं.

उत्तर : (1) होली (2) पिचकारी (3) होलिका (4) नगाड़ा (5) रंग-गुलाल

खिलौने वाला

रचनाकार- शशीकांत कौशिक



खिलौने वाला आया है,
कई खिलौने लाया है.

बड़े-बड़े दांतों वाला हाथी है,
लंबे बालों वाला भालू साथी है.
हाथी डाली, भालू पत्ते खाया है,
खिलौने वाला आया है.

उछल कूद करता हुआ बंदर,
प्यारा-सा तोता है पिंजरे के अंदर.
घोड़े को देखकर बंदर शर्माया है,
खिलौने वाला आया है.

छोटे और बड़े चश्में है रंग बिरंगे,
गिलहरी और चूहे में हो रहे दंगे.
नाच रहे मोर ने धूम मचाया है,
खिलौने वाला आया है.

सबसे ऊपर लटकी रिमोट वाली गाड़ी,
गुड़िया सजी बैठी है पहन के साड़ी.
गुड़िया से मिलने गुड्डा राजा आया है,
देखो खिलौने वाला आया है.

चिड़िया

रचनाकार- शशीकांत कौशिक



चिड़िया चीं-चीं करती हैं,
चुग-चुग दाना खाती हैं.
आकर आँगन में बैठे फिर,
पंख पसारे उड़ जाती हैं.
आसमान में लहराती हैं,
लहराकर कई रूप दिखाकर.
सबके मन को भाती हैं.

आओ सीखें इनसे उड़ना,
उड़ना मतलब आगे बढ़ना.
आगे बढ़कर मंजिल पाकर,
पर हित में भी काम करना.

गिनती का गीत

रचनाकार- सुधारानी शर्मा, मुंगेली



- 1 राजा की बेटी थी.
- 2 दिन से बीमार पड़ी
- 3 डॉक्टर घर पर आए
- 4 चार दवा की पुड़िया लाए.
- 5 घंटे में गर्म कराया.
- 6 घंटे बाद दवा पिलाया.
- 7वें दिन वह आंखें खोली
- 8वें दिन वह मुझसे बोली
- 9 वें दिन उठकर बैठी.
- 10वे दिन फिर दौड़ लगाई
- दौड़ लगाकर स्कूल आई.
- स्कूल आकर की पढ़ाई.

उपकार

रचनाकार- वीरेंद्र बहादुर सिंह, नोएडा



रमाशंकर की कार जैसे हो सोसायटी के गेट में घुसी, गार्ड ने उन्हें रोक कर कहा, "साहब, यह महाशय आपके नाम और पते की चिट्ठी ले कर न जाने कब से भटक रहे हैं."

रमाशंकर ने चिट्ठी ले कर देखा, नाम और पता तो उन्हीं का था, पर जब उन्होंने चिट्ठी लाने वाले की ओर देखा तो उसे पहचान नहीं पाए. चिट्ठी एक बहुत थके से बुजुर्ग ले कर आए थे. उनके साथ बीमार सा एक लड़का भी था. उन्हें देख कर रमाशंकर को तरस आ गया. शायद बहुत देर से वे घर तलाश रहे थे. उन्हें अपने घर ला कर कहा, "पहले तो आप बैठ जाइए." इसके बाद नंकर को आवाज लगाई, "रामू इन्हें पानी ला कर दो."

पानी पी कर बुजुर्ग ने थोड़ी राहत महसूस की तो रमाशंकर ने पूछा, "अब बताइए किससे मिलना है?"

तुम्हारे बाबा देवकुमार जी ने भेजा है. बहुत दयालु हैं वह. मेरे इस बच्चे की हालत बहुत खराब है. गांव में इलाज नहीं हो पा रहा था. किसी सरकारी अस्पताल में इसे भर्ती करवा दो बेटा, जान बच जाए इसकी. एकलौता बच्चा है. इतना कहते कहते बुजुर्ग का गला रुंध गया.

रमाशंकर ने उन्हें गेस्टरूम में ठहराया. पत्नी से कह कर खाने का इंतजाम कराया. अगले दिन फैमिली डाक्टर को बुलाकर सारी जांच करवा कर इलाज शुरू करवा दिया. बुजुर्ग कहते रहे कि

किसी सरकारी अस्पताल में करवा कर दो, पर रमाशंकर ने उसकी एक नहीं सुनी. बच्चे का पूरा इलाज अच्छी तरह करवा दिया.

बच्चे के ठीक होने पर बुजुर्ग गांव जाने लगे तो रमाशंकर को तमाम दुआएं दीं. रमाशंकर ने दिलासा देते हुए एक चिट्ठी दे कर कहा, "इसे पिताजी को दे दीजिएगा."

गांव पहुंच कर देवकुमारजी को वह चिट्ठी दे कर बुजुर्ग बहुत तारीफ करने लगा, "आप का बेटा तो देवता है. कितना ध्यान रखा हमारा. अपने घर में रख कर इलाज करवाया."

देवकुमार चिट्ठी पढ़ कर दंग रह गए. उसमें लिखा था, "अब आप का बेटा इस पते पर नहीं रहता. कुछ समय पहले ही मैं यहां रहने आया हूं. पर मुझे भी आप अपना ही बेटा समझें. इनसे कुछ मत कहिएगा. आपकी वजह से मुझे इन अतिथि देवता से जितना आशीर्वाद और दुआएं मिली हैं, उस उपकार के लिए मैं आपका सदैव आभारी रहूंगा.-आपका रमाशंकर."

देवकुमार सोचने लगे, आज भी दुनिया में इस तरह के लोग हैं क्या?

बाल पहेलियाँ

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र, लखनऊ



1. मौसम मनभावन हो जाता,
ऋतुओं का राजा है कौन?
तरु, फल, फूल सभी खिल जाते,
नाम बताओ! रहो न मौन!
2. रंग-मिलन का प्रिय त्योहार,
फागुन में आता हर बार.
लोग अबीर-गुलाल लगाते,
बोलो! कौन सा पर्व मनाते?

3. भक्त प्रह्लाद को गोदी लेकर,
जला देने की युक्ति रची थी.
भक्त प्रह्लाद बचे जलने से,
किन्तु न उसकी बुआ बची थी.

4. पिता प्रह्लाद का हिरण्यकश्यप,
भक्त पुत्र को बहुत सताया.
ज्यों ही मार डालना चाहा,
किसने आकर तुरंत बचाया?

5. खुशी से मिलते गले परस्पर,
लोग प्रकट करते हैं हर्ष.
मठरी, पापड़, गुझिया खाते,
मिलन-पर्व का क्या निष्कर्ष.

उत्तर - 1 वसंत, 2 होली, 3 होलिका, 4 नृसिंह भगवान, 5 प्रेमभाव

तोता मैना की कहानी

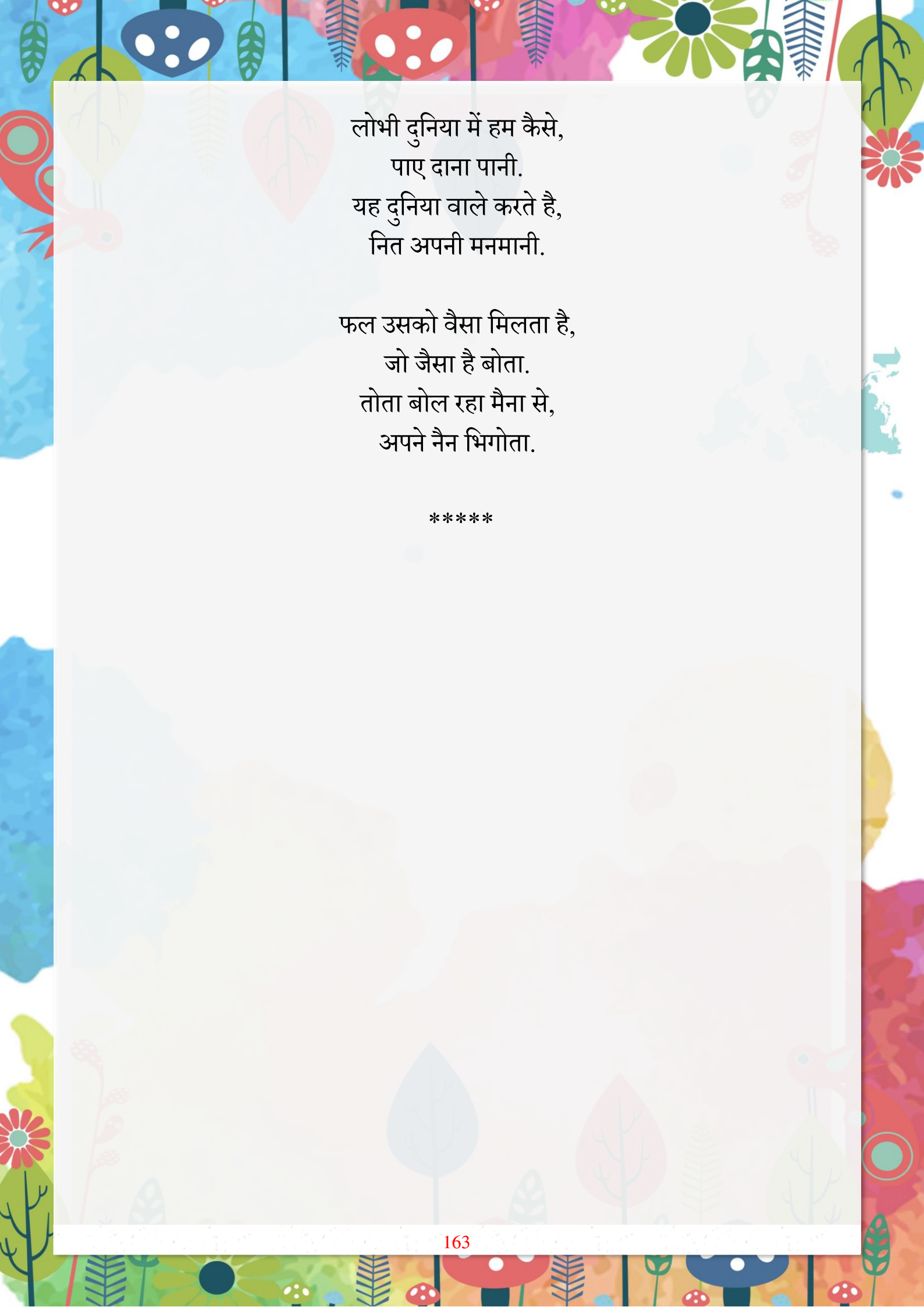
रचनाकार- डिजेन्द्र कुर्रे "कोहिनूर", महासमुंद



एक शहर से मैना आई,
एक शहर से तोता.
तोता बोल रहा मैना से,
अपने नैन भिगोता.

सुन मैना किस तरह बनेगी,
अपनी प्रेम कहानी.
यह दुनिया वाले करते है,
नित अपनी मनमानी.

पेड़ सभी कट चुके जगत में,
जीवन कहाँ बिताए.
बहुत शोर है इस दुनिया में,
गाना कहाँ से गाए.



लोभी दुनिया में हम कैसे,
पाए दाना पानी.
यह दुनिया वाले करते है,
नित अपनी मनमानी.

फल उसको वैसा मिलता है,
जो जैसा है बोता.
तोता बोल रहा मैना से,
अपने नैन भिगोता.

जूता

रचनाकार- डिजेन्द्र कुर्रे "कोहिनूर", महासमुंद



इन जूतों बिन कौन सका है,
अपना मंजिल पाना.
इन्हें पहनकर ही पाए है,
कितने लोग खजाना.

तेज धूप में सड़क तवे पर,
जूता पाँव बचाता है.
खुद घिस-घिस कर हमें सुरक्षित,
मंजिल हमें पहुँचाता है.

सभी धूल कीचड़ से पग को,
सदा सुरक्षा देता है.
फिर भी नित्य नकारा जाता,
जैसे कोई नेता है.

सीमा पर जो वीर खड़े है,
वह भी इसे पहनते है.

इसे पहनकर उन वीरों के,
चौड़े सीने तनते है.

इनसे ही तो मान बढ़ा है,
अपने वीर सपूतों का.
सबका मान बढ़ाया जिसने,
मान नहीं उन जूतों का.

कितना देखें टीवी

रचनाकार- गरिमा बरेठ, सातवीं, स्वामी आत्मानंद शेख गप्फार अंग्रेजी माध्यम शाला
तारबहार



टीवी हमें ज्यादा देर तक लगातार नहीं देखना चाहिए यह हमें समय-समय पर ही देखना चाहिए क्योंकि टीवी देखने से हमारे जीवन में बहुत प्रभाव पड़ता है. टीवी ज्यादा देखने से आँख कमजोर होती है और बहुत सी अन्य परेशानियाँ भी होती हैं.

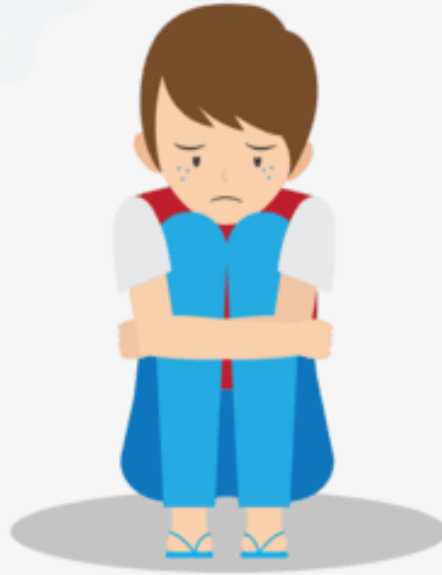
राजू को हम सभी की तरह टीवी देखना बहुत ज्यादा पसंद था. लेकिन वह हमसे भी बहुत ज्यादा देर तक टीवी देखता था. पूरे दिन से देर रात तक वह टीवी देखता रहता था, जब तक वह खुद कमजोर होकर खुद अपने आप सो न जाए. सुबह के कार्यक्रम से देर रात तक के कार्यक्रम सभी कार्यक्रम को देखता था जब तक उसकी आंखें फैलकर स्थिर न हो गईं. उसके नितंब उसकी कुर्सी में बदल गए और उसकी ठोड़ी चित्र और आवाज सेट करने के बटन में बदल गई और एंटीना उसके बालों के बाहर आ गया. उसका मस्तिष्क दूरदर्शन स्क्रीन बन गया. दो बटन भी आ गए जहाँ उसके कान थे.

राजू के साथ यही हुआ, हो सकता है कि अगर हम भी ज्यादा टीवी देखें तो हमारे साथ भी यह हो जाए इसी कारण हमें टीवी समय-समय पर ही देखना चाहिए.

शिक्षा - हमें अपना काम समय पर ही करना चाहिए.

काश ! मैं तुम जैसा होता

रचनाकार- सुनीता लहरे, बालोद



तुम तो हो एक छोटा जीव,
नाम तुम्हारा गिलहरी.
इस डाल से उस डाल पर,
उचक -उचक कर जाती.
छोटे छोटे फर तुम्हारे,
पूँछ है लंबे गोल.
मैं भी तुम जैसा होता,
नैन तुम्हारे गोल.

तुम तो हो एक विशाल हाथी,
विशाल तुम्हारा शरीर.
हरी पत्तियां फल फूल खाते,
महावत को नहीं पीर.
रंग है काला दांत सफेद,

बड़े बड़े सूप कान.
मैं भी तुम जैसा होता,
बनती मेरी शान.

तुम तो हो एक शक्तिशाली शेर,
नाम तुम्हारा भी बब्बर शेर.
दहाड़ सुनकर थर थर कापें,
क्या जंगल क्या खेत.
दांत नुकीला, चीर फ़ाड़ वाला,
ताज़ा मांस कई निवाला.
मैं भी तुम जैसा होता,
शोभित जंगल का रखवाला.

तुम तो हो एक सीधे जीव,
नाम तुम्हारा गधा.
सब उदाहरण तुम्हारा देते,
जिसे कुछ नहीं आता.
दस मिलों की आवाज तुम सुनते,
नहीं किसी से बैर.
मैं भी तुम जैसा होता,
क्या अपना क्या गैर.

मेरा प्यारा देश

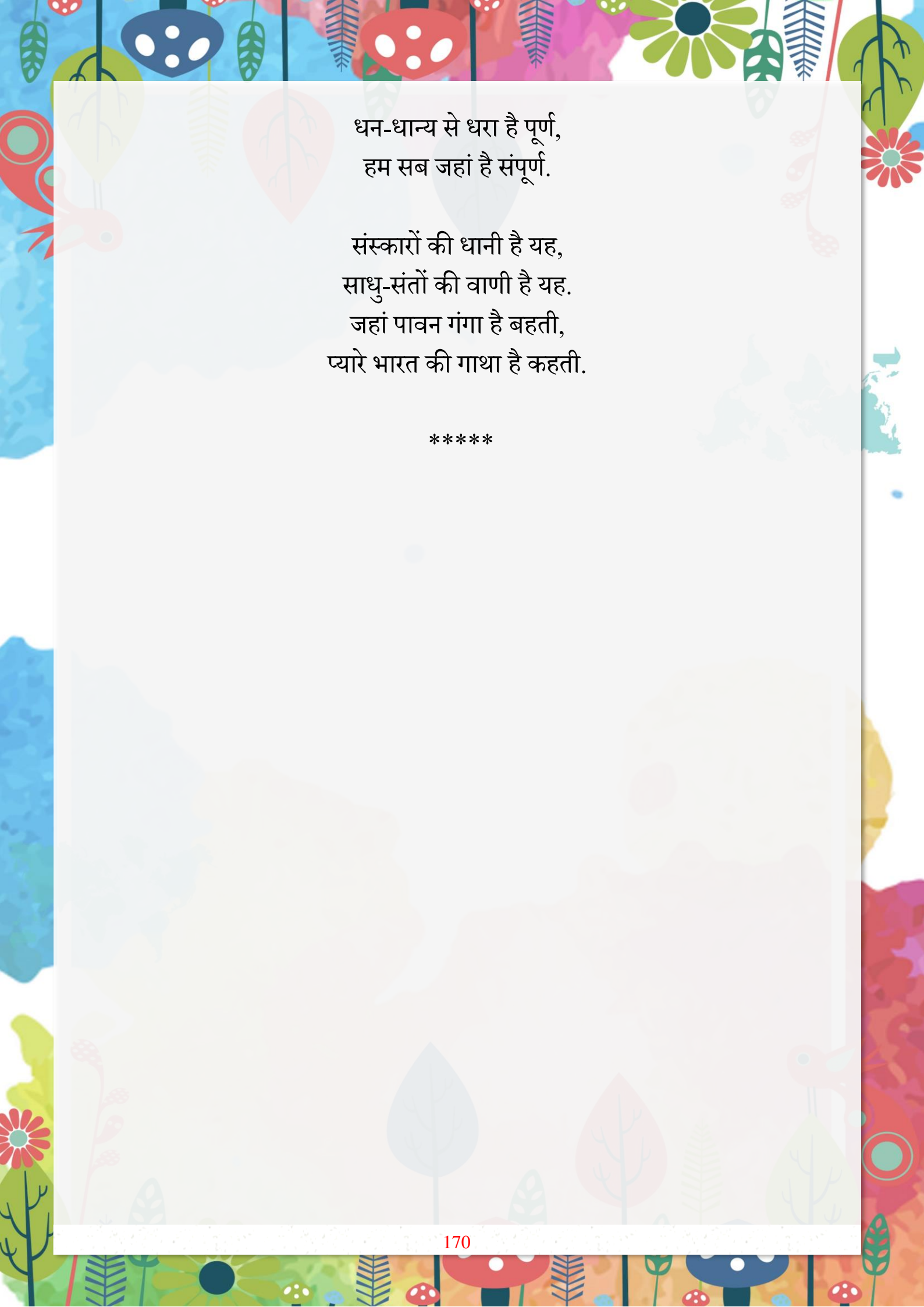
रचनाकार- आशा उमेश पांडेय, सरगुजा



कभी किसी से करो न भेद,
होता मन में बड़ा है खेद.
मिलजुल जब रहते हैं सभी,
हर घर रोशन होता है तभी.

जात-पात कभी न मानो,
सबको तुम अपना जानो.
आ जाती जब कोई बला,
मिलकर करते सब भला.

देश हमारा वीरों का है,
देश हमारा धीरों का है.



धन-धान्य से धरा है पूर्ण,
हम सब जहां है संपूर्ण.

संस्कारों की धानी है यह,
साधु-संतों की वाणी है यह.
जहां पावन गंगा है बहती,
प्यारे भारत की गाथा है कहती.

मक्के का दाना

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र, लखनऊ



दो मुर्गियाँ एक बाड़े में,
घूम रहीं थीं सायंकाल.
दूर पड़ा कोने में देखा,
मक्के का दाना तत्काल.

दाना खाने को जल्दी से,
पहली मुर्गी दौड़ पड़ी.
शीघ्र दूसरी मुर्गी पहुँची,
जो दाना खाने को अड़ी.

पहली मुर्गी तनकर बोली,
तुम क्यों करती हो तकरार.
सबसे पहले मैंने देखा,
दाने पर मेरा अधिकार.

कहा दूसरी मुर्गी ने तब,
झूठ नहीं बोलो बहना.
मेरी दृष्टि ही प्रथम पड़ी थी,
मानो सच मेरा कहना

दोनों में ही बात बढ़ गई,
जमकर होने लगी लड़ाई.
एक और दाना मक्के का,
था कुछ दूर, न पड़ा दिखाई.

पास पेड़ पर बैठा कौवा,
उनकी कलह देख हर्षाया.
तुरंत उड़ गया दाना लेकर,
मौके का फायदा उठाया.

हुई एकदम मौन मुर्गियाँ,
देख कौवे की चतुराई.
पश्चाताप किया दोनों ने,
कलह परस्पर अति दुखदायी.

हमर राजिम मेला

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू", राजिम



माँघ अउ फागुन के महीना हर लोगन मन बर बहुत ही खास रहिथे; अउ रही काबर नहीं ; माँघी पुन्नी के मेला जे लगथे. अतेक बड़ कुम्भ के मेला राजीवलोचन धाम मा भराथे. जेन मनखे मन राजिम जइसे पवित्र स्थान मा रहिथे, तेखर भाग तो खुलबे करही. संगवारी हो, हमर राजिम के मेला-मैदान हर पन्द्रह दिन पहिली भराये के शुरू हो जाथे. ये मेला हर महाशिवरात्रि तक रहिथे.

"देवत हावँव नेवता, आवव जुरमिल लोग.
दर्शन कर भगवान के, खाहु पीड़िया भोग."

गदबद-गदबद मेला मैदान हर करत रहिथे. माँघ पुन्नी के दिन बड़े बिहनिया ले लोगन मन महानदी, पैरी अउ सोंदूर नदी के संगम मा स्नान कर के राजीवलोचन अउ कुलेश्वर महादेव मा जल चढ़ाथें; पूजा पाठ करथें. उही दिन ले मेला के शुरूआत घलो होथे. बड़े-बड़े झूला, सरकस, किसम-किसम के खाई-खजाना इही मेला मा तो देखे ला मिलथे. बाहिर ले लोगन मन आथें. बड़े-बड़े साधु-संत मन घलोक आश्रम मा विराजमान रहिथें.

सब ले बड़े खुशी के बात ये हरे कि आजकल के लोग-लइका मन अपन पढ़ई-लिखई मा अतेक व्यस्त रहिथें कि बाहरी दुनिया, मेला-मड़ई, पुरखौती जिनिस ला जानबे नइ करँय. कुछू पूछ देबे त दाँत ला खीस ले निकाल देथें. जानबे नइ करय तेन काला बताहीं. पर ये मड़ई-मेला मनोरंजन, आपसी मेल-मिलाप ला जाने के बने साधन हरे.

मड़ई-मेला के समय जवान लागे न बुढ़वा सब अपन-अपन काम-बुता मा लागे रहिथें. माईलोगन ला तो फुरसद घलो नइ मिलय काखरो घर आये-जाये के. सियान मन घर मा सुत के पहा दिही ; फेर काखरो घर नइ जावँय. कुछ काम रहिथे, तभे उँखर गोड़ उसलथें.

जेन दिन ले मेला लगई शुरू होथे उही दिन ले लोगन घर सगा-सोदर के अवई-जवई शुरू हो जाथे. महाशिवरात्रि तक तो राजिम के सब घर मा सगा-सोदर मन के आगमन होवत रहिथे. घर वाले मन तो लोगन के जेवन-पानी के बेवस्था ला आघू ले कर के रखे रहिथें कि अई आज हमर फूफू मन आही, ता मोसी आही, ममा आही.. लोग लइका मन ला शुरू-शुरू मा बने लागथें, फेर दू-चार दिन बाद असकटा जाथें, काबर कि ओखर मन के दिनचर्या घलो बिगड़ जाथे पढ़ई-लिखई के. तेखर पाय हमर राजिम के स्कूल मन मा छूट्टी दे देथें, तेन बने लागथे.

लइका मन के धियान हर सरकस के भालू कोती रही कि पढ़ई-लिखई मा. ये बात घलो हरे कि आजकल सबझन हर अकेल्ला रहे के आदत बना डरे हे, तेखर पाय बनेच दिन बाद सब ले मिलई -जुलई होथे त बने लागथे. मेला-मड़ई मा अमीर लागे न गरीब, छोटे लागे न बड़े सब एक बरोबर रहिथें. जाति, धर्म, सम्प्रदाय, भाषा के भेदभाव बिल्कुल नइ रहय; तेन बढिया लागथे.

" चारो कोती देख, खुशी हर मन मा छाये.
माँघी पुन्नी रात, दरश भगवन के पाये.
करे नदी स्नान, पाप जम्मो कट जाये.
जोहत रहिथे साल, माँघ मेला कब आये."

अइसे तो मेला दिन भर रहिथे ; फेर जेन मजा संझा ले रतिहा बेरा तक घूमे के रहिथे, वो मजा बिहना मा नइ रहय. पहिली दिन तो घर के सियान मन लइका मन ला भेज देथें, जावव बाबू हो.. काय-काय जिनिस आये हे तेन ला देख के आहू कहिके. लइका मन घलो अब्बड़ चतुरा; पहिली ले आगू ले घूम-घूम के आ जाय रहिथें ,तभो ले हमन तो देखेच नइ हन कहिके निकल जाथें. दूसर दिन ले घर के जम्मो सगा-सोदर, माईलोगन ,लइका-सियान मन जाथें. कोनो-कोनो लइका मन तो जब तक झूला बंद नइ होये, तब तक घूमते रहिथें; जानो-मानो उही मन मेला बंद करे के ठेका लेहे.

किसम-किसम के झूला तो हमर राजिम मेला मा आथें नवा-नवा डिजाइन के.सियान मन ला तो ये सब देखके चक्कर आ जाथे. फेर युवा पीढ़ी अउ नान-नान लइका मन के तो इही मजा रहिथे. आकाश-झूला जेन अइसे लागथे के जानो-मानो, आसमान ला छू दिही. डोंगा-झूला मा तो डोंगा

मा बइठे हस तइसे लागथे, ब्रेकडांस चलते -चलत झटका के साथ मुड़ जाथे. सावधानी के साथ झूले ला पड़थे, नहीं ते घेंच हर धर लेथे. फेर मेला भर घर ले निकलना मुश्किल हो जाथे. पेंडुलम झुला मा बइठबे त बिना सहारा के नइ बइठ सकस. येती-वोती गोल-गोल घूम के चारों मुड़ा फेकावत रहिथे. जतका ज्यादा उल्टा-पुल्टा, नवा-नवा झूला आथे, वतकी ओखर रेट रहिथे. पहिली तो पाँच रुपिया दे के मन भर झूल लेवत रहें. अब तो पाँच के जमाना ही खतम होगे. बिना सौ-पचास के टिकिट नइ मिलय. महंगाई घलो बाढ़त जावत हे अउ झूलने वाला के जनसंख्या घलो बाढ़त हे. दूनों मा कोनो कमी नइ दिखय. नान-नान लइका मन बर घोड़ा, हाथी, ड्रैगन मन बने रहिथें. लइका मन खुश हो जाथें.

लोगन ला जब तक भीड़ नइ होय राहय, तब तक मेला मा मजा नइ आवय. कुछू खाय ला मिले चाहे झन मिलय, पर धक्का-मुक्की जरूर खाय बर मिलथे. मेला मा खान-पान के सब ले खास जिनिस हरे लाई के ओखरा (मीठा लाई), पेठा, रखिया पाग ये जिनिस सब ले फायदेमन्द रहिथे. ये जिनिस ला मेला के विशेष मिठाई के रूप मा माने जाथे. मेला मा अइसन भीड़ रहिथे. पाँव रखे के जगह नइ रहय. सरकस, मौत कुआँ, बड़े-बड़े क्राफ्ट बाजार लोगन के मन ला मोह लेथे. माईलोगन मन कुछू जिनिस नइ लेवन बोलथे फेर समान ला देख के मोहा जाथें, एक के जगह दू-चार जिनिस धर के लेगथें. किसम-किसम के जिनिस ला देख मन बड़ अच्छा लगथे. आजकल के लइका मन नइ जाने तेन ला जाने के मौका मिलथे. सुपा-पर्रा, बांस के बने खिलौना- हाथी, घोड़ा, ऊँट अउ मिट्टी के बर्तन, चीनी मिट्टी के बर्तन, लकड़ी के सामान वगैरा.

" घूम घूम के खाव, लगे हे पुन्नी मेला.
पेठा गुपचुप चाट, खड़े हे जम्मो ठेला.
आवय घर घर लोग, सगा सोदर संगवारी.
बाढ़य मया दुलार, घूमथे पारी पारी. "

जेन लोगन ला मन्दिर दर्शन कर ना रहिथें, तेन बिहनिया चार बजे ले लाइन लगा लेथें. उहाँ घलो पाँव रखे के जगह नइ रहय. थोकिन सुरुज उए ले लोगन के कचाकच भीड़ उमड़े ला लगथे. जेकरे भाग बने रहिथे, तेने ला भगवान के दर्शन मिलथे; बाकी तो मनखे-मनखे एक-दूसर ल देख के आ जाथे. भीड़ मा न नरियल चघाय ल देवे, न पाँव परे ला. अगरबत्ती तो बहुत दूर के बात हरय, काखरो फूल हर भगवान तक नइ पहुँचे, काबर की बड़े जान बांस ला पहिली ले घेर दे रहिथे. जय भगवान-जय भगवान बोलो अउ आघू निकलो. फेर जाना चाही, मन्दिर मा पाँव रखे मात्र से ही भगवान के आशीर्वाद मिल जाथे; अइसे घर के सियान मन कहिथे.

कचाकच मेला भराय के समय नदिया मा भिखारी , लुटेरा अउ पाकिटमार के बनेच कमाई हो जाथे. साधु-संत मन तो बइठे ही रहिथें. फेर भिखारी अउ लुटेरा मन के साल भर के कमाई पन्द्रह दिन मा हो जाथे. चोर अउ पाकिटमार ले बच के रहना चाही. माईलोगन मन ला तो गहना पहिर के जाना ही नहीं चाही, नहीं ते फेर गहना नइ बाँचय. कतको पुलिस बेवस्था रहिथे, तभो ले पाकिट मार होथे ही. इहाँ भिखारी मन के माँगे के नवा -नवा आइडिया घलो देखे ला मिलथे. कोनो हाथ-गोड़ मा पट्टी बाँध के आ जाथे त , दया के मारे ये दाई; बिचारा के हाथ टूट गेहे दू-चार रुपिया दे देथो; भला होही, पुण्य मिलही, कहिके मनखे मन दे देथे. बड़ चतुरा देवार-देवरनिन ; कटोरा धर-धर के बइठे रहिथे. अतेक नरम हो के माँगथे - दे दे न दीदी, दे दे न वो बहिनी, हमू मन थोकिन मेला घूम लेबो, मांग के खाथन ओ. जेन लोगन ओखर बात मा पिघल जाथें, मानो पूरा लूटा जाथें. जइसे ही पइसा सकलाथे, ओखर बाद जेकर हाथ मा पट्टी बँधे रहिथे तेकर हाथ तुरते ठीक हो जाथे अउ दारू पी के घोंडे रहिथें. देवरनिन मन घूम-घूम के चाट गुपचुप खाथे अउ मेला के आनंद लेथें. बड़े-बड़े डनचघा मन आथें. नान -नान रिंग मा बुलक जाथें. पतला डोरी म रेंग के दिखाथें.

संगवारी हो ! हमर राजिम मेला आहू त येखर मन के बनेच दुरिहा रइहू, नहीं ते लुटा जाहू. फेर आये बर झन बिसराहू.

" गहना जेवर के बने, रखहू जम्मो ध्यान.
चोर लुटेरा घूमथे, लेगय लूट समान. "

जेन कुछू जिनिस लेन-देन करना हे; खास राजिम के लोगन मन आखरी दिन मा जाथें. नाना प्रकार के जिनिस ले के आथें अउ सस्ता मा पाथें, काबर की दुकानदार मन ला जल्दी अपन घर जाना रहिथें त कम रेट म बिसाथे तेला बासी मेला घलो कहिथे. ये हर शिवरात्रि के दू दिन तक रहिथे. पन्द्रह दिन के कुम्भ के मेला बड़ा ही आनंदमय रहिथे. समय हर अतेक जल्दी-जल्दी निकलथे पता ही नइ चले. मोला तो अइसे लागथय कि हमर राजिम मेला ह महानदी, पैरी अउ सोंदूर नहीं, भलुक जाति, धर्म अउ सम्प्रदाय के संगम भराय अमीर-गरीब सबके मेला आय. जय जोहार.

" पावन राजिम धाम के, महिमा अपरंपार.
दूनों हाथ ल जोड़ के, करथँव मँय जोहार. "

खेलो होली

रचनाकार- महेंद्र कुमार वर्मा, भोपाल



रंगों की भर लाओ झोली.
मिलजुल के सब खेलो होली.

नाचो-गाओ, खुशी मनाओ ,
करो सभी के संग ठिठोली.

करो रंग की खूब लड़ाई ,
पर अपनी मीठी हो बोली.

खुशी रंग बरसाते आई ,
अपनी हुड़दंगों की टोली.

जब आई गुजियों की थाली,
टूट पड़े सारे हमजोली.

प्यारी तितली

रचनाकार- महेंद्र कुमार वर्मा, भोपाल



प्यारी तितली जब तुम आती,
इस बगिया को तुम महकाती,
रंग-बिरंगे पंख सुहाने,
तितली बोल कहाँ से लाती.

भँवरे राजा शोर मचाते,
कोयल मीठे गीत सुनाती,
तितली जब आती बगिया में,
सब फूलों पे वो इठलाती.

तितली की है शान निराली,
फूलों पे झूमे मतवाली,
बच्चे जब आते बतियाने,
भागे तितली भोली-भाली.

बन्दर मामा आए हैं

रचनाकार- महेन्द्र कुमार वर्मा, भोपाल



बन्दर मामा आए हैं,
लड्डू पेड़ा लाए हैं,
थोड़ा हमें खिलाएंगे,
बाकी खुद खा जाएंगे.

तोड़ेंगे मीठे अमरुद,
खाएंगे पहले वो खुद
हमको खूब खिलाएंगे,
फिर वापस घर जाएंगे.

नभ को चमकाओ

रचनाकार- महेंद्र कुमार वर्मा, भोपाल



आते-जाते खुशी मनाओ,
दुख दुनिया से दूर भगाओ.

जीवन की बगिया में प्यारे,
खुशियों वाले फूल खिलाओ.

चन्दा जब गायब हो जाए,
तारों से नभ को चमकाओ.

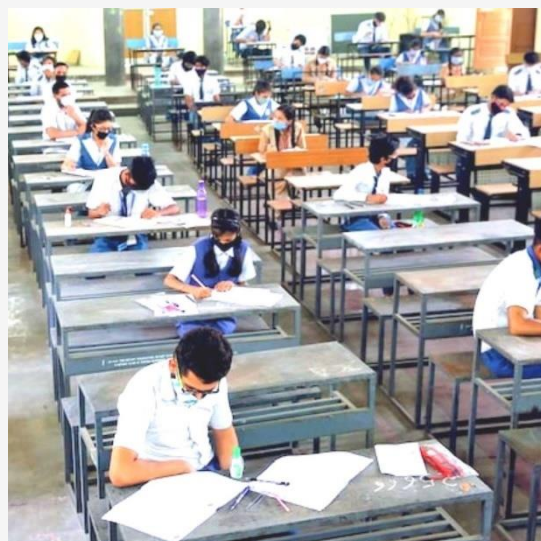
रंग-बिरंगी इस दुनिया से,
काँटों के जंजाल मिटाओ.

बनो अजनबी नफरत जी से,
उससे हरदम बैर बढ़ाओ.

परीक्षा कक्ष में ध्यान रखें

रचनाकार- टीकेश्वर सिन्हा " गब्दीवाला", बालोद

शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य उन विद्यार्थियों के लिए बहुत महत्वपूर्ण होता है, जिनकी परीक्षाएँ बिल्कुल करीब हों. स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मानसिकता का संयोग बनता है. समय के प्रति सजग रहने की नितांत आवश्यकता होती है. विद्यार्थी को सकारात्मक सोच व निर्भीकता के साथ सभी आवश्यक सामग्री- प्रवेश-पत्र, स्वच्छ रूमाल, पेन, कम्पास बॉक्स लेकर अपनी शाला गणवेश में ही परीक्षा कक्ष में प्रवेश करना चाहिए. इनके अतिरिक्त कागज व अन्य कोई सामग्री न हो.



परीक्षा कक्ष में उन्हें निम्न बातों का विशेष ध्यान रखना बहुत जरूरी है.

- (1) टेबल पर अंकित अपना अनुक्रमांक देख कर अपने प्रवेश-पत्र के अनुक्रमांक से अवश्य मिला लें. सुनिश्चित करें कि जेब में कोई कागजात अथवा अन्य सामग्रियाँ तो नहीं हैं.
- (2) अपनी जगह पर बैठने से पहले आसपास जाँच लें कि अनावश्यक कागज व पालीथिन वगैरह तो नहीं हैं.
- (3) अपने टेबल की सीट या उसके अगल-बगल देख लें कि कुछ लिखा तो नहीं है. यदि ऐसा कुछ हो तो पर्यवेक्षक को अवगत करा दें.
- (4) उत्तर पुस्तिका मिलते ही देख लें कि उत्तर पुस्तिका साफ-सुथरी हो व कटी-फटी न हो.
- (5) उत्तर पुस्तिका में निर्धारित स्थान पर अनुक्रमांक, कक्षा, विषय आदि समस्त जानकारी शांति व धैर्यपूर्वक लिखें.
- (6) अपने पास प्रवेश-पत्र, पेन-पेंसिल व स्केल के अतिरिक्त कुछ न रखें.

- (7) प्रश्नपत्र मिलने पर उसकी जाँच अवश्य कर लें. पृष्ठ व प्रश्न संख्या का मिलान कर लेवें. प्रश्न पेपर के प्रथम पृष्ठ के ऊपरी भाग पर अपना अनुक्रमांक लिखें.
- (8) सर्वप्रथम पूरे प्रश्नपत्र का ध्यानपूर्वक अवलोकन करें. शांति व एकाग्रता बनाए रखें. निर्भीक व निश्चिंत रहें.
- (9) समय का विशेष ध्यान रखें. निर्धारित समय में सभी प्रश्न हल हो जाने चाहिए. आप जिन प्रश्नों के उत्तर के प्रति पूर्णरूपेण आश्वस्त हैं उसे सर्वप्रथम हल करें. इसके पश्चात अन्य प्रश्न हल करें.
- (10) वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर क्रमांक लिखते हुए वैकल्पिक सही उत्तर को भी लिखें.
- (11) रिक्त स्थान की पूर्ति करें या सही जोड़ी बनाइए, जैसे प्रश्नों का उत्तर लिखने के पश्चात एक लाइन खींचें. वह लाइन उत्तर की समाप्ति की द्योतक होती है.
- (12) प्रत्येक प्रश्न का उत्तर पूर्ण होने के बाद एक लाइन खींचें.
- (13) किसी प्रश्न का उत्तर उसके निर्धारित अंक के आधार पर ही लिखें, अर्थात् अंक के अनुसार ही लघु या दीर्घ उत्तर लिखें.
- (14) आवश्यकता पड़ने पर ली गयी अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका पर सभी जानकारियाँ लिखें. इसे एक धागे से मुख्य उत्तर पुस्तिका के साथ अच्छी तरह बाँध दें. परीक्षा समय समाप्ति के पाँच-दस मिनट पूर्व अपने लिखे उत्तरों की जाँच एक बार अवश्य कर लें.
- (15) समय समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका को पर्यवेक्षक को सौंप दें. परीक्षा कक्ष से शांतिपूर्वक व क्रमबद्ध बाहर निकलें.

परीक्षा के दौरान सकारात्मक विचार रखें, निर्भीक रहें, शांत रहें, खुश रहें. मेरी शुभेच्छाएँ आप सबके साथ हैं.

दो कुलों का मान होती है बेटियां

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी, महाराष्ट्र



दो कुलों का मान होती है बेटियां
पूरे घर की जान होती है बेटियां
घर परिवार आबाद करती है बेटियां
थम जाता संसार अगर ना होती बेटियां

घर की जान होती है बेटियां
पिता की आन बान शान होती है बेटियां
बेटों से कम नहीं होती है बेटियां
पिता का गुमान होती है बेटियां

मां बहू भाभी पत्नी बनकर सेवा करती है बेटियां
खुद अपमान सह दूसरों को मान देती है बेटियां

कमियों को भुला जो मिले उसमें खुश है बेटियां
हर हाल में खुश हो मुस्कुराती रहती है बेटियां

अपनी पहचान मिटा दूसरों की पहचान अपनाती है बेटियां
बहू बन सास ससुर की सेवा करती है बेटियां
सुनो जग वालों धन मन हृदय सब कुछ है बेटियां
लक्ष्मी सरस्वती पार्वती का रूप है बेटियां

बेटियां

रचनाकार- श्रीमती प्रियंका श्रीवास, बस्तर

दुनिया की खुशियां,
जादू कि गुड़िया,
दवाई की पुड़िया,
होती है बेटियां.

फूलों की कलियां,
मिश्री की डालियां,
आशा की गलियां,
होती है बेटियां.

रोशन करता है बेटा,
एक ही घर को,
दो -दो घरों की,
लाज रखती है बेटियां.
पापा कि परिया,
मां कि दुनिया,
होती है बेटियां.



योगदान है

रचनाकार- श्रीमती प्रियंका श्रीवास, बस्तर



बड़ा ही योगदान है
स्कूल में तख्ते का,
परीक्षा में परचे का,
अव्वल में दर्जे का.

बड़ा ही योगदान है,
मोबाइल में नेट का,
क्रिकेट में बेट का,
प्रोग्राम में स्टेज का,
पिचर में सेट का,
बड़ा ही योगदान है.

आफिस में फ़ाइल का,
मच्छर के लिए क्वाइल का,
सेल्फी के लिए स्माइल का,

बड़ा ही योगदान है.

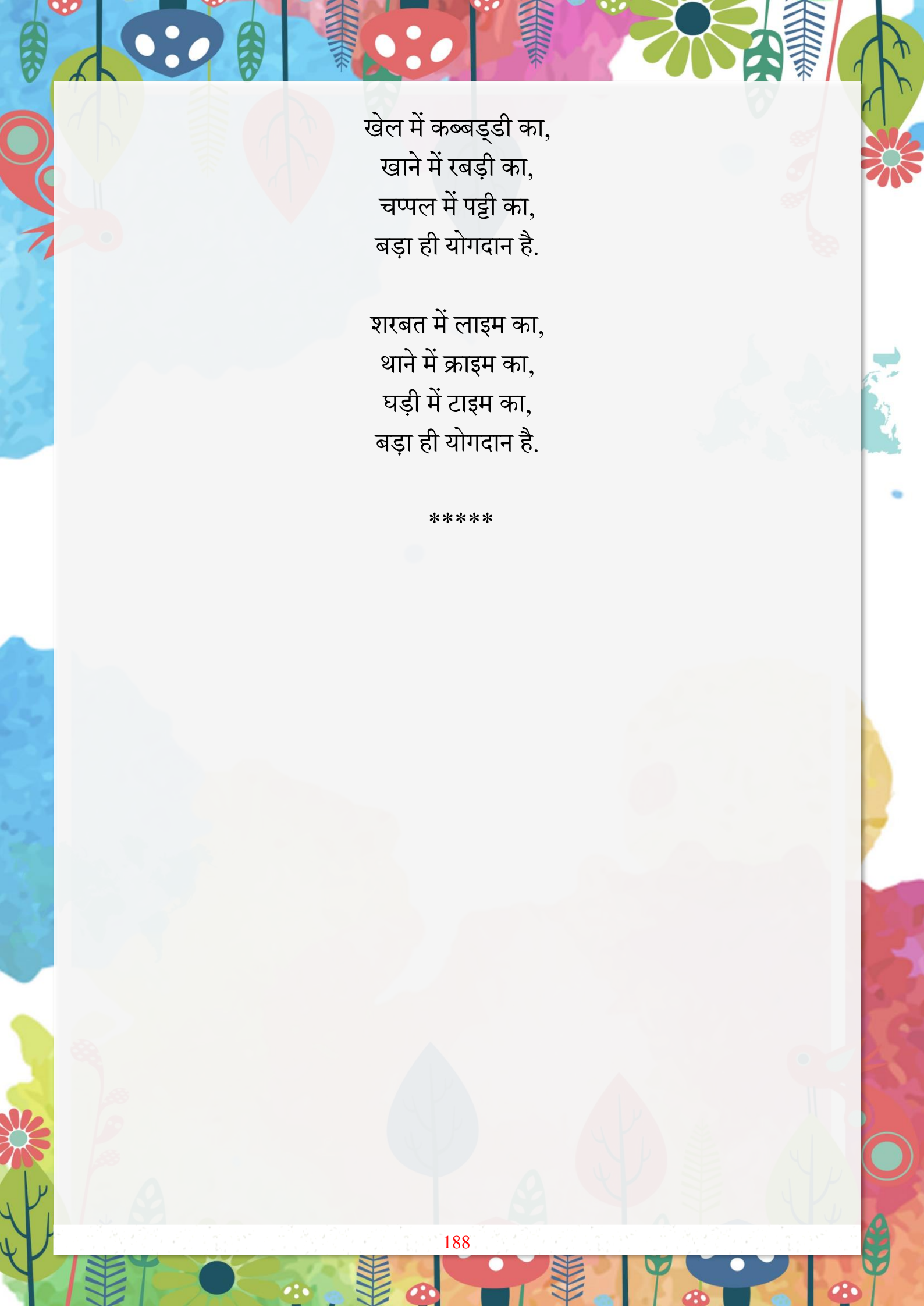
सिलेंडर में गैस का,
बिजली में फेस का,
जेब में कैस का,
बड़ा ही योगदान है.

होटल में बिल का,
सीने में दिल का,
दीवाल पर कील का,
बड़ा ही योगदान है.

रसोई में कढ़ाई का,
बच्चों में पढ़ाई का,
खेल में लड़ाई का,
बड़ा ही योगदान है.

चाय में पत्ती का,
इस्टो में बत्ती का,
सोने में रत्ती का,
बड़ा ही योगदान है.

रसोई में मसाले का,
कप के साथ प्याले का,
मकड़ी के साथ जाले का,
बड़ा ही योगदान है.



खेल में कब्बड्डी का,
खाने में रबड़ी का,
चप्पल में पट्टी का,
बड़ा ही योगदान है.

शरबत में लाइम का,
थाने में क्राइम का,
घड़ी में टाइम का,
बड़ा ही योगदान है.

प्यारी गाय

रचनाकार- सोनल मंजू श्री ओमर, गुजरात



गाय हमारी माता है.
इससे जन्मों का नाता है.
जो कोई दूध पिए इसका,
वह जल्दी स्वस्थ हो जाता है.

चार-चार है इसके पैर.
लाड़-लड़ाए करे न बैर.
चरते-चरते न जाने,
करती रहती कितनी सैर.

नाम है इसका प्यारी गाय.
दूध से इसके बनती चाय.
आए जो जरा भी आलस,
सबकी सुस्ती दूर भगाए.

बनकर रहती सबकी दुलारी. भी
इनका मूत्र, गोबर भी हितकारी.
खाओ घी, दूध, दही, मक्खन,
इसमें गुण है अतिशय भारी.

रंग रंगीली आई होली

रचनाकार- सोनल मंजू श्री ओमर, गुजरात



रंग रंगीली आई होली.
सबके मन को भाएँ होली.
पकड़ पकड़के सबको रंग दो,
बुरा ना मानो हैप्पी होली!
रंग रंगीली आई होली.

रोज-रोज न मौका मिलेगा.
न आज कोई बहाना चलेगा.
आऊँगी न तेरी बातों में,
क्योंकि हूँ नहीं मैं इतनी भोली!
रंग रंगीली आई होली.

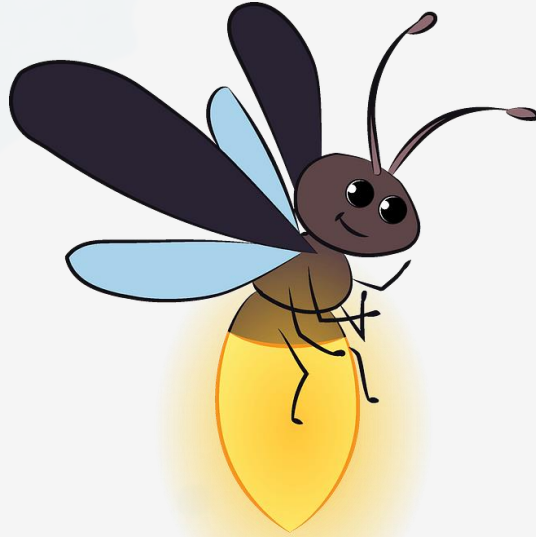
तरह-तरह का रंग है चोखा.
रहे ना आज कोई भी सूखा.
सबको पकड़ के टब में डुबो दो,

कर लो थोड़ी हँसी ठिठोली!
रंग रंगीली आई होली.

होली में गुझिया, पापड़ खाकर.
मिलो सभी को गले लगाकर.
रंगों सभी को प्रेम के रंग में,
ताकि बनी रहे हमजोली!
रंग रंगीली आई होली.

जुगनू

रचनाकार- सोनल मंजू श्री ओमर, गुजरात



पेड़ की छाल के भीतर अपने अंडे से एक बहुत ही छोटे से प्यारे से कीड़े ने छोटे-छोटे से धागे जैसे पतले अपने हाथ-पैरों को बाहर निकाला. अपने पतले, लंबे, स्लेटी रंग की देह से वह खिसकते हुए पेड़ की छाल से बाहर आया. अपनी बड़ी-बड़ी आँखों से उसने रंग बिरंगी दुनिया देखी. सब चीजें कितनी बड़ी और सुंदर हैं. जंगल का वह दृश्य उसकी बड़ी-बड़ी आँखों में समा ही नहीं रहा था. वह हर चीज को पास से देखना और छूना चाहता था. पर वो वहाँ तक पहुँचेगा कैसे? - उसने सोचा. उसने अपने शरीर को थोड़ा हिलाया. उसे महसूस हुआ कि कुछ है जो उसके शरीर से विमुख हो रहा है. उसने तेजी से अपने आप को झकझोरा उसके छोटे-छोटे से पारदर्शी पंख जो कि लसलसाहट से उसके शरीर पर ही चिपके हुए थे, वो अलग हो गए. और ये क्या वो अपने पंख फड़फड़ाने लगा. अब वह हल्की-हल्की सी उड़ान भरकर फिर से उसी छाल पर बैठ जाता. पंख पाकर उसे अपार खुशी हो रही थी.

अब वह एक भी क्षण रुकना नहीं चाहता, उसकी आँखों में जितना समा सके, उस पूरी दुनिया को वह देख लेना चाहता था. उसने उड़ान भरी. अब वह एक-एक पेड़, एक-एक शाख, पत्ते-पत्ते, फूल-फूल पर जाकर सब को करीब से देखता है. घूमते-घूमते दिन ढल गया, सांझ हो गई. धीरे-धीरे अंधेरा होने लगा. देखते-ही-देखते कुछ ही देर में घुप्प रात हो गई. यह दृश्य उसके लिए नया था, उसे समझ नहीं आया कि यह क्या हो गया? वह डरने लगा. जिन पेड़, पौधों, फूल, पत्तियों

को देखकर वो खुश हुआ था, अब वही सब उसे डरा रहे थे. अलग-अलग आकृतियां उसे विकराल व राक्षस जैसी लग रही थी. जंगली जानवरों की आवाजें, उल्लूओं की चीखें, झींगुर व अन्य कीड़े-मकोड़ों की टर्-टर्, चमगादड़ों की हलचल ने उसे इतना ज्यादा डरा दिया कि वह ज़ोर-ज़ोर से रोने लगा. वह तेज-तेज चीखने लगा, "मुझे डर लग रहा है, मुझे मत डराओ. चले जाओ यहाँ से."

उस नन्हें से, प्यारे से कीड़े की चीखें सुनकर एक छोटी सी परी अपनी लालटेन और जादुई छड़ी के साथ उसके पास आई. "तुम क्यों रो रहे हो? उस परी ने उससे पूछा.

मुझे डर लग रहा है.

क्यों? तुम्हे डर क्यों लग रहा है? ये जंगल आखिर तुम्हारा ही तो है!

अंधेरे में ये बड़ी-बड़ी आकृतियाँ मुझे भयावह लग रहीं हैं. मुझे बार-बार भ्रम हो रहा है कि जैसे ये सब कोई राक्षस है!

तुम डरो मत! यहाँ कोई राक्षस नहीं है. मेरा विश्वास करो.

पर मैं छोटा हूँ ना, इसीलिए मुझे डर लग रहा है.

छोटी तो मैं भी हूँ. पर देखो...मैं क्या डर रही हूँ?

तुम्हारे पास तो ये लालटेन है. तुम जहाँ जाती हो रोशनी हो जाती होगी, इसीलिए तुमको भ्रम नहीं होता होगा और डर भी नहीं लगता. पर मेरे पास ये नहीं है इसीलिए मुझे ये सब विकराल लग रहा है.

ठीक है, मैं अपने जादू से इस समस्या को हल कर देती हूँ. तुम अपनी आँखें बंद करो.

कीड़े ने अपनी आँखें बंद कर ली. तब परी ने अपनी जादुई छड़ी उसपर चलाकर जादू किया.

अब तुम अपनी आँखें खोल सकते हो. परी ने कहा.

उस प्यारे से कीड़े ने अपनी आँखें खोली.

अब तुमको बिल्कुल भी डरने की जरूरत नहीं है. अब तुमको कभी डर नहीं लगेगा. आज से हमेशा रोशनी तुम्हारे साथ रहेगी और तुम हमेशा जगमगाओगे. इसीलिए लोग तुम्हें जुगनू पुकारेंगे. मुस्कराकर परी ने कहा और अपनी लालटेन व जादुई छड़ी को लेकर वहाँ से उड़ के चली गई. पर यह क्या उस कीड़े ने देखा कि अभी भी उसके आसपास उजाला है. "यह कैसे?" कीड़े ने अपने मन में विचार किया. तब उसने पाया कि उसके शरीर के पिछले भाग में पंखों के नीचे से प्रकाश फूट रहा है. वह यह देखकर बहुत खुश हुआ. अब वो जहाँ भी जाता वहाँ उजाला हो जाता. अब उसे किसी भी आकृति से डर नहीं लग रहा था. अब वह बिना किसी डर के दिन की तरह रातों में भी विचरण करने लगा. जुगनू ने मन-ही-मन उस नन्ही सी परी को अनेकों धन्यवाद दिए.

कद्र

रचनाकार- सोनल मंजू श्री ओमर, गुजरात

आकांक्षा और कोमल दो सहेलियाँ हैं। एक दिन दोनों कुछ पैसे लेकर मॉल जाती हैं। दोनों को ही नए कपड़े खरीदने हैं।

अचानक से आकांक्षा कहती है - "कोमल! कोमल! ये ड्रेस देखो! सुंदर है ना? मैं ये ड्रेस खरीदना चाहती हूँ, पर मेरे पास पर्याप्त पैसे नहीं हैं।"

"ये क्या कह रही हो आकांक्षा? ये कितनी बेकार ड्रेस है! बिल्कुल भयानक सी! मैं तो इसे बिल्कुल न खरीदती, बल्कि देखती भी नहीं।" कोमल ने मुँह बनाते हुए कहा।

"हम्म, ठीक है।" आकांक्षा ने उदासी भरे धीरे स्वर में कहा।

अचानक से कोमल ने आश्चर्य से कहा - "ओह माय गॉड! वो ड्रेस देखो बहुत सुंदर है। चलो उसे खरीद लेते हैं। पर इसकी कीमत तो देखो (प्राइस टैग देखते हुए), ये तो बहुत महंगा है!"

इस बार आकांक्षा ने कहा - "ये क्या कह रही हो तुम? ये कितनी बकवास ड्रेस है! बिल्कुल गन्दी-सी! बल्कि मैं तो इसे देखना भी नहीं चाहती।"

"ठीक है, ठीक है!" कोमल ने आकांक्षा को उदासी से घूरते हुए कहा।

अब आकांक्षा भी उदास थी और कोमल भी उदास थी। दोनों बिना नए कपड़े खरीदे घर वापस आ गए। लेकिन अब उन्हें सबक मिल चुका था कि उन्हें एक दूसरे की पसन्द की कद्र करनी चाहिए।



मन

रचनाकार- कुमारी सुषमा बग्गा, रायपुर



मेरा यह चंचल मन
चंचल मन ,चंचल मन
घूम रहा यहाँ - वहाँ
कभी सोचकर घबराता मन,
यह सोच कर खुश होता मन,
ये चंचल मन की चंचल बातें
मन की भाषा वो ही जानें
कब किसकी वो सुनता हैं
कभी शांत लहरों की तरह
कभी उथल - पुथल करता हैं
ये चंचल मन की चंचल बातें
मेरा यह चंचल मन
जैसे हिरनी डोले वन
मेरा यह चंचल मन.

बच्चों में बढ़ती मोबाइल की लत: जिम्मेदार कौन

रचनाकार- स्नेहा सिंह, नोएडा



तन्वी बेटा शरारत मत करो.' दिव्या ने चिल्ला कर चार साल की बेटी से कहा. तन्वी घर में इधर-उधर दौड़ रही थी. दिव्या अपने काम में व्यस्त थी. तन्वी दो बार रसोई में आ कर कह गई कि 'मम्मा चलो थोड़ी देर मेरे साथ खेलो, मुझे गार्डन ले चलो.' तन्वी के कहने पर दिव्या का मन तो हुआ, पर रसोई का काम अभी बाकी था. अब वह रसोई का काम छोड़ कर बेटी को घुमाने ले जाती तो स्वाभाविक है कि घर के सभी लोग खाए बगैर ही रह जाते. इसीलिए तन्वी शरारत कर रही थी. बेटी शरारत न करे, इसके लिए दिव्या ने उसे मोबाइल थमा दिया. दस सेकेंड पहले घर में जो शोरशराबा कर रही थी, वह तन्वी अब एकदम शांत हो गई. तन्वी चुप होकर सोफे पर लेटे-लेटे मोबाइल देखने लगी. ऐसा अब अक्सर होने लगा. तन्वी शरारत करती, कहीं बाहर चलने की जिद करती तो उसे मोबाइल दे दिया जाता.

धीरे-धीरे तन्वी को मोबाइल की लत पड़ गई. अब वह जानबूझकर शरारत करने लगी, जिससे मम्मी उसे मोबाइल दे दें. हम जितना समझते हैं, बच्चे उससे कहीं अधिक स्मार्ट हो गए हैं. वह बातें कैसी भी करें, पर माँ-बाप के व्यवहार को परखते हैं. जिस तरह कोई बच्चा शरारत करने के बाद माँ-बाप की डांट न सुननी पड़े, इसलिए रोने लगता है अथवा बिना वजह दुलराने लगता है,

जिससे मम्मी या पापा पिघल कर उस पर खीझें न. एकदम छोटी उम्र में ही बच्चे समझने लगते हैं कि अगर वह ऐसा करेंगे तो मम्मी-पापा हँसने लगेंगे और उन्हें डांटेंगे नहीं.

दूसरी ओर आरव का अलग ही मामला था. आरव के पैरेंट्स अक्सर रात को बेडरूम में मोबाइल ले कर उसमें कुछ देखते रहते थे. तब आरव अकेला खेलने के बजाय मम्मी-पापा को अटेंशन पाने के लिए कुछ न कुछ ऐसा करता, जिससे वे मोबाइल एक ओर रख कर उसे अटेंशन दें. अगर रात को उसके मम्मी या पापा फोन पर किसी से बात कर रहे होते तो आरव जोरजोर से गाना गाने लगता, चिल्लाने लगता अथवा शरारत करने लगता. पूरे दिन मम्मी-पापा साथ न हों और रात को मिलें और उस पर ध्यान देने की बजाय मोबाइल पर सर्फिंग में लग जाते तो आरव बवाल कर देता. पूरे दिन माँ-बाप से अलग रह कर रात को तो अपने पैरेंट्स का साथ चाहिए ही, इसमें कुछ गलत भी नहीं है. आरव अटेंशन के लिए ऐसा कर रहा है, इसकी जानकारी होते ही उसके पैरेंट्स ने अपने बेडरूम को नो सोशल मीडिया और नो मोबाइल जोन बना दिया.

आप को देख कर ही बच्चे सीखते हैं

प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी ने परीक्षा पर चर्चा करते हुए एक बात कही थी कि 'बच्चों के लिए घर में एक नो गैजेट जोन बनाओ. अब बात यह है कि नो मोबाइल जोन या नो गैजेट जोन यह तो ठीक है, क्योंकि घर के हर कोने में गैजेट नहीं होता. पर हमारी आदतें घर के कोने कोने को गैजेट फ्रेंडली बनाती हैं. हमें सभी काम को छोड़ कर मोबाइल सर्फिंग की आदत पड़ गई है. अक्सर हम काम छोड़ कर या काम खत्म होते ही सर्फिंग करने बैठ जाते हैं. जिस तरह पान मसाले या सिगरेट की लत लगती है, उसी तरह मोबाइल की लत लग चुकी है. भले ही कोई चीज अपने काम की न हो, हम उसमें अपना समय बरबाद करते रहते हैं. सभी को ऐसा करते देख हमारे बच्चे भी यही सब सीखते हैं. माँ-बाप को मोबाइल का उपयोग करते देख उनके अंदर भी जिज्ञासा जागती है कि इसमें ऐसा क्या है, जो मम्मी-पापा इसमें देखते रहते हैं. परिणामस्वरूप कम उम्र में ही बच्चा पैरेंट्स के हाथ से मोबाइल छीनने की कोशिश करने लगता है. अधिकतर मामलों में तो पैरेंट्स ही बच्चों को शांत कराने, खिलाने या अपना काम निपटाने के लिए उनके हाथ में मोबाइल थमा देते हैं. इसी तरह धीरे-धीरे बच्चे भी मोबाइल के आदी बन जाते हैं. उनमें आधी शरारत इस तरह से तो आधी शरारत मोबाइल में देख कर डेवलप होती है.

ज्यादातर पैरेंट्स की यह शिकायत होती है कि मेरा बच्चा मोबाइल का उपयोग बहुत ज्यादा करता है. उसका पढ़ाई में बिलकुल मन नहीं लगता. यह शिकायत करने के पहले बच्चा ऐसा क्यों करता है, इसका कारण जानें. आप पता करें कि बच्चा इसका आदी क्यों बना है. कहीं इसके

पीछे आप ही तो जिम्मेदार नहीं हैं? यह सीधा-सादा सवाल खुद से पूछें और इसका जवाब भी खुद से ही पाएँ. बच्चों की मोबाइल देखने की आदत और जिद के पीछे कहीं न कहीं हम खुद जिम्मेदार होते हैं. एक उम्र में अपने आराम के लिए बच्चों को मोबाइल देते समय हम नहीं सोचते कि आगे चल कर यह चीज दोनों के लिए खतरनाक हो सकती है. भले ही आप मोबाइल के अंदर बच्चों को राइम देखने के लिए देती हैं, पर यह आदत गंदी है. क्योंकि कुछ समय तक प्रेम से राइम देखने वाला बच्चा समय के साथ शाट्स और रील भी देखने लगता है. और फिर कुछ दिनों बाद गेम खेलने लगता है. और जब तक आपकी समझ में आता है कि उसकी यह आदत उसकी पढ़ाई में समस्या पैदा कर रही है, तब तक देर हो चुकी होती है. बच्चों की मोबाइल की लत छुड़ाना लोहे के चने चबाने जैसा मुश्किल हो जाता है. इस प्रोसेस में पहले तो आप को बच्चे को बगावती होते देखना पड़ेगा, उसके बाद उनके कांसंट्रेशन को घायल होते देखना पड़ेगा. उनका व्यवहार भी बदल जाएगा और इसका उनकी पढ़ाई पर भी असर पड़ेगा.

हम सभी बच्चों के अधिक मोबाइल के उपयोग की शिकायत तो कर लेते हैं, पर उन्हें मोबाइल से दूर कैसे रखा जाए, यह जटिल प्रश्न है. अब समझ लीजिए कि बच्चों में मोबाइल का क्रेज कम करने के लिए चार से पाँच साल की उम्र से ही उन्हें इससे दूर रखना जरूरी है. उन्हें इसकी लत लग गई और दस साल से अधिक की उम्र के बाद उन्हें इससे दूर करने की कोशिश की गई तो वे बगावती हो सकते हैं. अगर ऐसा नहीं होने देना चाहती हैं तो बच्चे को उसकी मनपसंद किसी अन्य ऐक्टिविटी में व्यस्त रखें. उससे घर का थोड़ा काम कराएँ. मात्र होमवर्क या पढ़ाई कराने के साथ उसके मनपसंद दूसरा काम कराने में उसका मन लगाने की कोशिश करें. सब से बड़ी बात आप खुद भी बच्चों के सामने मोबाइल का उपयोग करना टालें. अगर आप बच्चे के सामने मोबाइल का उपयोग नहीं करेंगी तो आप को देखकर बच्चा भी यह बात सीखेगा. अगर आप उसके सामने मोबाइल ले कर बैठेंगी तो स्वाभाविक है, वह भी वैसा ही करेगा. इसलिए जहां तक संभव हो मोबाइल से दूर ही रहें. साथ मिल कर किया गया प्रयास हमेशा सफल होता है, इसलिए साथ मिल कर प्रयास करें.

युवा शक्ति प्लस बुजुर्ग अनुभव

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी, महाराष्ट्र



भारत में बड़े बुजुर्गों का मान सम्मान, की परंपरा लंबे समय से रही है. परंतु वर्तमान में पश्चिमी संस्कृति के प्रभाव में बुजुर्गों के मार्गदर्शन का कमजोर होना देखा जा सकता है. नए भारत में युवाओं की संख्या बढ़ रही है इसलिए आज हम इस आर्टिकल के माध्यम से युवा शक्ति और हमारे बड़ों, अनुभवी लोगों के बीच अंतर पीढ़ी गत सामंजस्य पर चर्चा करेंगे.

विश्व में भारत को युवाओं का देश कहा जाता है. हमारे देश में 35 वर्ष की आयु तक के 65 करोड़ युवा हैं. अर्थात् हमारे देश में अथाह श्रमशक्ति उपलब्ध है. आवश्यकता है आज हमारे देश की युवा शक्ति को उचित मार्ग दर्शन देकर उन्हें देश की उन्नति में भागीदार बनाने की, उनमें अच्छे संस्कार, उचित शिक्षा एवं प्रौद्योगिक विशेषज्ञता विकसित करने की, उन्हें बुरी आदतों जैसे- नशा, जुआ, हिंसा इत्यादि से बचाने की. चरित्र निर्माण देश, समाज की, उन्नति के लिए परम आवश्यक है. दुश्चरित्र युवा न तो अपना भला कर सकता है, न समाज का और न ही अपने देश का. देश के निर्माण के लिए, देश की उन्नति के लिए, देश को विश्व के विकसित राष्ट्रों की पंक्ति में खड़ा करने के लिए युवा वर्ग को मेधावी, श्रमशील, देश-भक्त और समाज सेवा की भावना से ओत प्रोत होना होगा.

आज विश्व में अधिकतर युवा विलासिता और सुख-सुविधा की तलाश में अपना देश छोड़कर दूसरी जगह जा रहे हैं, जिससे राष्ट्र निर्माण में दिक्कतें आ रही हैं. युवा किसी भी राष्ट्र की शक्ति

होते हैं और विशेषकर भारत जैसे राष्ट्र की ऊर्जा तो युवाओं में ही निहित है. ऐसे में अगर युवाओं का भारी संख्या में प्रवासन होता है तो इससे उस राष्ट्र की अक्षमता प्रदर्शित होती है, जो अपने नौजवानों को पर्याप्त साधन और अवसर नहीं दे सकता बल्कि इससे देश की विकास का सशक्त आधार भी समाप्त हो जाता है.

इसलिए युवाओं को चाहिए कि अपनी क्षमता अपने देश की सेवा में लगाएँ. वर्तमान सदी में युवा वर्ग मानव सभ्यता के ऐसे मुकाम पर खड़ा है, जब मानव विकास गति का रथ जेट विमान की गति से भाग रहा है. विकास की तीव्र गति जहाँ अनेक उपलब्धियाँ सुविधाएँ और चमत्कार लेकर आ रही है, वहीं युवा वर्ग के लिए तीव्र गति से भागने की क्षमता पा लेने की चुनौती भी प्रत्यक्ष है. यदि युवा वर्ग इतना क्षमतावान है कि वह तेज़ी से हो रहे परिवर्तन को समझ सके, उसे अपना सके, नयी खोजों नयी तकनीकों की जानकारी प्राप्त कर अपनी कार्यशैली परिवर्तित कर सके, तो ही वह अपने जीवन को सम्मानजनक एवं सुविधा संपन्न बना सकता है, और विश्व स्तर पर अपने अस्तित्व को बनाये रख सकता है. प्रतिस्पर्धा की कड़ी चुनौतियों को स्वीकार करना ही सुरक्षित भविष्य की गारंटी है. आज के युवा वर्ग को विश्वस्तरीय प्रतिस्पर्धा में शामिल होना आवश्यक हो गया है.

आज के युवा वर्ग को अपने विद्यार्थी जीवन में अध्ययनशील, संयमी, चरित्र निर्माण के लिए आत्मानुशासन लाकर अपने भविष्य को उज्ज्वल बनाने के प्रयास करने चाहिए. जिसके लिए समय का सदुपयोग आवश्यक है. विद्यालय को मस्ती की पाठशाला समझ कर समय गँवाने वाले युवा स्वयं अपने साथ अन्याय करते हैं, जिसकी कीमत उन्हें जीवन भर चुकानी पड़ती है. बिना शिक्षा के कोई भी युवा अपने जीवन को सुचारू रूप से चलाने में अक्षम रहता है. चाहे उसके पास अपने पूर्वजों का स्थापित कारोबार ही क्यों न हो. या वह किसी राजनयिक या प्रशासनिक अधिकारी की संतान ही क्यों न हो. इसी प्रकार बिना शिक्षा के जीवन में कोई भी कार्य, व्यापार, व्यवसाय उन्नति नहीं कर सकता. यदि कोई युवा अपने विद्यार्थी जीवन के समय का सदुपयोग कर अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लेता है तो मनोरंजन, मस्ती और ऐश के लिए पूरे जीवन में भरपूर अवसर मिलते हैं. वर्तमान समय में युवा विद्यार्थियों को रोजगार परक शिक्षा पर ध्यान देना चाहिए, अर्थात् प्रौद्योगिकी से सम्बंधित विषयों में विशेषज्ञता प्राप्त करनी चाहिए. जो देश की उन्नति में योगदान देने के साथ-साथ रोजगार की असीम संभावनाएं दिलाती है.

युवा विकास के लिए सकारात्मक शक्ति हो सकते हैं जब उन्हें वह ज्ञान और अवसर प्रदान किए जाते हैं जिनकी उन्हें आवश्यकता होती है. आज, 15 से 24 वर्ष की आयु के 1.2 अरब युवा हैं,

जो वैश्विक आबादी का 16 प्रतिशत है. 2030 तक - 2030 एजेंडा बनाने वाले सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) के लिए लक्ष्य तिथि - युवाओं की संख्या 7 प्रतिशत बढ़कर लगभग 1.3 बिलियन होने का अनुमान है, हमारे ग्रह पर आधे लोग 30 या उससे कम उम्र के हैं, और यह 2030 के अंत तक 57 फ़ीसदी तक पहुंचने की उम्मीद है. सर्वेक्षण से पता चलता है कि 67 फ़ीसदी लोग बेहतर भविष्य में विश्वास करते हैं, जिसमें 15 से 17 वर्ष के बच्चे इस बारे में सबसे अधिक आशावादी हैं. अधिकांश लोग इस बात से सहमत हैं कि राजनीति में उम्र का संतुलन गलत है. सभी आयु समूहों के दो तिहाई (69 फ़ीसदी) से अधिक लोग इस बात से सहमत हैं कि नीति विकास/परिवर्तन में युवा लोगों के लिए अधिक अवसर राजनीतिक व्यवस्था को बेहतर बनाएंगे. विश्व स्तर पर, केवल 2.6 फ़ीसदी सांसद 30 वर्ष से कम उम्र के हैं, और इनमें से 1 फ़ीसदी से भी कम युवा सांसद महिलाएँ हैं.

सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) को प्राप्त करने के लिए सभी पीढ़ियों के लिए कार्रवाई की आवश्यकता है और किसी को पीछे नहीं छोड़ना है. यह अंतर-पीढ़ीगत एकजुटता, विशेष रूप से आयु का अंतर, जो युवा और वृद्ध व्यक्तियों को प्रभावित करता है, के लिए कुछ बाधाओं पर जागरूकता बढ़ाएगा, जबकि समग्र रूप से समाज पर हानिकारक प्रभाव पड़ेगा. देश के युवाओं की आवाज, कार्यों और उनके द्वारा किए गये आविष्कार को देश-दुनिया तक पहुँचाना है.

मनु बिटिया

रचनाकार- श्रीमती प्रियंका श्रीवास, बस्तर



मनु मेरी प्यारी बिटिया,
करती है दिन भर ठिठिया.

मनु प्यारी बच्ची,
बातें करती है अच्छी,
पढ़ाई करती सच्ची.

मेरी मनु बड़ी सयानी,
खाती खाना, पीती पानी,
बनाती हमेशा नई कहानी.

बातें करती बड़ी पुरानी,
गुस्सा हो जाती जैसे नानी.

गाना गाती बड़ी सुहानी
खिलौने की है दीवानी,
चित्र बनाती जानी पहचानी,
बेटियां होती है रानी.

शिक्षक

रचनाकार- श्रीमती प्रियंका श्रीवास, बस्तर



शिक्षक है ज्ञान का सागर,
भर देता है बच्चों की बुद्धि का गागर.
वर्णमाला पढ़ाकर,
गिनती सीखाकर,
एल्फाबेट लिखाकर,
भर देता है बुद्धि का गागर.
शिक्षक है ज्ञान का सागर,
भाषा समझाकर,
गणित बनावाकर,
पर्यावरण दिखाकर,
भर देता है बुद्धि का गागर.

ठण्ड

रचनाकार- श्रीमती प्रियंका श्रीवास, बस्तर



ठण्ड का मौसम
ओंस की बूंदें नम,
एक्साइज में है दम,
ठण्ड का मौसम.
सब्जियां भी नहीं कम,
खूब खाएं गोभी मटर शलजम,
ठण्ड का मौसम.
स्वेटर पहन हो जाये गरम,
टोपी लगाकर कान रखे नरम,
ठण्ड का मौसम.
सूरज की गर्मीं लगे कम,
आग सेके हम,
ठण्ड का मौसम.

बारिश

रचनाकार- श्रीमती प्रियंका श्रीवास, बस्तर



छप -छप करके कूदें,
सारे मेंढक फुदके,
पक्षी सारे दुबके.
जानवर सारे छुपके,
पानी की बूंदें टपके,
बच्चे पानी में मटके.
चिड़िया सारे चहके,
फूल सारे महके,
नदियां सारे भरके,
बहती जाये सरके.

करम के गति बड़ न्यारी

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु", शिवरीनारायण



करम के गति बड़ न्यारी
जिनगी के इही सँगवारी.
जस करनी तस भरनी.
एखरे से ही पार उतरनी.
इही जिनगी म सरग हावे
इही जिनगी म नरक हावे.
इहें ल सब भोगे ल परही
करम फल जरूर मिलही.
सुग्घर करम के सुग्घर फल
आज नही त मिलही कल.
जियत भर तय करले जस
झन कर एला तय अपजस.
दया-धरम के करले कमाई
इही म हावय तोरेच भलाई.

तोर जीव के मुक्ति ल बनाले
सदमार्ग ल तय ह अपनाले.
का लेके आए का लेके जाबे
जुच्चा आए जुच्चा तय जाबे.

स्वास्थ्य

रचनाकार- सृष्टी प्रजापति, सातवी, स्वामी आत्मानंद स्कूल तारबहार बिलासपुर

स्वास्थ्य का हमारे जीवन में बहुत महत्व है. एक स्वस्थ व्यक्ति ही अपना जीवन आनंद से जी सकता है. स्वस्थ व्यक्ति वही है जो शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ हो. पर आजकल की भाग दौड़ भरी जिन्दगी में हम अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखना ही भूल गये हैं. पुराने समय के लोगों का स्वास्थ्य दैनिक कार्य में ही अच्छा बना रहता था. लोग मीलों दूर चलकर पानी भरने जाते थे. खेतों में काम करते थे. जिससे उनका स्वास्थ्य



अच्छा रहता था. वे लोग हमेशा ताजे फल ,सब्जी एवं दूध दही और घी का उपयोग करते थे जिससे वे शारीरिक रूप से स्वस्थ होते थे. तब वातावरण भी बहुत शुद्ध हुआ करता था. लेकिन आजकल के लोग अपने स्वास्थ्य पर जरा भी ध्यान नहीं देते. थोड़ी दूर जाने के लिये भी वाहनो का उपयोग करते हैं जिससे ध्वनि और वायु प्रदूषण होता है जो हमारे स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है. लोगो के खानपान में भी बदलाव आया है, लोग घर के खाने से ज्यादा बाहर फास्ट फूड खाना पसंद करते हैं. जो कि स्वास्थ्य के लिये हानिकारक है. आजकल वातावरण भी काफी प्रदूषित हो गया है. लोग अपनी सुविधा के लिये पेडों की अन्धाधुन्ध कटाई कर रहे हैं एवं वाहनों का उपयोग अधिक कर रहे हैं जिससे हमारा वातावरण प्रदूषित होता है. फैक्ट्री का धुआँ वातावरण को प्रदूषित करने का मुख्य कारण है. और प्रदूषित वातावरण का हमारे स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है.

इसलिए हमें अपने भागदौड़ भरे जीवन से थोड़ा समय निकाल कर अपने स्वास्थ्य पर देना चाहिए. स्वास्थ्य ही सुखी जीवन का मूलमंत्र है.

ये सुबहा कितनी प्यारी है

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु", शिवरीनारायण



ये सुबहा कितनी प्यारी है,
आसमान में छाई लाली है,
रवि की आ रही सवारी है,
वंदना करती खग सारी है.

दमक रही किरणें प्यारी है,
लगती यह वसुधा न्यारी है,
सजी फूलों से फुलवारी है,
कलियाँ लगती सुकुमारी है.

बह रही बयार बड़ी प्यारी है,
महकने लगी प्रकृति सारी है,
नित नूतनता आई भारी है,
सृष्टि की यही कलाकारी है.

पेड़

रचनाकार- कुमारी साक्षी साहू कक्षा 7, कन्या शाला मिडिल पांडुका गरियाबंद

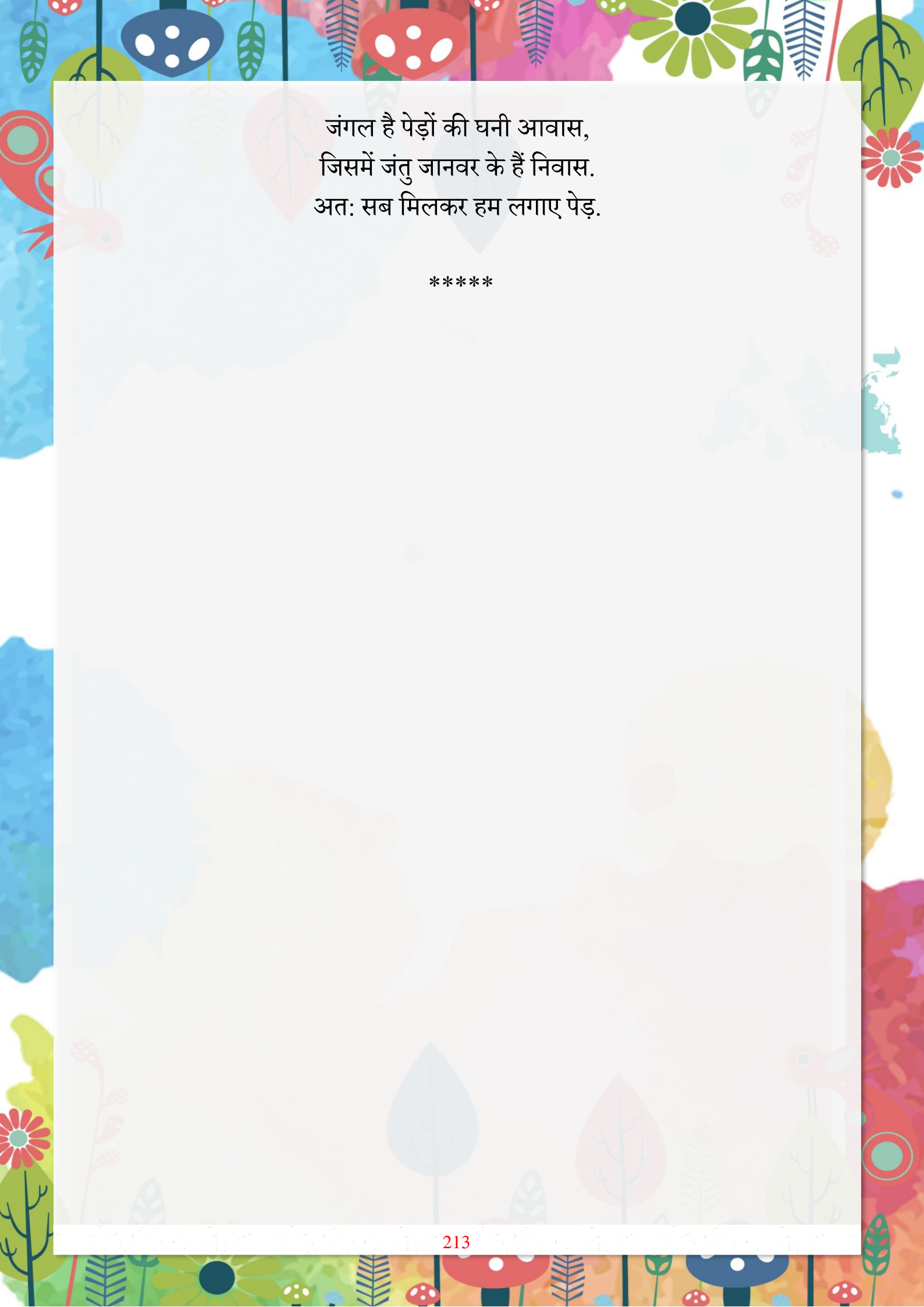


आओ सब मिलकर हम पेड़ लगाए,
फलों को बांटकर आनंद से खायें.
पेड़ हमें छाया देती, फूल और औषध भी देती.

नीम, पीपल, तुलसी हैं सम्पूर्ण,
आक्सीजन से है परिपूर्ण.

जंगल है पेड़ों की घनी आवास,
जिसमें जंतु जानवर के हैं निवास.
अतः सब मिलकर हम लगाए पेड़.

पेड़ है धरती का भूषण,
सदैव दूर करते हैं प्रदूषण.
आओ आओ सब पेड़ लगाएं
प्रकृति की " हरितीमा " को रखे बनाए.



जंगल है पेड़ों की घनी आवास,
जिसमें जंतु जानवर के हैं निवास.
अतः सब मिलकर हम लगाए पेड़.

जीवन जीने की कला

रचनाकार- डॉ. माधवी बोरसे, राजस्थान

जीवन जीने की कला

जीवन जीने की कला,
जिसने सीखी, वही आगे चला,
उत्कृष्ट व्यवहार एवं विनम्रता,
रखने वाला ही जीवन को सही मायने में समझता.

जीने का तरीका,
साथ रहने का सलीका,
हर पड़ाव को पार कर,
संयम से जिए जिंदगी भर.

मन में हो सकारात्मकता,
हो स्वयं में पूर्ण रूप से सहजता,
खुशियों से भरा हो हर महीना,
आज मैं पूरी तरह से आजाए जीना.

हृदय में ना हो मनमुटाव,

सोच सोच कर ना बढ़ाए कोई घाव,
ना करे किसी की निंदा और आलोचना,
अपने जीवन को सही कर्मों से सँजोना.

कौन क्या करता है वह उसका व्यवहार,
ना भूले हम स्वयं के संस्कार,
हमारी अमूल्य जीवन को अपने हाथों से ऐसा लिखें,
कि हमारी जीवनी से हर कोई अच्छी सीख ले.

भारत की शान है तिरंगा

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी, महाराष्ट्र



हमारे भारत की शान है तिरंगा,
हर भारतीय का सम्मान है तिरंगा.
विश्वमें हमारी पहचान है तिरंगा,
वीरता का गूंजता मंत्र है तिरंगा.

विश्व का बड़ा जनतंत्र है तिरंगा,
धरा की शांति का संधान है तिरंगा.
देश में अमन की पहचान है तिरंगा,
अपने भारत की शान है तिरंगा.

कश्मीर की घाटी - पुलवामा की माटी

रचनाकार- सुन्दर लाल डडसेना "मधुर", महासमुंद



कितने बारूदी सुरंग बिछे हैं कश्मीर की घाटी में.
कितने जवान शहीद हुए हैं कश्मीर की माटी में.
धरती का स्वर्ग है, जो फूलों का सुन्दर बाग है.
व्यर्थ न जाने पाए शहादत पुलवामा की माटी में.

चिथड़ा मांस का जब जवान का आया होगा.
एक परिवार नहीं पूरा गाँव मातम मनाया होगा.
आसमान काँपा होगा धरती भी थर्राई होगी.
जब हर जवान ने सौ-सौ गोली खाई होगी.

बेटे का शीश अलग देख माँ कितना रोई होगी.
सूनी कलाई देख वो बहन कैसे सोई होगी.
चुपचाप पिता ने आँसुओं को छुपाया होगा.
सिंदूर भर न सकूंगी सोच, पत्नी बेसुध हुई होगी.

बुजुर्ग हमारी थिंक टैंक और शान है

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी, महाराष्ट्र



बुजुर्ग हमारे थिंक टैंक और शान हैं.
अनुभवों और तज़ुबों की खान हैं.
परिवार का बड़प्पन हैं, महान हैं.
बुजुर्गों की सेवा करें, कर्म यह महान है.

बुजुर्गों का मान भारतीयता की पहचान है.
बुजुर्ग हमारे पूज्य हैं, बुजुर्ग हमारी आन हैं.
बुजुर्गों की सेवा में सारा पुण्य समाया है.
बुजुर्गों की सेवा की जिसने, परम सुख पाया है.

आया ऋतुराज बसंत

रचनाकार- जीवन चन्द्राकर "लाल", बालोद

कँपकँपाती सर्दी का,
शायद अब हो गया अंत.
सर सर सर हवा चल रही,
आया है ऋतुराज बसंत.

खेत-खार हैं, पीले-पीले,
भौरें तितली हुए रंगीले.
सेमल सारे लाल हुए हैं,
लहर भरे सब ताल हुए हैं.

अमराई में बौर सज गए.
शाखाओं में फूल बस गए.
नव शृंगार है जड़-चेतन में,
उमंग भर गया सब के मन में.

महक उठे हैं दिग्-दिगंत,
आया है ऋतुराज बसंत.



उड़ी पतंग

रचनाकार- जीवन चन्द्राकर "लाल", बालोद



आसमान में उड़ी पतंग,
भाँति-भाँति के उसके रंग.

हवा के संग खूब लहराए,
चिड़िया उसके पास में आए.

पतंग को समझे अपना यार,
संग उड़े निज पंख पसार.

दूर ले जाने करे प्रयास,
पर पंख नहीं हैं उसके पास.

डोर बंधी एक उसके संग,
आसमान में उड़ी पतंग.

रोज मैं स्कूल जाता हूँ

रचनाकार- जीवन चन्द्राकर "लाल", बालोद



जल्दी सुबह है उठाती,
गर्म पानी से नहलाती.
झट से नास्ता है बनाती,
प्रेरक बातें मुझे बताती.

मम्मी करती मुझे तैयार,
बेग में रखती रोटी चार.
माथा चूम कर करती प्यार,
बिदा करती आकर द्वार.

फिर पापा संग गाड़ी में,
बैठकर निकल जाता हूँ.

मम्मी-पापा का दुलारा,
रोज मैं स्कूल जाता हूँ.

राष्ट्रीय विज्ञान दिवस

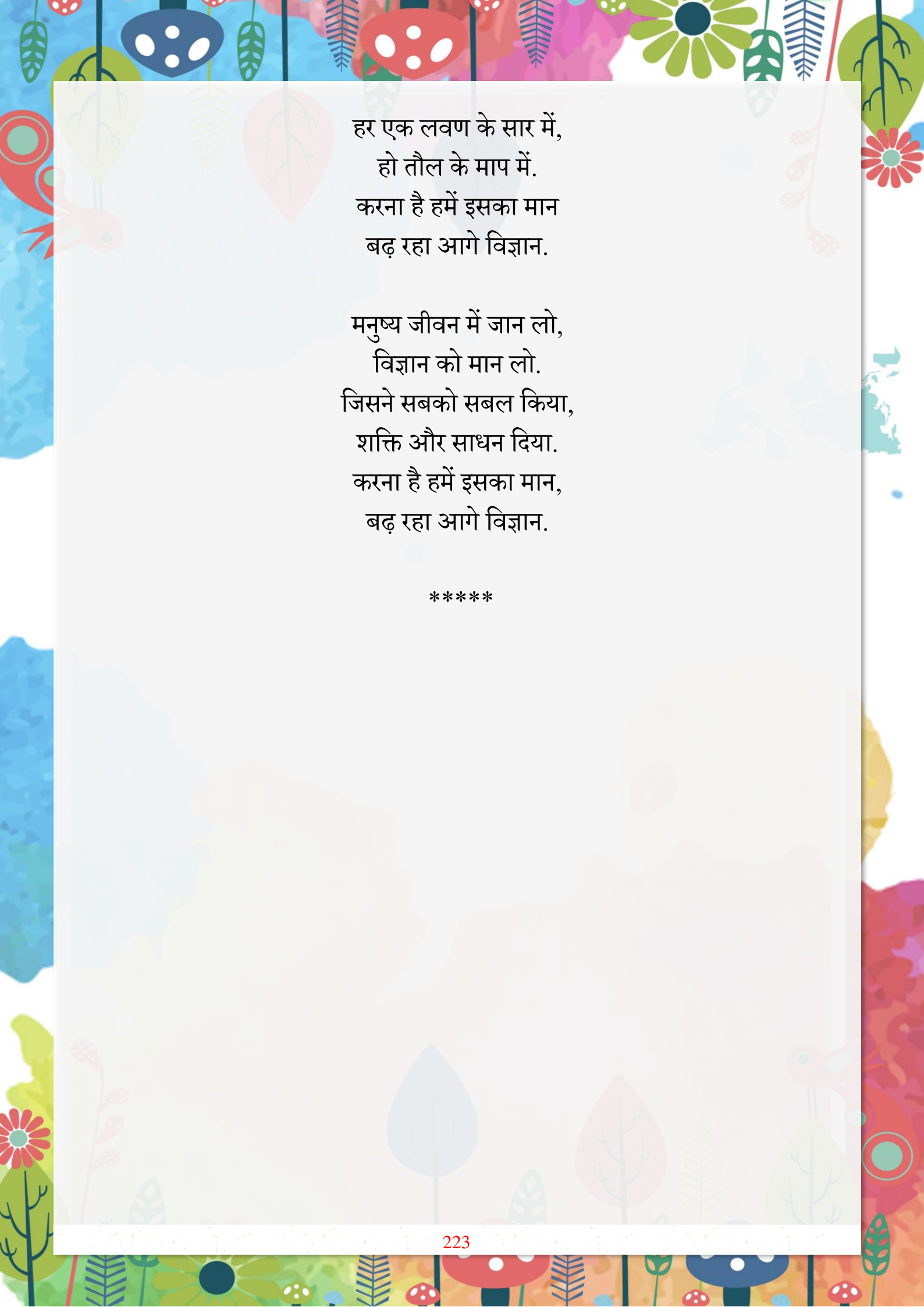
रचनाकार- श्रीमती विभा सोनी, बिलासपुर



मानव के प्रत्येक कर्म में,
है विज्ञान का गहरा ज्ञान.
मानव के प्रगति पथ पर,
बढ़ रहा आगे विज्ञान.
करना है हमें इसका मान,
बढ़ रहा है आगे विज्ञान.

ऑक्सीजन है प्राणदाता,
हाइड्रोजन है ज्वलनशील.
क्लोरीन करता जल की शुद्धि,
चमक-चमक है रेडियम.
करना है हमें इसका मान,
बढ़ रहा है आगे विज्ञान.

हम सब जाने अम्ल-क्षार को,
विलायकों के मिश्रण को.



हर एक लवण के सार में,
हो तौल के माप में.
करना है हमें इसका मान
बढ़ रहा आगे विज्ञान.

मनुष्य जीवन में जान लो,
विज्ञान को मान लो.
जिसने सबको सबल किया,
शक्ति और साधन दिया.
करना है हमें इसका मान,
बढ़ रहा आगे विज्ञान.

मेरी सायकल

रचनाकार- कुमारी अराध्या कुशवाहा, 5th, स्वामी आत्मानंद स्कूल ओडगी, जिला-
सूरजपुर



मेरी सायकल, मेरी सायकल,
छोटी मगर है प्यारी सायकल.
चलती फिरती मौज कराती,
मुझे बैठा कर सैर कराती.

प्यारी-प्यारी मेरी सायकल,
मेरी सायकल, मेरी सायकल.

जहा मैं चाहूँ, वहाँ ले जाती,
सरपट दौड़ी जाती है.
इसमें लगी घंटी बजती,
मुझको राह दिलाती है.

प्यारी-प्यारी मेरी सायकल,
मेरी सायकल, मेरी सायकल.

नम्र बनकर रहो, खुशहाल पल तुम्हारा है

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी. महाराष्ट्र



बुजुर्गों ने कहा यह जीवन का सहारा है,
सामने वाले से कहो तुम अज्ञानी नहीं हो.
मैं ज्ञानी नहीं हूँ, फिर हर पल तुम्हारा है,
नम्र बनकर रहो, खुशहाल पल तुम्हारा है.

मैं-मैं का विकार अज्ञान का द्वार है,
नम्रता गहना है, ज्ञान का सहारा है.
अज्ञानी से भी ज्ञान का गुण लेना,
जीवन की गुणवत्ता का सहारा है.

बड़े बुजुर्गों का जीवन, अपना सहारा है,
बड़े बुजुर्गों ने अहंकार पर तीर मारा है.
कहावतों में सिमटा, ज्ञान बहुत सारा है,
नम्र होकर ग्रहण करो, सारा ज्ञान तुम्हारा है.

संदेशा

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू", राजिम



तन माटी के पुतरा संगी, माटी मा मिल जाथे,
मनखे कतको सज-धज लै, बन के राख उड़ाथे.
देह भीतरी साँस चलत ले, माया मोह बँधाथे,
उड़े जीव बन पंछी मैना, कहाँ संदेशा आथे.

जनम धरे हे मानुष जिनगी, भोग लाख चौरासी,
कोनों ईर्ष्या द्वेष जगाये, कोनो हर सन्यासी.
करव भजन शिव, रामचन्द्र के, इही संग मा जाथे,
पाप-पुन्न के लेखा-जोखा, जम्मो इहें गिनाथे.

लाख जतन तैं कर ले संगी, हावय कंचन काया,
छिनभर मा जब साँस रूकथे, छोड़े देह किराया.
मया पिरित के डोर फँसे हे, जइसे मकड़ी जाला,
करम-धरम ला देखत रहिथे, बइठे ऊपर वाला.

बिना नाम के जनम धरे हव, सुग्घर नाम बनावव,
खाली हाथ सबो ला जाना, भगवन ध्यान लगावव.
का राखे हे देह म संगी, पंच-तत्त्व मिल जाथे,
मनखे कतको सज-धज लै, बन के राख उड़ाथे.

सफलता

रचनाकार- संगीता पाठक, धमतरी

जुलाई माह के प्रथम सप्ताह शांति निकेतन विद्यापीठ की ग्यारहवीं कक्षा में एक ऐसे बच्चे का दाखिला हुआ जो पक्षाघात के कारण विकलांग हो गया था. उसका नाम विकास था. उसकी माँ ने बताया एक बार बचपन में वह अमरूद के पेड़ से नीचे गिर गया था. उसके बाद से उसके शरीर का आधा अंग ठीक से काम नहीं कर पाता था.



विद्यापीठ की प्राचार्य प्रगति जी ने उन्हें आश्चस्त किया कि यहाँ आपके बच्चे को कोई तकलीफ नहीं होगी.

विकास सब कुछ समझता था. उसके घर से एक नौकर उसे रिक्शे में लेकर आता. उसे कक्षा में बैठा कर चला जाता फिर छुट्टी के बाद उसे लेने आता. विकास अपनी शारीरिक तकलीफ के कारण धीरे-धीरे लिखता था किंतु समझ अच्छी थी.

इसके बावजूद एक दिन शिक्षिका मिसेज बनर्जी ने उसे विद्यापीठ में प्रवेश दिये जाने का विरोध किया. उन्होंने प्राचार्य से कहा- "मैडम! विकास को उसके पैरेंट्स स्पेशल चाइल्ड वाले स्कूल में क्यों नहीं डाल देते?"

मिसेज बनर्जी! वह बच्चा पूरी तरह से विकलांग नहीं है. वह सब कुछ समझता है और थोड़े से प्रयास से अवश्य ही परीक्षा उत्तीर्ण कर सकता है. प्राचार्य ने समझाते हुए जवाब दिया.

लेकिन मैडम! यदि किसी बच्चे ने उसके साथ छेड़खानी कर दी तो कुछ भी हो सकता है. उसे शारीरिक चोट भी लग सकती है.

हमारे यहाँ बच्चे संस्कारवान हैं. यदि हम पूरी कक्षा को प्यार से समझा देंगे तो वे सभी विकास का ध्यान रखने लगेंगे. हम आया दी को भी बीच-बीच में उसे देख आने के लिये कह देंगे.

प्राचार्य ने इसी तरह सभी शिक्षिकाओं की शंकाओं का समाधान कर दिया.

विकास गणित संकाय का विद्यार्थी था. वह बड़े ध्यान से शिक्षकों के लेक्चर सुनता किंतु उसके हाथों की गति धीमी थी. इसलिए वह धीरे-धीरे लिख पाता था. साथी बच्चों ने उसके साथ मित्रता कर ली थी. वे उसके साथ सामान्य पढ़ाई की चर्चा भी करते. कभी हँसी-मजाक करके उसका मन बहलाने की कोशिश भी करते. विकास भी उनके साथ घुलमिल कर बातें करने लगा था.

धीरे-धीरे पूरा वर्ष व्यतीत हो गया और वार्षिक परीक्षा समीप आ गयी. कुछ समय में सम्पन्न भी हो गई. फिर परिणाम का दिन भी आ गया. सभी शिक्षक आश्चर्यचकित थे क्योंकि विकास ने चौसठ प्रतिशत अंक प्राप्त किए थे.

सभी शिक्षक स्टाफ रूम में रिजल्ट की ही चर्चा कर रहे थे. तभी विकास के माता-पिता हाथों में मिठाई का डिब्बा लिये स्टाफ रूम में प्रविष्ट हुए.

उन्हें देखते ही प्राचार्य ने खुश होकर कहा, "आपको बहुत -बहुत बधाई हो सक्सेना जी."

विकास के पिता ने कहा, "बहुत धन्यवाद प्रिंसिपल मेम. मेरे बेटे की सफलता के पीछे आप सभी आदरणीय गुरुजनों का ही आशीर्वाद और परिश्रम है. मैं उसकी इस आशातीत सफलता से बहुत खुश हूँ."

सक्सेना जी! विकास में सभी विषयों को समझने की क्षमता है. उसकी मेहनत का परिणाम उसे मिला है. आगे भी वह इसी तरह मनोयोग से पढ़ाई कर सकता है. भविष्य में अवश्य ही एक दिन वह आप लोगों का नाम रोशन करेगा. प्राचार्य ने विकास की प्रशंसा करते हुए कहा.

विकास के माता-पिता खुशी से भावुक होकर अपने आँसुओं को पोंछ रहे थे. व्हील चेयर में बैठा विकास मंद-मंद मुस्करा रहा था. सचमुच हौसले बुलंद हों तो सफलता का आकाश नापने में देर नहीं लगती.

मिलजुलके के रहय म ही विकास हे

रचनाकार- दीपिका श्रीवास्तव, बिलासपुर



एक गांव म एक किसान रिहिस जेखर पांच बेटा- चैतराम, बेदराम, जयराम, बुधराम, सुधराम नाव के रिहिस. ये पांचो लइका म अपने-अपन भाई-भाई रोज अड़बड़ झगड़ा होवय. नान-नान गोठ बर घलो झगड़ा-लड़ई होत ते रहय. किसान बपुरा ह अपन लइकामन के झगड़ा ले तंग आगे रिहिस. वोहर एक दिन वोमन ल समझाय भर अपन तीर बलाइस. पहिली ले पातर-पातर सुखखा पांचठो टहनी के वोहर एकठन छोटकन गठरी बना ले रिहिस. अपन पांचो बेटा सो कइथे कि तुमन पांचो भाई म जउन ये टहनी के गठरी ल टोरही तउन ल एक बड़का पुरस्कार मिलहि. पांचो भाई फेर अपने-अपन झगड़ा होय लगिस कि गठरी ल पहिली मैं टोरहा पहिली मैं टोरहा कइके. उमन ल डर होंगे कि कहू दूसर भाई ह मोर ले पहिली गठरी ल टोर दिही त पुरस्कार उहि ल मिल जाही. तब किसान ह कइथे पहिली सबले छोटे भाई सुधराम ल टोरन देव. सुधराम गठरी ल उठा लिस अउ अपन सब्बो ताकत ल लगा दिस फेर गठरी ह नइ टुटिस, माथा म पछीना घलो आगिस अउ सुधराम ह दांत ल निपोर दिस. एखर बाद गठरी ल बुधराम ल दे दिस. उहू हर जोर लगाइस, फेर गठरी ल नइ टोरे सकिस. एसने पारी-पारी सब्बो भाई ह गठरी ल टोरे के ताकत लगाइस फेर कोनो भाई टहनी के गठरी ल टोर नइ सकिस. किसान ह गठरी ल छोर के एकेकठो टहनी पांचो लइका ल दे दिस त फेर ये दनी सब्बो इन टहनी ल पड़पड़हन टोर दिस. तब फिर किसान ह कइथे सुनव बेटा ये टहनी मन जब एक संग रिहिस त तुमन कोनो नइ टोर सकेव अउ जब ये सब्बो ह अलग-अलग होइस तहां तुमन पड़पड़हन टोर देव. इही किसिम ले तुमन अपने-अपन झगड़ा

अउ अलग-अलग रइहूं त दूसर मन तुमन ल परशान करहि, पीरा दिही, दबाहि. कहूं तुमन एक संग मिलजुलके रइहूं त तुमन ल कोनो परशान करके हिम्मत घलो नइ करय.

किसान के लइका मन उहिं दिन ले अपने-अपन झगड़ा-लड़ई होवय तउन ल छोड़ दिस अउ मिलजुलके बने रहय ल धर लिस. एसने कहु हमर परिवार, समाज, राज्य, देश के लोगनमन मिलजुल के रइबो त हमरो उपर कोनों बैरी मन हमन ल पीरा नइ दे सकय, समाज म होवइया घटना घलो कम हो जाहि अउ मिलजुलके रहे ले विकास घलो होही.

काश! मैं भी स्कूल जा पाती

रचनाकार- सोनल सिंह "सोनू", दुर्ग



स्कूल जाते हम उम्र बच्चों को,
अपलक निहारती बर्तन माँजती मुनिया,
मन ही मन ये सोचे,
काश! मैं भी स्कूल जा पाती.

होते जो मेरे अम्मा-बाबा,
न होती आज ये लाचारी.
मैं भी जा पाती स्कूल,
लिए किताबें, पहने ड्रेस प्यारी.

रोज नया कुछ सीख जाती,
सखियों से भी मिल पाती.
मन लगाकर मैं पढ़ती,
आगे-आगे मैं बढ़ती.

पढ़-लिखकर कुछ बन जाती,
जीवन बेहतर कर पाती.
मिलता जो मुझको मौका,
अंबर को भी छू जाती.

काश! मैं भी स्कूल जा पाती.

भाखा जनऊला

रचनाकार- दीपक कंवर

1 अ				2 प			3 द	4	
						5 हैं			
		6 म				7 क			8 न
9	10 न				11 गु				
			12 ल					13	
							14 अ		
15 द		16			17 ट				
				18					19 प
		20 मा					21 का		
				22 बो					

बाएँ से दाएँ

- पपीता
- बिछौना
- कटू
- अनायास, इतनी जल्दी
- जूता
- गुड़ से बना
- बातुनी
- गला
- अधपका
- बहाना बनाने वाला
- तम्बाखु
- थन
- रात का भीगा भात/चावल

पिछले भाखा जनऊला के उत्तर

1 अ	न्द्र	क	2 हा		3 ब	4 त	र	5 की	री
स			डी			ई		न्द	
नां				6 ब	ई	हा		र	
7 दे	व	उ	8 ठ	नी					9 तु
			10 उ	स	11 नि	न्धा			मा
12 अ	क	13 ब	का		मा		14 न	ह	ना
ग		प			15 रे	16 ल	हा		र
म		17 रा	18 ख			19 बा	व	न	
20 जा	म		21 प	नी	22 हा	री	न		23 को
नी		24 पा	रा		डा			25 चो	न्हा

ऊपर से नीचे

- गायब
- मेहमान
- समाहित/ मिला लेना
- अड़ियल
- मट्ठा
- हल चलाने वाला
- नर्तक
- लपेट
- झूठा
- बेचैनी
- भुक्खड़
- मिट्टी लाने का वैवाहिक रस्म
- मारेंगे
- बरामदा

